Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वर्ष . इकतीस . अंक एक . भारत रुपये पाँच . पूरे देश में पंद्रह . जनवरी . 1997

यूनेस्को

यूनेस्को दूत

बाजार-स्थल

अतीत और वर्तमान

साक्षात्कार : हर्वे टेलेमेक्यू

विरासत : फिलीपीन्स के बरोक गिरजाघर

पर्यावरण : हवाई ज्वालामुखी नेशनल पार्क

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No.....
Dated.....

विषय सूची

जनवरी 1997

साक्षात्कार

बाजार-स्थल

अतीत और वर्तमान

हेतेन में जन्मे चित्रकार के लिए **हरवे टैलेमाक**, *कला अतीत से कहीं अधिक आधुनिक संसार में आवश्यक है* 4

माह प्रति माह — **ब्राहगत एलनादि और आदिल रिफ़ात** 8

सम आर्थिक व्यवस्था की उत्पत्ति—*एलैने कैले* 10

पूर्व कोलम्बियाई अमेरिका **ट्लेटेलोलको, ऐज़टैक साम्राज्य की दुकान की खिड़की**—*मेरिया रिबैका योमा मैडीना और लुइस एलबर्टो मारटोस लोपेज़* 14

इटली **वेनिस के सौदागर**—*डोनाटेल्ला कालाबी* 17

ब्राज़ील **खुला बाजार अथवा बंद दुकान**—*मैरी-फ्रांस गारसिया-पारपैट* 19

अफ्रीका **सीमा पार बाजार की परम्परा**—*एलिक्स सर्वेस एफ़ाउदा* 22

फ्रांस **कारपेंट्राज़ में शुक्रवार**—*माइकेल द ला प्रदेल्ले* 24

रूस **उलझन भरा संक्रमण**—*यूरी लेवेदा* 26

जापान **कम्पनी पूंजीवाद**—*हिरोशी ओकुमुरा* 29

बाजार की सार्वभौमिकता—*मेरी-फ्रांस बौद* 33

स्टॉक मार्केट का उदय—*एमैनुअले वैलेंट* 36

[illegible] फाइल
मलाडाकार : *एमेनुअल वैलेंट और एमैनुएल लेलेमेंट* 37

[illegible] पीक्षा फेडरिको मेयर 38

[illegible] परिरक्षण
[illegible] ई ज्वालामुखी नेशनल पार्क—*फ्रांस बेकुइत्ते* 40

विरासत
फिलीपीन्स के बारोक गिरजाघर—*ऑगस्टो फेबेल्ला विल्लेलॉन* 44

श्रवण
फेडेरिको मोमपाऊ की छिपी हुई आवाज़—*इसाबेले लेमेरी* 47

वर्षगांठ
जीन पियागेट, एक मूलाधार विचारक—*रिचार्ड शूमेकर* 48

जैसा कि था . . . **यूनेस्को दूत** जनवरी 1981
गोलियों का मनोविज्ञान—*जीन पियागेट* 49

फिलीपीन्स में बारोक गिरजाघर
(पृष्ठ 44), जहाँ स्पेनी मिशनरियों और स्थानीय कलाकारों के सहयोग से असाधारण समेकित शैली का विकास हुआ ।

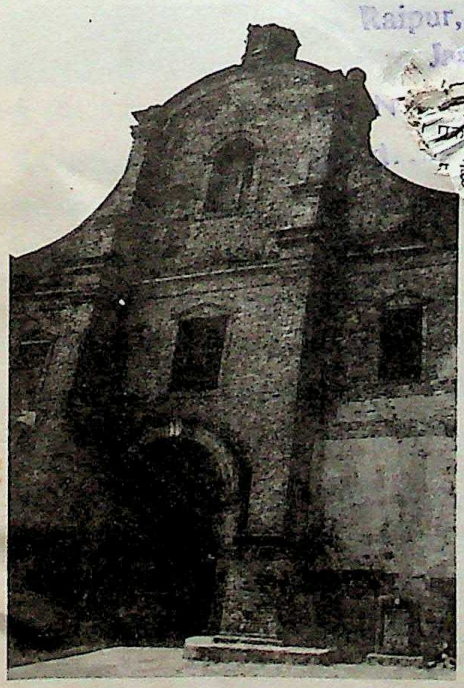

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
4000
अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

कवर : मैक्सिको का बाजार दृश्य (1987) । इस चित्र के हस्ताक्षर अस्पष्ट हैं । हमारे लिए शायद पाठक इसका रहस्योद्घाटन कर सकेंगे. . . .

इस अंक के सभी चित्र सर्वाधिकार-संरक्षित हैं ।

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हरवे टैलेमाक

क ला पृथ्वी पर हमारे समय की कहानी कहती है

हैती में जन्मे कलाकार हरवे टैलेमाक टेकनीक और साज-सज्जा का मिश्रण—चित्रकला और कोलाज के लिए बचाई गई वस्तुएं और पैबंद का प्रयोग करते है ताकि कला-कृतियों का सृजन किया जाए जिसके फलस्वरूप छवियों और शब्दों में "नवीन" ऊर्जा पैदा करने का प्रयत्न हो सके। इस साक्षात्कार में उन्होंने अपने कलात्मक विकास तथा अपनी चित्रकला की संकल्पना के बारे में जूलिएट बाउसार्द से बातचीत की है।

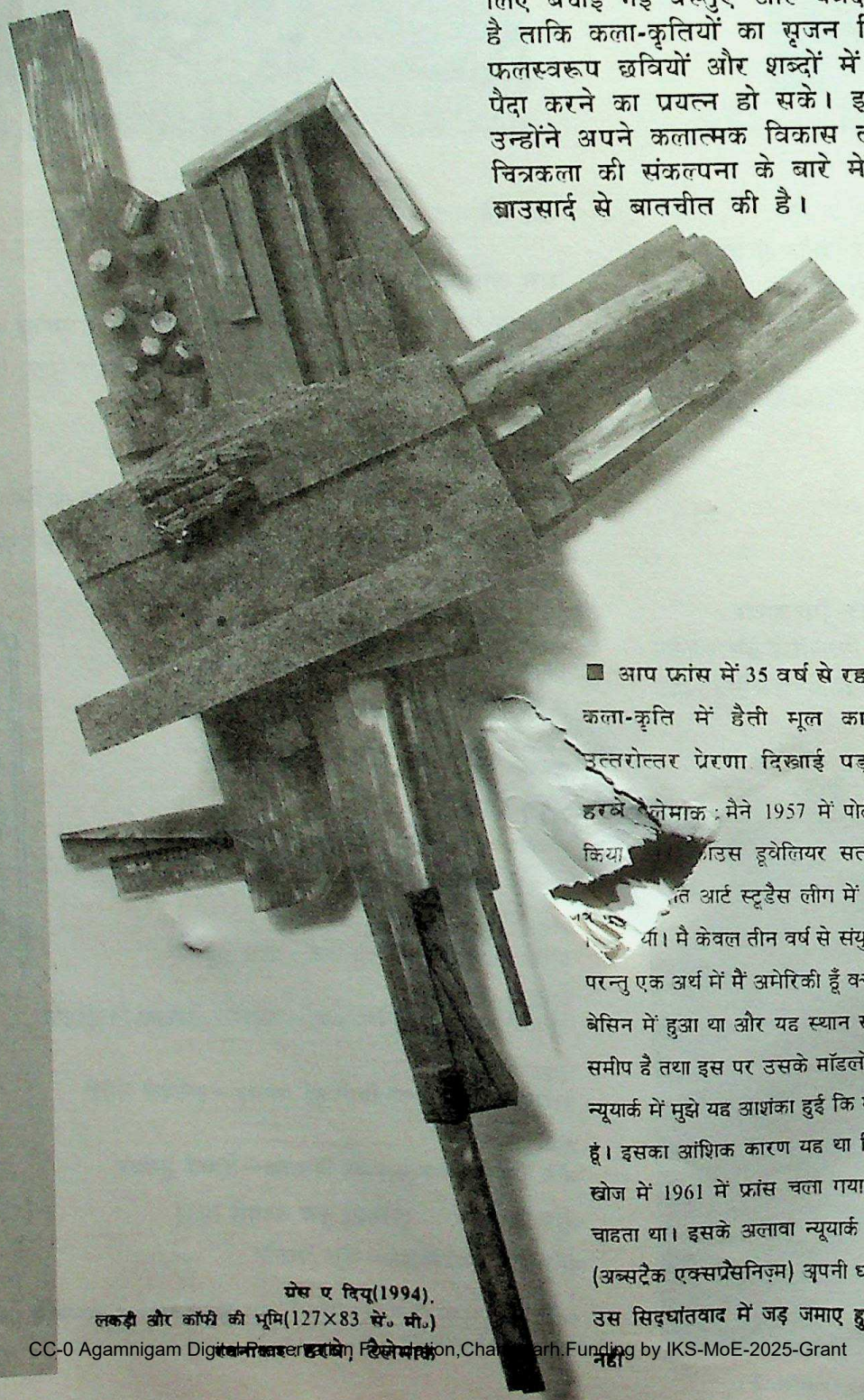

ग्रेस ए दियू(1994).
लकड़ी और कॉफी की भूमि(127×83 सें॰ मी॰)
संग्रहकर्ता: हरवे टैलेमाक

■ आप फ्रांस में 35 वर्ष से रह रहे है परन्तु आपकी कला-कृति में हैती मूल का तथा संस्कृति की उत्तरोत्तर प्रेरणा दिखाई पड़ती है।

हरवे टैलेमाक : मैने 1957 में पोर्ट-आओ-प्रिंस से प्रस्थान किया [illegible] उस डूवेलियर सत्ता में आए थे, और मैं [illegible] आर्ट स्टूडैस लीग में चित्रकला के अध्ययन के [illegible] थी। मै केवल तीन वर्ष से संयुक्त राज्य अमेरिका में था परन्तु एक अर्थ में मैं अमेरिकी हूँ क्योंकि मेरा जन्म कैरेबियन बेसिन में हुआ था और यह स्थान संयुक्त राज्य अमेरिका के समीप है तथा इस पर उसके मॉडलों का आधिपत्य है। परन्तु न्यूयार्क में मुझे यह आशंका हुई कि मैं अपनी अस्मिता खो रहा हूं। इसका आंशिक कारण यह था कि मैं अपनी अस्मिता की खोज में 1961 में फ्रांस चला गया। मैं स्वयं को पहचानना चाहता था। इसके अलावा न्यूयार्क में अमूर्त अभिव्यंजनावाद (अब्सट्रैक एक्सप्रैसनिज़्म) अपनी धाक खोता जा रहा था और उस सिद्धांतवाद में जड़ जमाए हुए था, जिसमें मेरी रुचि नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

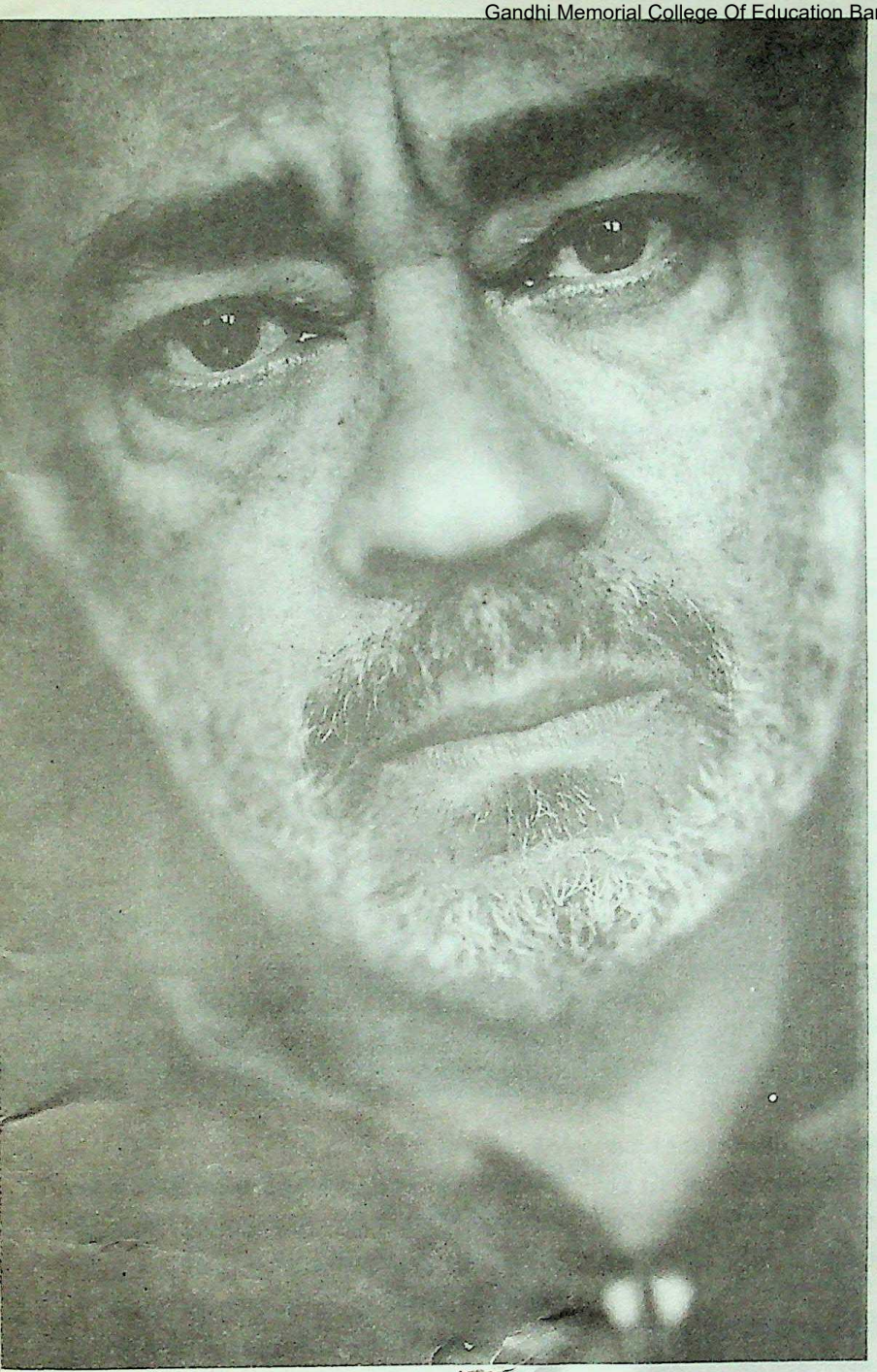

थी। यह स्थिति उस नवीकरण से ठीक पूर्व की थी [illegible] आविर्भाव पौप आर्ट (लोकप्रिय कला) के साथ हुआ। [illegible] अलावा फ्रांस, हैती संस्कृति का एक समन्वित भाग है जो अपनी स्वैरकल्पनाओं और भाषा के साथ सम्बन्ध बनाए हुए हैं। चूँकि हैती फ्रैंच भाषी है, जो यूरोप की ओर लौट रहा है; अतः यही मेरे औपचारिक मूल्यों की ओर बढ़ता हुआ कदम था।

■ **आप अतियथार्थवादियों से कितने प्रभावित है?**

ह० ट०:अतियथार्थवादियों ने मुझे मूल्यांकन सिखाए जो अभी तक मेरी सर्जनात्मक ऊर्जा को बनाए हुए हैं। कला के प्रति मेरा संबंध मनोवैज्ञानिक विश्लेषणात्मक प्रयोग द्वारा परिभाषित किया जाता है। मै आर्शिलेंगोर्की, जॉर्जियो द चिरीको, रैने मैगरैत्ते और मार्सेल डुचैम्प द्वारा अभिव्यक्त मूल्यों के अधिक समीप रहा। अतियथार्थवादीयों ने मुझे यह सिखाया कि कला विश्व और स्वयं, दोनों को समझने का एक मार्ग है। यह आत्मज्ञान स्वाभाविक रूप से सभी प्रकार के नैतिक प्रश्नों की ओर उन्मुख करता है : जैसे लोग, प्रेम, सामाजिक संगठन के बीच सम्बन्ध आदि। अतियथार्थवाद के पाठों में से एक यह है कि मैंने सदैव इस बात पर विश्वास किया है कि दृश्य सौंदर्य मात्र आनंद का ही साधन नहीं है अपितु उसकी शक्ति, एक प्रकार के अनुभव तथा अस्तित्व के महत्वाकांक्षी का बोध भी है। कला पृथ्वी पर हमारे समय की कहानी कहती है।

■ **आपकी प्रत्येक कृति में भाषा का अनुभव लक्षित है?**

ह० ट० : मैं हैती कविता से प्रेम करता हूँ। मुझे जैकुइस राउमेन और कार्ल ब्रुआर्द जैसे लोगों की कृति अच्छी लगती है, जिन्होंने अश्वेत अस्मिता की परिभाषा की है। हैती कविता प्रारम्भ से ही इस प्रकार की रची गई जैसे कि वह सांतो डौमिनिगो के उपनिवेशवाद का इतिहास और दासता तथा 1804 की हैती-क्रांति के लिए समर्पित हो। इन कविताओं ने नीग्रोवाद तथा अश्वेत गौरव की संकल्पनाओं को जन्म दिया और इसके साथ ही साथ ऐसी संकल्पनाओं को जन्म दिया जिसके आधार पर ऐमे सिसैर ने बाद में अपनी महान कविता *रिर्टन टू माई नेटिव लैंड* (स्वदेश को मेरी वापसी) द्वारा श्वेतों को झकदोर दिया। इसके अलावा मैं उन कवियों के प्रति आस्थावान रहा, जिन्हें मैने युवाकाल में पढ़ना पसंद किया। इन कवियों में रिम बौद, सेंट जान परसे और एन्द्रे ब्रैतन प्रमुख है। सेन जान परसे ने 1960 में साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार स्वीकार करते समय अपने भाषण में जो कुछ कहा था, उसे मैं यहाँ उद्धृत करना चाहूँगा—जैसे कि कहा गया है—"यदि कविता नितांत यथार्थ नहीं है तो यह सब से निकटतम वह भाव है जिसके माध्यम से हम कविता को समझ सकते है और सहभाव की सुदूर सीमा को भी जान जाते है, जहाँ कविता की वास्तविकता स्वयं के बारे में सूचित करती हुई प्रतीत होती है।"

■ **आप किस प्रकार कार्य करते है?**

ह० ट० : मेरी रचना प्रक्रिया को तीन अवस्थाओं मे बाँटा जा सकता है। सर्वप्रथम मैं माध्यम के साथ कार्य करता हूँ। इसके बाद, दूसरी अवस्था में कुछ अद्भुत विचार मस्तिष्क में आते है और एक विशिष्ट प्रकार का औपचारिक विचार उभरता है। तीसरी अवस्था उस समय आती है जब मै इन सभी का समन्वय करता हूँ। इस अंतिम अवस्था में केवल तकनीक उभरती है जो स्वतः स्फुरित मौलिक विचार की सहयोगी होती है और उन प्रारूपों के साथ कार्य करती है, जो यह प्रदर्शित करते हैं कि क्या घटित होता है। मेरे बड़े चारकोल आरेखन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

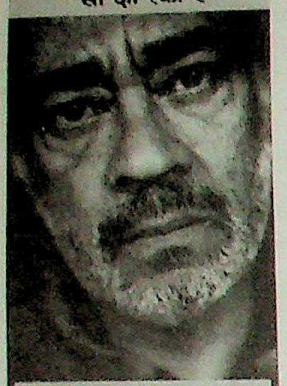

हारवे टैलेमाक

जिसमें लयात्मकता और शैली का समावेश होता है। चित्रकार सरलता से किसी कल्पना, स्मृति या आकांक्षा को व्यक्त करने के लिए होते है। इसमें विषय-वस्तुएँ, हथियारों के आच्छादन बन जाती है और वे होटेम एवं प्रतीक का रूप को लेती है। मैं साधारण साज-सामान जैसे लकड़ी, लेई और पेंच से काम करता हूँ। मैं कलैम्पों का प्रयोग करता हूँ। मुझे आधारभूत औजार जैसे "आरी" पसंद है जिसे मै यदा-कदा पैंसिल अथवा रेगमार के रूप में प्रयोग में लाता हूँ।

चारकोल के आरेखन और विषय-वस्तुओं को ही लें—जिन्हें 1994 में मेरी कृतियों की प्रदर्शनी में दिखाया गया था : नाम था ("चारकोल और कॉफी आधार"), डिलियन, ल ("संलाप : आरेखन, विषय-वस्तु")। विषय-वस्तुओं के लिए मैने कॉफी आधार प्रयोग किए। यह आधार प्राकृतिक रंग में था परन्तु उसमें लौह-प्रभाव दिखाया गया था। घना काला कोयला रात्रि का द्योतक है जबकि "कॉफी" अंधकार से प्रकाश की ओर और रात से उषा की ओर बढ़ने का प्रतीक बन सकी। यह ऐसी सुन्दर औपनिवेशिक रचना है, जिसमें श्वेत लोगों को आनंद प्रदान किया है।

■ रंग के बारे में आपका क्या विचार है?

ह० ट०: मैं रंग का प्रयोग संकेतिक रूप में करता हूँ। 1986 में जब डोवालियर शासन का अंत हुआ, उस समय हैती निवासियों ने लाल और नीले प्रतीक रंगों का प्रयोग किया और ये दोनों रंग राष्ट्रीय झंडे के थे। समग्र द्वीप लाल और नीले रंग से आच्छादित था, जो लोकप्रिय भावना के आधार का प्रतीक था और जो 30 वर्ष की तानाशाही से मुक्ति के बाद प्रतीक विस्फोट था। मैं अपने लोगों की परिवर्तनशील भावना से अविभूत हो गया था जिसके पास अपने अस्तित्व को प्रमाणस्वरूप इन लाल और नीले रंग की सहज रेखाओं के सिवा और कुछ नहीं रह गया था। मैंने इन्हीं दोनों तत्वों तक अपने चित्र सीमित रखे हैं और अपनी अस्मिता के आधारभूत संकेतों को अपनाया हैं।

■ आप बौद्धिक स्थिति से हटकर सरल मूल्यों की ओर अग्रसर हैं।

ह० ट०: शायद व्यक्ति आयु के साथ-साथ अधिक सरल होता जाता हैं! किसी समय जब मेरी कृतियाँ अधिक गुण सम्पन्न रही हैं तो अब मैं स्वयं के प्रति काफी आस्थावान हूँ। क्या सभी कलाएँ सरलता और गुमनामिता की ओर अग्रसर नहीं हैं? चित्रकार वस्तुओं और विचारों से अपनी कृतियों को सृजित करते हैं। संकेतों का प्रयोग करते हैं और अपने अन्तःभाव से काम लेते हैं। कलाकार प्रायः बुद्धिजीवियों के साथ आगे बढ़ते हैं। मेरी मान्यता यह है कि कलाकारों को अपनी आंतरिक आवाज सुननी चाहिए और अपनी सर्जनात्मकता को अभिव्यक्त करना चाहिए तथा स्वयं की आलोचना से बचना चाहिए। मेरी रचना प्रक्रिया कभी भी कार्यक्रमबद्ध नहीं रही। कलाकारों में जो सर्वोत्तम भावना होती हैं रचना मार्ग उन्हीं में से निकल आता है और इस हेतु कोई भी ठोस कार्यक्रम नहीं बनाना पड़ता। मैं यह भी मानता हूँ कि स्मृतियों को सतह पर

लाया जाना अच्छी बात हैं। मैंने दक्षिण अफ्रीका की एक पत्रिका में एक स्वेतो महिला की फोटो देखी जिसकी मोटी टांगें देखकर मुझे अपनी बूढ़ी आया क्रिस्टीयन की याद आ गई। इन दोनों में कोई भी सीधा सम्बन्ध नहीं था, परन्तु वह एक ऐसा क्षण था जिसने इस स्मृति को जागृत कर दिया। मेरा विचार है कि कला में कोई [illegible] सत्यता नहीं होती।

■ कलाकार के रूप में आज की संस्कृति और समाज में आपका क्या स्थान है?

ह० ट० : मुझे ऐसा लगता है कि दृश्य कलाओं में संघर्ष हैं और यह उचित ही हैं कि आधारभूत वस्तुओं की सरलता की ओर लौटा जाए। मेरी वर्तमान कृतियाँ आरेखन के प्रति मेरी प्रेम से प्रभावित हैं। किसी कागज पर आरेखन करना, चित्रकारी की अपेक्षा अधिक सरल होता है। आरेखन से मैं सीधे विषय-वस्तुओं की ओर बढ़ता हूँ और इसका तात्पर्य होता है रंगों का उपयोग। वैसे मैं सर्वप्रथम एक चित्रकार हूँ पर आप चाहे तो मुझे चित्रकार-संयोजक कह सकते हैं। मैं चित्रकला को सबसे उन्नत मानता हूँ और यह भी कि दृश्य कलाओं में यह सबसे जटिल है। कला मुझे संस्कृतियों के मध्य अधिक समझ पैदा करने के लिए स्वाभाविक माध्यम प्रतीत होती है। जरा सोचिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

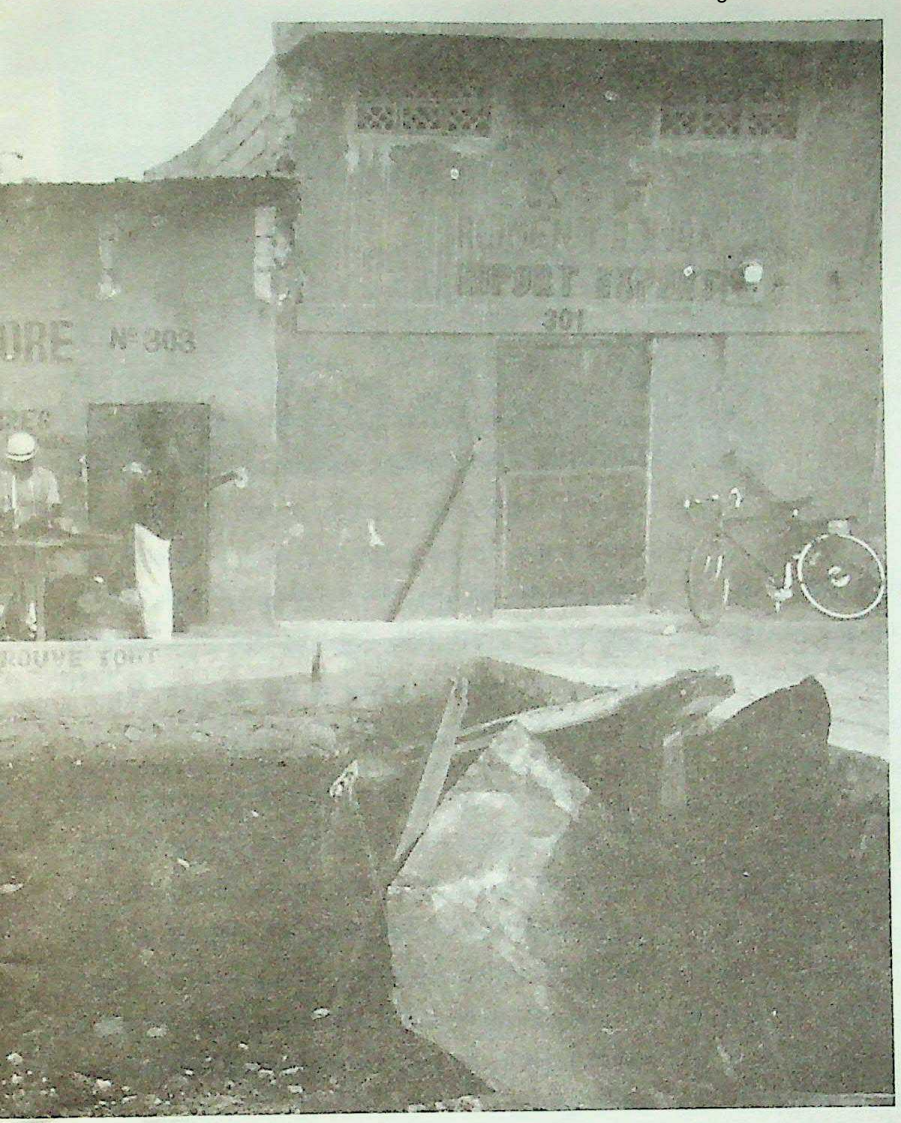

पोर्ट-ऑउ-प्रिंस के दर्जी (हैती)

कि हम सब अनजाने ही बाज को कितना अधिक स्वीकार करते हैं। अश्वेतों ने संगीत माध्यम से कितना अधिक योगदान दिया हैं। अश्वेत चरित्र को समझने के लिए संगीत एक मार्ग है। हम सभी एक स्थान से दूसरे स्थान तक अबोध गति से चलते रहते हैं। मेरी चिंता का विषय यह है कि विश्व में टेलीविजन का प्रभाव बुलडोजर के समान हैं क्योंकि टेलीविजन समस्त विश्व में एक ही प्रकार के कार्यक्रम प्रसारित करता है। मैं यह अनुभव करता हूँ कि हम पागलपन के दौर से गुज़र रहे हैं। अपनी कल्पना के बजाय अन्तरात्मा की ध्वनि को ग्रहण करना कहीं अधिक आवश्यक है। संत जॉन पर्स के बारे में पुन: विचार करता हूँ, जिन्होंने इस बात पर बल दिया कि माटी के मानव को न भुलाया जाए।

■ क्या लोग अब भी कला को आवश्यकता मानते हैं?

ह० ट०: नितांत ही ! परन्तु संस्कृति के अर्थ को पुन: परिभाषित करना चाहिए। संयुक्त राज्य अमरीका की ओर निहारिये। आपको यह विचार करना चाहिए कि इस प्रकार का भौतिकवादी समान कला के बिना भी काम कर सकता है। परन्तु उन महान अमरीकी कलाकारों की ओर भी देखिए जो वहाँ विद्यमान हैं। उनकी उपस्थिति से यह प्रमाणित होता है कि कला की आवश्यकता है और कला उपयोगी है। अन्यथा, वहाँ कला विद्यमान न होती। वहाँ के संग्रालय और उनमें जाने वाले लोगों की संख्या से यह लगता है कि इस तथ्य की पुष्टि के पर्याप्त प्रमाण है।

■ क्या समसामयिक कला, पुरानी कला से उभरी हैं?

ह० ट०: कला में बहुव्यापी रुचि उस अतीत की द्योतक है, जो इस शताब्दी के आरंभ में कवि गुईलामें एपौलीनैरे के साथ उभरकर आई। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध हैं, मुझे इस कला का ज्ञान मिस्र की यात्रा करते समय हुआ और मैंने आधुनिक कला का एक प्रकार का आधार खोज लिया। मैंने प्राचीन मिस्रवासियों की कला में कतिपय बृहद चयन शैलीबद्ध स्पष्टता, सीधा-सादापन और भाषायी संयोग का औचित्य देखा है। चित्रलिपि के साथ हम चित्रित छवि से लिखित संकेत की ओर चलते हैं जो अधिक आधुनिक होता है। लिखित संकेत से दृश्यगत संकेत तक आगे बढ़ने का प्रश्न अभी भी अत्यधिक प्रासंगिक है। मिस्र में मैंने यह पाया कि कला शायद सभी लिखि संस्कृति की घोषणा करती है और वह कभी भी अधिक श्रेष्ठ नहीं बन सकती। मेरे विचार से इसके लक्षण, शुद्धता का अति उच्च स्तर और अधिक जटिलता का संदेश होते हैं। मैं कला के इस अभिगमन, इसकी आवश्यकताओं के प्रति आदर और इसके प्रकृवाद के झुकाव में अभाव के प्रति मंत्रमुग्ध हूँ। अलबत्ता मैं अति सरल रूप से इसके औपचारिक पक्षों के बारे में बता रहा हूँ, क्योंकि मैं समग्र मिस्री सृष्टि के बारे में कुछ भी कहने में सक्षम नहीं हूँ। इसके उत्कृष्ट प्रारूप और मात्रा की समझ के साथ, प्राचीन मिस्र कला पूर्व वेपम्प की स्थिति में है। इसका एक उदाहरण लिया जाए — तो वह उस महासागरीय मूर्तिकला की सरलता में निहित हैं, जो किसी न किसी प्रकार विश्व कला के चरमोत्कर्ष नमूनों में से एक हैं। मिस्रवासियों के साथ समग्र विश्व की रचना होती है जब कि न्यूगिनी में हम पृथ्वी और देवताओं के जो आदय मानवता के बारे में सुनते है ।

■ क्या आज कला का अध्यापन विद्यार्थियों को समसामयिक कला के प्रति जागरूक बनाने में सफल हैं?

ह० ट० : आज व्यापक रूप से जो कुछ भी सोचा जाता है उससे कहीं अधिक आधुनिक कला, यहाँ तक कि अमूर्त कला—मुझे पुनरूद्धार काल की उच्च कला की अपेक्षा अधिक समीप लगती है। उदाहरण के लिए—यह कला प्राय: महान कल्पनाओं और धर्म की ज्ञान सिखाती है। मैं सोचता हूँ कि आधुनिक कला अपेक्षाकृत अधिक प्रत्यक्ष दर्पण है, जो कला-कृति और उसके दर्शकों के बीच परस्पर आदान-प्रदान के अनुरूप होती है। कई मामलों में, इसकी छवियों के बारे में प्रश्न करने को बिडंबना ही कहा जाएगा और कदाचित इनके द्वारा हतारे समय की जटिलताओं को अधिक सही ढंग से व्यक्त करना होगा। ■

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यूनेस्को दूत

48वां वर्ष

संयुक्त राष्ट्रीय शैक्षिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठन, यूनेस्को द्वारा प्रतिमास तेंतीस भाषाओं में प्रकाशित किया जाता है। अंग्रेजी, फ्रांसीसी, स्पेनी तथा कोरियाई भाषाओं में त्रैमासिक ब्रेल संकलन प्रकाशित किया जाता है।

31, रुए फ्रांसोइस बोनशिन, 75015 पेरिस, फ्रांस।

निदेशक : बाहगत एलनाडी

मुख्य संपादक : आदल गिपात

संपादन मंडल (पेरिस)

प्रबंध संपादक : गिलियन क्विंटकांब

अंग्रेजी संस्करण : गॉय मैकिन, क्रेग्लीन लॉरेंस

फ्रांसीसी संस्करण : एलेन लेपक, मेरी एल खोन

स्पेनी संस्करण : फ्रांसिस्को फर्नांडिज सटाज, मिगुएल लाबरका

अरबी संस्करण : अब्दुल रशीद, अल्सादिक महमुदी

ब्रेल संस्करण : मारीए-डोमिनिक्यू बोगेस

गैर-मुख्यालयी संस्करण :

हिंदी : डॉ० गंगाप्रसाद विमल (दिल्ली)

रूसी : अलेक्झान्दर मलीकोव (मास्को)

जर्मन : वर्नर मैरक्ली (बर्न)

जापानी : सिन्इचिरो कोजिमा (टोक्यो)

इतालवी : मैरियो ग्युदोल्ली (रोम)

तमिल : एम० मुहम्मद मुस्ताफा (मद्रास)

सिंधु : अलेक्जेंडर बोहदो (नया अर्थाव)

फारसी : एच० सादोघ वनिनी (तेहरान)

डच : पॉल मोरेन (एंटवर्प)

पुर्तगाली : बेनेडिक्टो सिल्वा (रिओ दि जेनेरो)

तुर्की : मेफरा इलोग्लू (इस्तंबुल)

उर्दू : हकीम मोहम्मद सईद (कराची)

कैटेलियाई : जोन कैरेरास इ मार्ली (बार्सिलोना)

मलेशियाई : अब्दुल हमजा (कुआलालंपुर)

कोरियाई : पाइक स्येउंग गिल (सिओल)

स्वाहिली : डोमिनो रुताएबेसिब्वाह (दार-ए-सलाम)

क्रोतो सर्ब, मेसेडोनियन, सर्बोकोत, स्लोवीन : ब्लाडो किस्तीक (बेलग्रेड)

चीनी : शेन गुओपेन (बीजिंग)

मुग्गारियाई : गोरेन गोनेव (सोफिया)

यूनानी : निकोलस ऑर्जिज् (एथेंस)

सिंहली : एस० जे० सुमनसेकेरा बांदा (कोलंबो)

फिनीश : मार्जत्ता ओक्सानेन (हेलसिंकी)

थाई : सावित्री सुवेसाकित (बैंकॉक)

स्वीडिश : मर्ग क्रोसलेर (स्टॉकहोम)

आस्क्यू : गुरुत्म खारंग (सैन सेबेस्टियन)

वियतनामी : दाओ ट्रुंग (हनोई)

पश्तो : नसीर सेहान (काबुल)

हाऊसा : हबीब अलहसन (सोकोटो)

बंगाली : अब्दुल्लाह ए० एम० शरापुद्दीन (ढाका)

उक्रेनियन : विक्टर श्वेतमाख (कीव)

चेक और स्लोवाक : मिलान सिरचेक (प्राग्)

यूनेस्को दूत में प्रकाशित ऐसे लेख और फोटो पुन: प्रकाशित किए जा सकते हैं, जिन पर किसी का स्वत्वाधिकार न हो। पर ऐसे लेखों के साथ आभार-स्वीकृति के रूप में प्रकाशित तिथि के साथ "यूनेस्को दूत से पुनर्मुद्रित" छापना और संपादक के नाम तीन खाऊचर प्रतियां भेजना आवश्यक है। जिन लेखों पर लेखकों के नाम छपे हों, उनके पुनर्मुद्रण में लेखकों के नाम देना अनिवार्य है। बिना कॉपी राइट वाले चित्र अनुरोध पर भेजे जा सकते हैं। जिन लेखों के साथ लेखकों का नाम छपा होता है, उनमें व्यक्त विचार उनके लेखकों के ही होते हैं। अतः यह आवश्यक नहीं कि वे ही विचार यूनेस्को या "यूनेस्को दूत" के संपादक के भी हों।

"यूनेस्को दूत" (हिंदी) : जयप्रकाश शर्मा

सहायक : चंदन सिंह गक्खर, त्रिलोक शर्मा

निर्मल सिंह

कलाकार : फोटो लिथो स्कैन

यूनेस्को दूत के संबंध में सारा पत्र-व्यवहार संपादक के नाम किया जाए।

आई० एस० एस० एन० 304-4189

प्रबंध संपादक डा० गंगाप्रसाद विमल, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग), भारत सरकार, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली द्वारा यूनेस्को के लिए प्रकाशित एवं माह प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, नोएडा द्वारा मुद्रित।

बाजार-स्थल अतीत और वर्तमान

वास्तव में यह असंभव-सा हो गया है कि बाजार-स्थल से दूर, अकेले में रहा जाए। हमारी आवश्यकताएँ इतनी विविध प्रकार की हैं कि उनकी आपूर्ति बाजार में उपलब्ध उत्पादन, सेवाएँ वित्त और सुचना के सतत पुनर्गठन के द्वारा ही हो सकती है। बाजार के लेन-देन इतने सघन और सुदूरवर्ती हो गए हैं कि अब वे दुनिया भर के व्याप्त है। यह कहा जा सकता है कि आज विश्व आर्थिक क्रिया की उथल-पुथल, बाजार की अवस्था से मापी जा सकती है।

परन्तु ऐसी स्थिति सदैव नहीं रही है।

हजारों वर्ष तक बाजार का केवल सीमांत महत्व था। एक ओर बाजार में ऐसे अलग-अलग और स्वनिर्भर समुदायों को सम्पर्क में लाया गया जिन्होंने परस्पर उस माल का विनिमय किया जो उनके आंतरिक संतुलन के लिए सहायक और अनावश्यक थे। दूसरी ओर जो लोग इन लेन-देन में व्यस्त रहे उन्होंने उनके जीवन को प्रशासित करनेवाली धार्मिक, पारम्परिक और आनुवंशिक आवश्यकताओं को पूरा करने की अपेक्षा आर्थिक विचारों को कम महत्व दिया।

परन्तु इन सीमाओं के होते हुए भी बाजार ने संचार के माध्यम के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। यही एकाकी समुदायों के लिए अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान हुआ जब कि यह बहुत ही कम था और वे इस प्रकार बाहय संसार से सम्पर्क स्थापित कर सके और अन्य लोगों के साथ सम्पर्क में आए तथा उनको मानवीय विविधता की झांकी देखने को मिली। कालांतर में व्यापार में विचारों, [illegible] अभिन्वीकरण और उत्पादन के कार्यों को प्रोन्नत किया।

आधुनिक युग में बाजार की प्रतिष्ठा में परिवर्तन आया। बाजार माध्यमिक विनिमय के तंत्र को भूल गए और सामाजिक कार्य उत्पादन की नियमितता की मुख्य धारा से जुड़ गए। अर्थव्यवस्था अभी तक गैर आर्थिक उद्देश्यों के लिए सेविका थी, जिसे जनसमुदाय पवित्र समझता था और यह अपने में एक कानून बन गयी तथा धीरे-धीरे जीवन के समग्र क्षेत्रों में उतरने लगी एवं अपने उद्देश्यों के लिए प्रत्येक तथ्य का उपयोग करने लगी और समस्त स्थपित मूल्यों को अंततोगत्वा परिवर्तित करने लगी। इन मूल्यों में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

—बाहगत एलनादि और आदिल रिफात

सांस्कृतिक, पारम्परिक और नैतिक मूल्य शामिल थे तथा यह ऐसी वस्तुओं का आदान-प्रदान करने लगा, जिन्हें खरीदा और बेचा जा सकता था।

कुछ लोगों ने बाजार को पवित्र मानते हुए इस परिवर्तन के लिए प्रतिक्रिया व्यक्त की और इसे एक निष्पक्ष शक्ति समझा जो ऐसे अवैयक्तिक कानूनों द्वारा शासित किए जाते थे, जो प्रतियोगिता द्वारा सर्वोत्तम को अवश्य ही प्रोत्साहित करते थे तथा मध्य वर्ग को दंडित करते थे। फिर भी, समीप से देखने पर हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि यदि बाजार आर्थिक नियामक और निर्णायक के रूप में काम करता है तो वह असमतावादी संबंध के नेटवर्क को विकसित करता है, जिसमें सबसे बलवान का कानून, आदान-प्रदान की भावना पर विजय प्राप्त करता है।

स्वतंत्रता और असमानता

वास्तव में बाजार को ऐसी सीमा क्षेत्र में देखा जा सकता है,जिसमे दो परस्पर विरोधी सिद्धांत—स्वतंत्रता और असमानता, निहित होते है और जिनमें अपूर्ण समझौते कभी भी किए जा सकते हैं। अधिकार मुक्त बाजार वास्तव में सभी के लिए स्वतंत्र रूप में होता है और यह बलवान और दुर्बल के मध्य संघर्ष बन जाता है तथा अंततोगत्वा ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर देता [illegible] प्रतियोगिता समाप्त हो जाती है और इस प्रकार स्वतंत्रता का [illegible] संकट में पड़ जाता है। इसके फलस्वरूप अधिकाधिक आर्थिक एजेंट असहाय और अलग-अलग पड़ जाते है। कुछ सीमा के परे यह प्रक्रिया उन बंधनों को भंग कर देती है जो समाज को बांधे रहते हैं और यहाँ तक कि ऐसी चरम सीमा पर पहुँच जाते हैं जो वाणिज्यिक कार्य को आगे बढ़ना असंभव कर देती है। इसलिए उचित यह है कि बाजार की शक्तियों के लिए प्रतिभा होनी चहिए। बाजार के नियम को सीमित होना चाहिए और उन राजनीतिक निकायों द्वारा नियमित होना चाहिए जो शिथिल आर्थिक स्वतंत्रता और अबोध असमानता में कुछ संतुलन बनाए रखने का प्रयास करते हैं।

इस शताब्दी मे इस प्रकार के संतुलन को बनाए रखने के लिए कई प्रयत्न किए गए है। विविध कारणों के फलस्वरूप इस प्रकार के अनेक प्रयत्न असफल रहे।

इससे यह स्पष्ट होता है कि गत कुछ वर्षों में बाजारों को उदार बनाने के सभी प्रयत्न और राजनीतिक दखल देने के आदर्शात्मक आधार को कमजोर करने के लिए बड़े कदम उठाए गए। इन परिस्थितियों में वित्तीय तकनीकी, सूचना सम्बन्धी प्रवाह के विश्वव्यापी होने से बाजार अधिक अस्थिर बन गया है जिसकी कोई सीमाएं नहीं है और यह अप्रत्याशित विकास तथा तीखे गति से बदलती हुई स्थितियों से प्रभावित है। यह भूमंडलीय बाजार प्रतियोगिता बड़े परिवर्तनशील दलों का पक्षपात करती है (जब कि समृद्धि के नए पक्षों को उभरने से बचाती है) और कोई भी अंतर्राष्ट्रीय निकाय, आर्थिक व्यवहार अथवा समझौते को राजनीतिक अथवा विधिक रूप से नियंत्रण करने और इसके फलस्वरूप संघर्षो को बचाने में सक्षम प्रतीत नहीं होते।

भ्रष्टाचार का सार्वभौमिकरण, नशीले पदार्थों के धन का प्रवाह और अंतर्राष्ट्रीय अपराधों की वृद्धि, इस प्रकार के कार्यों को नाटकीय लक्षण है जो लोकतंत्र के आधारों के छत-विछत किए हुए है और परिचित धार्मिक, आनुष्ठानिक तथा राष्ट्रीय युगांतरकारी घटनाओं को खोखला बना रही है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि दो अलग-अलग प्रवृत्तियाँ, बहुव्यापी भ्रष्टाचार की प्रतिक्रिया में विकसित हो रही है—ये है लोकतांत्रिक नियंत्रण यांत्रिकी को शक्तिशाली बनाना और आबद्ध पहचान की तानाशाही की शरण लेना।

इस प्रकार बाजार-स्थल चौराहे पर है और उत्तर बीसवीं शताब्दी के कतिपय मुख्य घटनाओं की दृष्टि से मिलन-स्थल है। इस जटिल तथ्य को व्यक्त करते हुए हमने ऐसे मार्गों पर ही प्रकाश नहीं डाला है, जिसमें बाजार-स्थल में परिवर्तन आया है तथा परिवर्तन आ रहा है अपितु इसके अलावा इसके परस्पर-विरोधी पक्षों पर भी विचार किया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सम आर्थिक व्यवस्था की उत्पत्ति

—एलैन कैले

बाजार अर्थव्यवस्था के विकास के लिए ऐतिहासिक दृष्टिकोण

क्या वह अर्थशास्त्री, जो स्वार्थी और हिसाब-किताब करने वाला तथा विवेकशील है, जिसे अर्थ-शास्त्रियों ने अपनी सैद्धांतिक मान्यताओं के मध्य रखा है, सदैव विद्यमान रहा है? क्या वह सार्वभौमिक है अथवा इसके विपरीत हाल ही में पैदा किया गया है?

ऐसे क्षेत्र, जहाँ हम आज लेन-देन (सामान का खरीदना और बेचना) के शब्दों पर विचार करते है, वहाँ प्राचीन समाज, उपहार (आवश्यक रूप से निर्मित, स्वीकृत और वापसी) के शब्दों के बारे में तर्क देते है तथा सहयोग के बारे में विचार करते है। फ्रेंच समाज विज्ञानी मार्सेल मॉस के अनुसार व्यक्तिक सामान में रुचि, जो वाणिज्यिक विनिमय के मध्य होती है, इन अभ्यासों के पीछे सदैव खोजा जा सकता है।

सीमा शुल्क द्वारा निर्धारित कीमतें

कुल मिलाकर, प्राचीन समाज में वृहद व्यापारिक प्रक्रिया के माध्यम से माल के वितरण ने इतनी उपयोगी उद्देश्य की प्रगति नहीं की जिससे अपव्ययी और प्रतिष्ठित व्यक्ति की आवश्यकता की पूर्ति की जा सके। यह प्राप्त करने और संग्रह करने का ऐसा मामला नहीं था, जैसा कि सबसे उदार और यथासंभव शानदार रूप में प्रकट होने का था।

इसी प्रकार गिनी जाने वाली वस्तुओं ने जो आधुनिक मुद्रा की अग्रणी रूप में व्यापक रूप से समझी जाती हैं, लोगों को उन वस्तुओं के खरीदने के योग्य नहीं बनाया, जिन्हें वे चाहते थे। परन्तु जीवन और मरण के ऋणों का भुगतान करना ही था। आपने यह ऋण चुकाया जिसका आपने उन लोगों के साथ करार किया था जिन्होंने आपको पत्नियाँ (और उनसे उत्पन्न होने वाले बच्चे) दी थीं—अन्य शब्दों में जीवन दिया था—और उन परिवारों में भी ऋण चुकाया जाना था, जिनमें आपकी मृत्यु हुई थी। व्यापार उन समुदायों के बाह्य सीमा तक ही सीमित रहा, जो उन लोगों के साथ सम्पर्क करने के फलस्वरूप था जो उनके सगे नहीं थे, अर्थात् विदेशी थे।

लम्बी दूरी वाले व्यापार के साक्ष्य, प्रागैतिहासिक काल से भी परे हैं, जब कुछ वस्तुएँ अपने उत्पादन के स्थान से कई हजार किलोमीटर तक पहुँची। परन्तु ऐसा सिद्ध करने के लिए कुछ भी नहीं है कि इस प्रकार की व्यापार बाजार के सिद्धांतों के अनुकूल सिद्ध किया गया हो। हंगरी में जन्मे अर्थशास्त्री कार्ल पुलानयी की यह मान्यता थी कि व्यापार और बाजार के मध्य आवश्यक रूप से कोई संबंध नहीं है जैसा कि आर्थिक सिद्धांत से समझा जाता है अथवा व्यापार या गाँव अथवा स्थानीय गलियों के बाजारों के बीच वास्तविक रूप में माना जाता है। बैबीलोन और मध्य पूर्व का प्राचीन विश्व स्तरीय व्यापार सरकारी कर्मचारियों द्वारा चलाया जाता था और उन्हीं के द्वारा उसकी देखभाल की जाती थी। अंतर्राष्ट्रीय कीमतें राजनैतिक संधियों द्वारा निर्धारित की जाती थीं तथा उनके संबंध में किसी प्रकार का कोई प्रश्न नहीं किया जा सकता था अथवा आदान-प्रदान के लिए किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं किया जाता था।

सामान्य रूप से जिन्हें पारम्परिक बाजार कहा जा सकता है, उनमें व्यापार पूर्व कीमतें विद्यमान थी और उनका बाद में चलन हुआ तथा वे उस व्यापार की मात्रा द्वारा आसानी से प्रभावित नहीं हुई । वे सामाजिक कीमतें थीं जिन्हें सीमा शुल्क द्वारा निर्धारित किया गया था। जबकि आर्थिक सिद्धांत द्वारा विश्लेषित आधुनिक बाजार को स्वनियमित बाजार कहा जाता है, वहाँ कीमतें लोगों के मध्य सामाजिक सम्बन्धों से स्वतंत्र होती हैं तथा पूर्ति और माँग के परस्पर लेन-देन का प्रतिफल होती हैं। पोलायनई का यह विचार है कि सामान्य रूप से बाजार और सामाजिक सम्बन्ध के मध्य सम्बन्ध-विच्छेद है, जो आर्थिक आधुनिकता को लक्षित करता है।

मध्य युगीन बाजार और प्राचीन शासन के मध्य फ्रांस के अधिकांश बाजारों में कीमतें कड़ाई से नियंत्रित की जाती थी और वे स्वनियमित बाजारों के साथ मेल नहीं खाती थीं। इस बात पर भी विचार किया जा सकता है कि जेनेवा, अमालफी, वेनिस और मध्य काल के अंत में हैनसियातिक बंदरगाहों में प्रमुख सौदागरों द्वारा किया जाने वाला व्यापार बाजार-उन्मुखता की अपेक्षा अधिक जोखिम का [illegible]। इनमें जो लाभ होते थे, वे कभी-कभी बहुत अधिक [illegible]आ करते थे।

सुमेरियन मिट्टी की बनी गोली जिसका उपयोग, भेड़ों और बकरियों की संख्या का हिसाब रखने के लिए किया जाता था (ईसा पूर्व 2350)।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

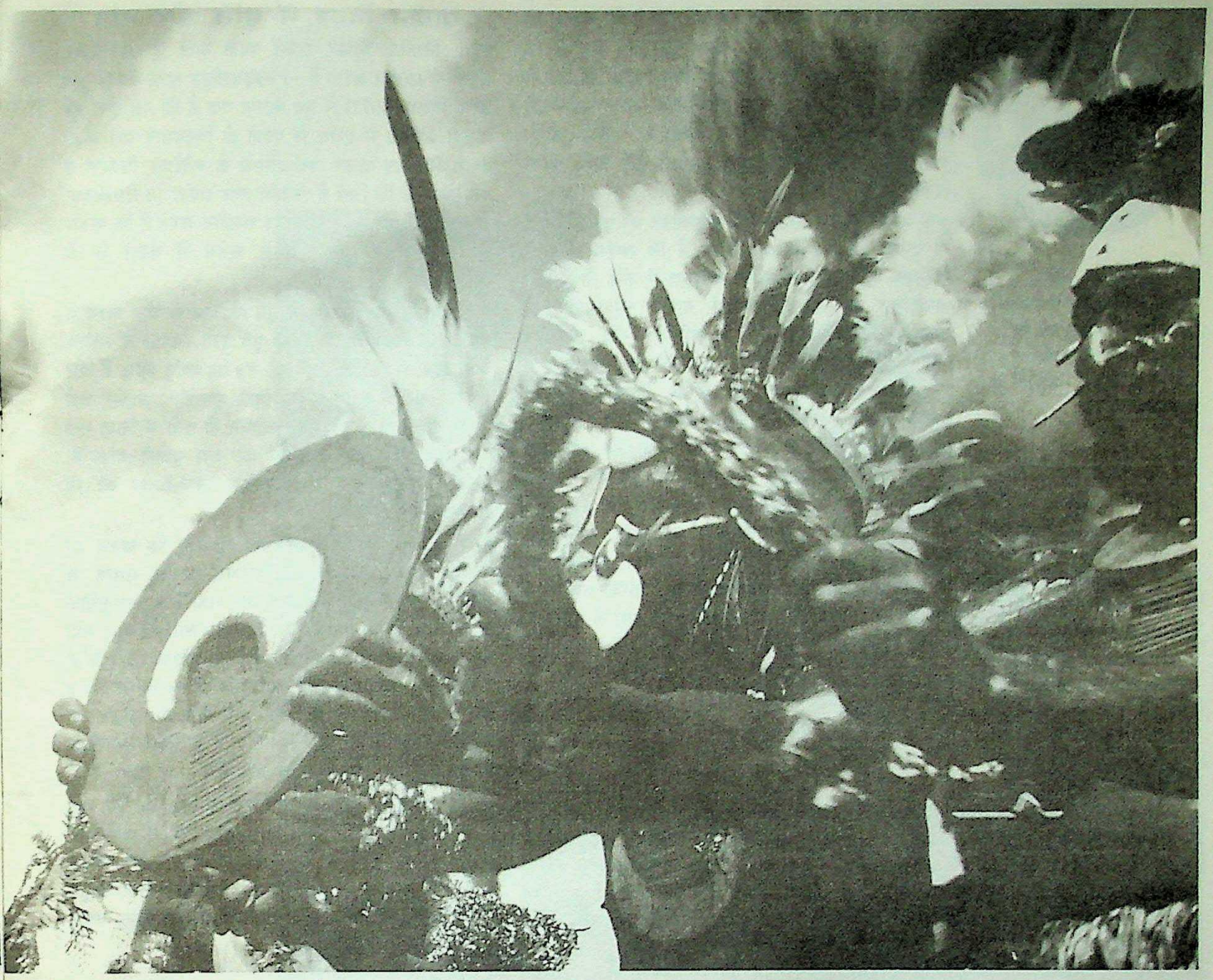

परन्तु ये लाभ अनिश्चित थे और इनमें जोखिम बना रहता था। वे पूर्ति और माँग के नियम से स्पष्टतया संबंधित नहीं थे।

सोलहवीं शताब्दी के अंत में दालों और धातुओं के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार आधारभूत उपभोग के [illegible] एक प्रतिशत के बराबर बना रहा। सबसे धनी किसानों ने अपने खलिहान के उत्पादन का 15—20 प्रतिशत भाग ही बेचा। यह बाजार नियंत्रित अर्थव्यवस्था को पूरा नहीं करता था।

प्रचलित मान्यता?

हम अपने तर्क को और आगे बढ़ाएँ। ऐसी अर्थव्यवस्थाओं में जो बाजार पर प्रत्यक्ष रूप से आश्रित है, कीमतें आवश्यक आर्थिक सिद्धांत की अपेक्षा पूर्ति और माँग के नियम द्वारा अपेक्षाकृत कम कठिनाई से अनुबंधित होती है। उदाहरणार्थ, फ्रांस में बीस वर्ष पूर्व मछली की कीमतों में उतार-चढ़ाव रहा, जो पकड़ी गई विविध प्रकार की मछलियों के आकार के फलस्वरूप हुई और उन्हें एक ओर कप्तान तथा उनके कर्मी दल के बीच स्थायी सम्बन्ध की आवश्यकता द्वारा काफी हद तक संयमित किया गया तो दूसरी ओर कप्तान और मछली बचने वाले थोक व्यापारियों के बीच कीमतें निर्धारित की गई।

मैलपा धार्मिक दल (पापुआ न्यू गिनीआ) के सदस्य मोका नामक विनिमय के पारम्परिक रूप के एक भाग के तौर पर उपहारों को प्राथमिकता देते हैं।

इसी प्रकार, कर और व्यापार के सामान्य समझौते (गेट) में किए गए करार इस बात के पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध कराते हैं कि स्रोजों में उपलब्ध कीमतों का बाजार में उपलब्ध कीमतों से कुछ लेना-देना नहीं है। यह ज्ञात करना भी वैध है कि सामान्य रूप से वस्तुओं की कीमतें, चाहे उनकी प्रकृति कुछ भी क्यों न हो, सत्ता के सम्बन्धों द्वारा नियंत्रित नहीं होतीं। यदि आप चाहे तो कह सकते है कि ये नितांत पदार्थ सम्बन्धी अथवा आर्थिक मात्रा की अपेक्षा ऐसे व्यक्तियों, दलों, सामाजिक व्यावसायिक वर्गों और राष्ट्रों की सामाजिक मान्यता प्राप्त मूल्य द्वारा नियमित की जाती है, जो उन्हें उत्पन्न करते हैं।

अभी हाल ही किए गए अनुसंधान ने यह बताया है कि उन वास्तविक बाजारों का कार्यशील होते रहने का, जो नेटवर्क (एकाधिकार अथवा अल्पविक्रेताधिकार) की पद्धति पर टिके हुए हैं, बहुत कम संबंध उस आर्थिक सिद्धांत के साथ होता है, जिसके बारे में कुछ प्राधिकारियों का यह विश्वास है कि "बाजार" की मान्यता अब अप्रचलित हो गई है।

अंत में यह सर्वविदित है कि सर्वाधिक पूँजीवादी अर्थ व्यवस्थाओं में भी वास्तविक आर्थिक कार्यकलाप, प्रायः राजकीय और प्रशासनिक मापदण्डों की अपेक्षा बाजार की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

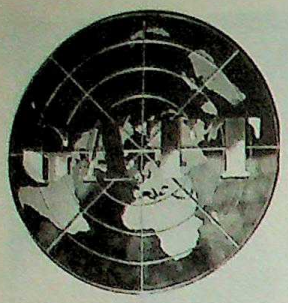

1993 में गेट (कर और व्यापार का सामान्य समझौता) का प्रतीक चिन्ह। उसके बाद गेट का स्थान विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू० टी० ओ०) ने ले लिया है।

आवश्यकताओं पर बहुत कम आधारित होते है। बाजार की गौण भूमिका का महत्व इस तथ्य द्वारा कम होता है कि अधिकांश सामाजिक जीवन, अवैयक्तिक संबंधों के क्षेत्र में जन्म लेना है और यह वाणिज्य, राजनीतिक अथवा प्रशासन के क्षेत्र में उत्पन्न नहीं होता। यह संबंध धन अथवा कानून द्वारा शासित नहीं होते अपितु उपहारों और ऋणों द्वारा शासित होते है।

कुछ व्यक्ति बाजार ऐतिहासिक एकाकीपन को चुनौती देते हैं तो दूसरी ओर यह विश्वास करते है कि अपनी रूचि के विनिमय की संभाव्यता अथवा अस्तित्व से कोई भी व्यक्ति अपरिचित नहीं है। उदाहरणार्थ, पापुआ न्यू गिनीआ के ट्रोब्रयांड आइलैंड्स (*कुला*) के अभिजात और उत्सवीय व्यापारिक प्रक्रिया में गुम्फित उपयोगी विनियम अथवा अदला-बदली (*ग्रिमवाली*) का विचार निहित है। इसी प्रकार,उत्तरी अमरीका के उत्तर-पश्चिमी समुद्र तट पर क्वाक्विबतल इंडियनों के अदला-बदली की पद्धति अपरिचित नहीं थी, जैसा कि मार्सेल मॉस ने बताया। उन्होंने समारोह भोज, पौटलैच का अभ्यास किया, जिसमें प्रमुखों ने उपहार प्रदान किए ताकि उनकी प्रतिष्ठा बढ़ सके। यदि कुल मिलाकर आदिम संस्कृतियाँ, उपहारों का संग्रह, उदारता और निष्काम भावनाओं द्वारा किया जाता था तो इसका कारण यह नहीं था कि वे इनकी उपयोगिता अथवा स्वलाभ के उद्देश्यों से अपरिचित थे। परन्तु उन्हें सामाजिक संहति के अनुरक्षण की चिंता रहती थी। क्योंकि यदि क्षमा दान की भावना इसके पीछे न होती तो सामाजिक संहति खतरे में पड़ सकती थी।

1487 से दीवानी कानून नगर-संहिता की पांडुलिपि से लिए गए इस लघु चित्र में हेमबर्ग बंदरगाह में हैनसियातिक लीग के सौदागर दिखाए गए हैं। हैनसियातिक लीग के उत्तर जर्मन शहरों का संघ था और लालटिक में व्यापार करने वाले सौदागर दिखाए गए हैं (12वीं से 17वीं शताब्दियाँ।)

प्राचीन विश्व में पूर्ति और माँग

स्वतः नियमित बाजार सबसे पहले कहाँ दिखाई दिया? पोलानयी स्वीकार करता है—*द लाइवलीहुड़ ऑफ मैन* (मनुष्य की जीविका) (1977) में यह बताया गया है कि यह ईसा पूर्व पांचवीं शताब्दी में एथेंस में पहले ही विद्यमान था। प्लेटो द्वारा दिए गए बाजार अर्थव्यवस्था के ब्यौरेवार विवरण से पता लगता है कि जिसे वे "स्वस्थ शहर राज्य" (*द रिपब्लिक, II*) कहते हैं और वे निःसंदेह यह स्थापित करते है कि बाजार की आंतरिक कार्य-शैली उनके समय में पहले से ही विदित थी।

परन्तु तीन शताब्दियों पूर्व भी चीन में चीन राज्य के प्रधानमंत्री क्वाअन चोंग (ईसा पूर्व 730—645) ने अधिक परिशुध्दता से पूर्ति और माँग के तंत्र का वर्णन किया है और जोरदार शब्दों में बताया है कि "नियम मूल्यों का प्रारम्भ, चाहे उनका समय-समय पर पुनः संशोधन ही क्यों न किया गया हो, कीमत विषयक आंदोलनों को कम प्रवाही बनाएगी, उत्पादन कम करेंगी और आर्थिक कार्यशीलता को भी रोकेगी।"

इसलिए इस बात पर चर्चा की जाए कि बाजार को विशुध्द आर्थिक प्रकृति के विनिमय अथवा समाज से असम्बध्द अवैयक्तिक संबंधों के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक अथवा ऐतिहासिक कारकों के सैट तक कभी भी कम नहीं किया जा सकता—शीघ्र ही एक तार्किक प्रक्रिया उभरेगी जो ऐसे उत्पाद और उपभोग को शासित करेगी जिसने सामाजिक कानूनों के पुनःप्रचलन को पीछे छोड़ दिया है। बाजार का सारतत्व ऐसी विशिष्ट गति में निहित हैं जो किसी सामाजिक व्यवस्था में माल के प्रचलन की प्रक्रिया में होता है।

बाजार के विचार को यह बहाना बनाकर छोड़ देना भूल होगी कि सैध्दांतिक मॉडल अपने विशुध्द रूप में प्राप्त नहीं किया जा सकता। प्रत्येक व्यक्तिक मामले में अधिक लाभदायक दृष्टिकोण यह स्पष्ट करता है कि व्यापार कानून और उपहार व्यवस्थित संरचनाओं के रूप में किस प्रकार परस्पर संबंधित होते हैं।

राजनीतिक अंतरापृष्ठ

ऐसा प्रतीत होगा कि पश्चिमी मॉडल के विश्व भर में प्रसार से पूर्व शताब्दियों तक मुख्यतया यह अपनी विविधता के लिए प्रसिद्ध था। स्वयं नियमित बाजार अपने विविध प्रारूपो में कमोबेश विशुध्द रूप में विश्व में कई स्थानों पर दिखाई दिए। शायद इसका कारण यह था कि प्राकृतिक संचार मार्गों यथा समुद्र और नदियों द्वारा वे पहुँच सके परन्तु बाजार के उस प्रारूप का विश्व ज्ञान अधिक भागों में अधूरा और अप्रत्यक्ष रहा तथा अन्य कारकों की पर्याप्त संख्या द्वारा मध्यस्थता करता रहा। कुछ क्षेत्र अभी हाल ही तक पूर्णतया अपरिचित रहे।

भौगोलिक विविधता ऐसी ऐतिहासिक परिवर्तनशीलता द्वारा सहयोगी रही है कि जिसका अर्थ यह है कि बाजार एक क्षण दृष्टिगोचर होता है और दूसरे ही क्षण लुप्त हो जाता है। इसका साक्ष्य ईसा की दूसरी शताब्दी में रोमन साम्राज्य में दिखाई देते है। परन्तु ऐसा लगता है कि आगामी शताब्दियों के दौरान में ये पूर्णतया नष्ट हो गए। यद्यपि हम सातवीं ईसवी शताब्दी में आर्थिक उदारता के सिद्धांतवादी क्वांग चौंग में पाते हैं, इस प्रकार के बाजार की वर्तमान मौजूदगी चीन के साम्राज्यशाही एकीकरण के बाद देखते हैं जो अधिक संदेहयुक्त लगती है। यूरोप में मध्य युग के अंत में आधुनिक बाजार का उत्पादन भोग-विलास के सामान के बड़े पैमाने पर व्यापार करना न था, परन्तु अविकसित राष्ट्र राज्यों का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सोलहवीं शताब्दी के वेनिस के बैंकर को जान-II वैन ग्रेवैनब्रोइक द्वारा इस जल रंग से दर्शाया गया है (1731-1807)।

साहचर्य, बैंकर और उदीपमान मध्यवर्गीय लोगों के साथ हुआ। राष्ट्र राज्य तथा आधुनिक बाजार तब सहवर्ती बन गए।

इस बात पर भी चर्चा की जा सकती है कि जब बाजार अर्थ-व्यवस्था सशक्त रूप से विद्यमान रहती है, अन्य शब्दों में वास्तविक होती है और सभी समाज में व्याप्त होती है। इसकी वास्तविकता विशिष्ट कारकों पर निर्भर होती है जो एक दूसरे से विचित्र होते हैं। वे ऐसे कारक हैं जिन्हें राजनीतिक कहा जा सकता है। यदि इस शब्द को उस मार्ग के अर्थ के रूप में समझा जाए जिसे समाज संघर्षशील सम्बन्ध में निर्धारित करता है तो इसकी एकता और एकांतता को निर्माण के रूप बनाया जाना चाहिए।

जब उदार अर्थशास्त्री भूल करतें हैं तो यह स्थिति ऐसी होती है जब वे प्रतिपादित करते हैं कि बाजार इच्छा-शक्ति से स्थापित किया जा सकता है और इस कार्य में कोई चिंता नहीं होती कि किस प्रकार इसने समाजों की सम्बद्धता अथवा अव्यवस्था में किस प्रकार योगदान दिया है। कुछ समय पूर्व तीसरी दुनिया और हाल ही में पूर्व सोवियत संघ का उदाहरण यह प्रदर्शित करता है कि जब एक तर्क-संगत बाजार की प्रक्रिया है, तब तक यह जटिल प्रश्न है कि यह स्वतंत्र रूप से कितना परिचालित हो सकता है। यह कि राजनीतिक मामला है, आर्थिक मामला नहीं। ■

एलैन कैले
फ्रांसीसी समाजविज्ञानी है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ट्लेटेलोलको, एज़टेक साम्राज्य की दुकान की खिड़की

—मेरिया रिबैका योमा मैडीना
और लुइस एलबर्टो मारटौस लोपेज़

पूर्व कोलंबियाई मेक्सिको में ट्लेटेलोलको के एज़टैक शहर में एक विशाल बाजार था। इस बाजार के आकार और संगठन ने उन स्पैनी विजेताओं को चकित कर दिया जिन्होंने सोलहवीं शताब्दी के यूरोप में इस प्रकार का कुछ भी नहीं देखा था।

एम० आर० योमा मैडीना और एल० ए० मारटीस लोपैज, मेक्सिको राजधानी का एक हिस्सा था। किम्वदंती के अनुसार टैनोकिट्टलान 1325 में लेक टैक्राकोको में एक द्वीप पर स्थापित हुआ था। यह स्थल झील के संसाधनों के खोजने का आदर्श स्थल था। यहाँ बीज, फल, सब्जियाँ, भवन-निर्माण की वस्तुएँ और अन्य कई आवश्यक वस्तुएँ बाहर से लाई गई। 1337 में एज़टैक खंडित दल ने एक स्वतंत्र शहर की स्थापना की जिसका नाम ट्लेटेलोलको था और जो टैनोकिट्टलान के उत्तर में द्वीप पर बसाया गया। दोनों शहर शीघ्र ही एक दूसरे के प्रतिद्वंद्वि हो गए। ट्लेटेलोलको की रणनीति, स्थिति और इसके निवासियों के असाधारण व्यापार की बुद्धिमत्ता ऐसी थी कि इस शहर ने दृढ़ वाणिज्यिक ख्याति प्राप्त कर ली।

ट्लेटेलोलको
शहर का मॉडल।

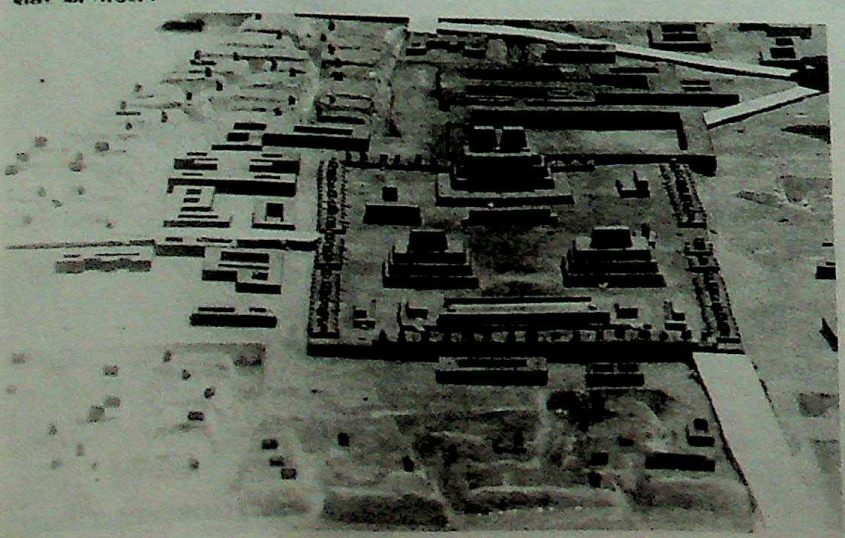

एक बाजार उप नगर

सर्वप्रथम ट्लेटेलोलको के बाजार विशेष रूप से प्रारम्भिक उत्पाद बेचते थे, परन्तु आर्थिक और सामाजिक विकास ने धीरे-धीरे भोग-विलास की वस्तुओं को व्यापार में वृद्धि करने के लिए प्रोत्साहित किया। यह इतना महत्वपूर्ण हो गया कि सुदूर व्यापार करने में विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए संस्था स्थापित की गई। यह पोचटेकॅयोट्ल के नाम से प्रसिद्ध हो गया और व्यापार का ऐसा नेटवर्क स्थापित हुआ जो मायान साम्राज्य के प्रांतो तक फैल गया।

1473 में युद्ध के बाद कोई भी स्थान नहीं दिया गया। ट्लेटेलोलको टैनोकिट्टलान से भेजी गई सेना द्वारा युद्ध में पराजित हुआ। रात भर में ही गौरवशाली शहर टैनोकिट्टलान का भाग बन गया। बाजार की ख्याति और आकार को ध्यान में रखते हुए विजेताओं ने इसके प्रसार को प्रोत्साहित करने का निर्णय लिया और अन्य शहरों तथा एज़टैक साम्राज्य के क्षेत्रों से विविध प्रकार के विरल उत्पादों को भेजना प्रारम्भ किया।

विजेताओं का आश्चर्य

जब स्पेन ने मेक्सिको पर विजय प्राप्त की तब ट्लेटेलोलको का बाजार अपनी चरम समृद्धि पर था। समसामयिक स्पैनी इतिहासकार यह बताते हैं कि यह बाजार स्थल, शहर के पूर्व में विशाल समारोह अहाते में एक विस्तृत वर्गाकार एसप्लांडे पर स्थित था जिसके किनारे 200 मीटर लम्बे थे और पूरी तरह पत्थरों से बिछे हुए और समतल थे तथा इसके चारों ओर आवासीय दुकाने थीं। इस वर्ग के मध्य में "मैमोज़तली"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टैनो कर्दीटेलान एज़टैक साम्राज्य की राजधानी है। यह शहर ऐसे स्थल पर स्थित था जहाँ आजकल मेक्सिको शहर है। इसका प्रतिद्वंदी शहर टिलैटे लोलको, अंततोगत्वा महान मेट्रोपोलीस का विकृत खण्ड बन गया। टैनो कर्दीटेलान के जीवन का दृश्य (ऊपर), इसकी रचना मेक्सिको के चित्रकार डियागो रिवेरा (1886—1957) द्वारा निर्मित भित्तिचित्र की माला से लिया गया है। ये चित्र मेक्सिको के इतिहास को अंकित करते हैं और ये शहर के नेशनल पैलस मेक्सिको आरक्षित है।

मेरिया रिबैका योमा मैडीना और लुइस एलबर्टो मारटोस लोपेज़ मेक्सिको के पुरातत्वविद् हैं।

था जो विकृत सीढ़िनुमा पिरामिड था, जिसका उपयोग उत्सवों, समारोहों और अन्य सार्वजनिक कार्यों के लिए किया जाता था।

मेक्सिको को एक स्पैनी विजेता हरनान्डो कोर्टेज़ ने लिखा है, "इस शहर में कई चौक है, जहाँ बाजार/व्यापार और वाणिज्य पूरे समय के लिए चलते हैं। एक चौक सालामांका के आकार से दुगुना है और यह तोरण द्वार द्वारा घिरा हुआ है, जहाँ से प्रतिदिन खरीदने और बेचने के लिए सत्तर हजार से अधिक लोग इनमें आते जाते हैं।"

यह स्थल, ला लैगूनिल्ला के जहाज़ीघाट के समीप शानदार ढंग से स्थित है, जहाँ सौदागरों के सामान से लदी नौकाएं बंधी रहती हैं। ये बाजार मुख्य भूमि के साथ तीन सेतुओं से जुड़ा हुआ हैं।

एज़टैक दुनिया की दुकान की झांकी के रूप में टिलैटे लोलको बाजार ने साम्राज्य के चारों कोनों से आश्चर्यजनक विविध प्रकार के आकर्षक उत्पादक-फल, पशु औषधियाँ कपड़ा, चमड़ा, चीनी, मिट्टी के बर्तन, औज़ार, उपकरण और सभी प्रकार का सामान अपने ग्राहकों को उपलब्ध कराया है। इस बाजार ने कई प्रकार की सेवाएं, यथा सार्वजनिक स्नानघर, कैफे, नाइयों की दुकानें, कुम्हार और सेवकों की विविध सेवाएं उपलब्ध कराई है।

ककाओ मुद्रा

सरकारी तौर पर टलामेक्की नाम से जानने वाले सौदागर सामान्य रूप से उत्पादक भी थे। बिचौलिए रेगेटोनेरिया जाने जाते थे जो सस्ती कीमत पर सामान खरीदते थे और मँहगी कीमत पर लाभ उठाकर सामान बेचते थे। औपनिवेशिका काल तक इनका उद्भव नहीं हुआ था।

सामान्य रूप से विनिमय का प्रचलन था परन्तु कुछ सामान का मुद्रा के रूप में उपयोग किया जाता था। साम्राज्य ने कुछ भागों में इस प्रयोजन के लिए कोको का पेड़ उगाया जाता था और इसका उत्पादन सरकार द्वारा कड़ाई से नियोजित किया जाता था। कम खर्चीली मदों के लिए बीन को आधारभूत यूनिट समझा जाता था और 8,000 बीन (किज़िक्वीपाइल्स) की बोरी को खर्चीली मदों के रूप में समझा जाता था।

रूमाल के आकार के रुई के वर्ग "क्वाच्टली" के नाम से जाने जाते थे और इनका उपयोग मुद्रा के रूप में किया जाता था। उनके तीन आकार थे जो क्रमश: 65,80 और 100 कोको बीन के बराबर थे। एक रोंगी 100 बीन के क्वाच्टली के मूल्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एज़टेक साम्राज्य की राजधानी टैनो कट्टीटेलान में व्यापार। नेशनल पैलेस (राष्ट्रीय महल), मेक्सिको शहर में डियागो रिवेरा द्वारा निर्मित भित्ति चित्र से प्राप्त विवरण।

का थी। एक दास जो गा सकता था, 30 क्वाच्टली के मूल्य का था तथा एक उत्कृष्ट गणिका और नर्तकी 40 क्वाच्टली अथवा 4,000 कोको बीन पर मिल सकती थी।

सोने का चूरा भुगतान करने का एक अन्य रूप था। इसे पंखों की थैलियों में भर दिया जाता था जिसकी कीमत उसकी लम्बाई और व्यास पर आधारित होती थी। इसमें एक लघु परिवर्तन उस समय हुआ जब छोटे तथा पतले टी आकार के तांबे के सिक्के, सोने के डले, ताँबा अथवा जस्ता, संगयशन के टुकड़े और यहाँ तक कि मोलस्क (चूर्ण प्रावार) जिसे अल्प दवि-गुरु चरण (रुपॉण्डीलस) कहा जाता है, काम में आने लगे।

इन व्यापारिक कार्यकलापों ने बाजार के लिए सुस्थापित कानून और नियमों का पालन किया था। पूर्व कोलम्बियाई मेक्सिको की अन्य संस्थाएं "सही और उचित" (क्राल्ली, यीट्ली में) ढंग से कार्य करती रहीं। बाजार क्षेत्र के बाहर कोई भी वाणिज्यिक लेन-देन नहीं हो सकता था। बाजार के क्षेत्र में प्रत्येक सौदागर को उसके सामान की प्रकृति के अनुरूप स्थान आबंटित किया जाता था। रस्सी और विभिन्न माप के बर्तन मानकीकृत किए गए थे तथा उन्हें संख्या जानने के लिए उपयोग में लाया जाता था। प्रत्येक वस्तु की कीमत पहले ही नियत की जाती थी तथा किसी भी सौदागर को मापने या कीमत बताते समय धोखा देने पर कठोरता से दंड दिया जाता था।

एक ऐसा चैम्बर था, जहाँ बारह न्यायाधीश स्थायी सत्र में बैठा करते थे ताकि वे "उचित व्यापार" और "मतभेद" के बारे में निर्णय कर सकें। अधीक्षक, नियमित रूप से दौरा किया करते थे, ताकि वे सुरक्षा बनाए रख सकें और धोखाधड़ी को दूर कर सकें।

जब मेक्सिको शहर की स्थापना की गई थी तब यूरोपवासियों ने दो नए बाजार बनाए थे, परन्तु उनमें से कोई भी बाजार टिलैटेलोलको के आकार अथवा शान को प्राप्त नहीं कर सके। परन्तु टिलैटेलोलको स्पेनी विजय के बाद बना न रह सका। ■

एक विशाल एम्पोरियम

"आइए हम सोना, चाँदी, कीमती पत्थर, पंख, घड़िया और कसीदाकारी का माल तथा दास-दासियों व्यापारियों की चर्चा प्रारंभ करें। इसके बाद ऐसे व्यापारियों की चर्चा की जाएगी, जो मोटा कपड़ा सूती सामान, उमेठे हुए धागों के सिले हुए कपड़े बेचा करते थे। उस समय चॉकलेट के व्यापारी भी थे जो चॉकलेट बेचा करते थे। इस प्रकार आप देखेंगे कि न्यू स्पेन में सर्वत्र प्रत्येक प्रकार के सौदागर थे। वे उसी प्रकार फैले हुए थे जैसे मेरे अपने जिला मेडीना देल केम्पों में फैले हुए हैं। यह जिला मेलों का केन्द्र रहा जहाँ स्टालों की प्रत्येक पंक्ति में विशेष प्रकार के सामान सजे रहते थे। यही स्थिति इस बाजार की भी थी, वहाँ ऐसे व्यापारी थे जो सूतली से बने कपड़े और रस्सियाँ तथा सेंडल बेचा करते थे। ये सभी वस्तुएँ एक ही संयंत्र द्वारा निर्मित होती थी। ये सभी वस्तुएँ बाजार के ऐसे भाग में रखी जाती थीं जहाँ उन्हें आबंटित किया जाता था तथा दूसरे भाग में चीतों तथा शेरों, उदबिलाव, सियार और हिरन, बिज्जू, पहाड़ी बिल्लियाँ और अन्य जंगली जानवरों की खाल बेची जाती थी। इनमें से कुछ खालों को कसाया जाता था और कुछ खालों को ज्यों का त्यों रखा जाता था। वहाँ अन्य प्रकार का सामान भी बेचा जाता था।

"वहाँ मोठ, सेज (एक प्रकार की दवा) तथा अन्य सब्जियां और जड़ी-बूटी बेची जाती थीं। वहाँ मुर्गियां, गलकम्बल वाली चिड़ियां, खरगोश, शशक, हिरन, छोटी बत्तखें, छोटे कुत्ते और इसी प्रकार के अन्य जानवर बेचे जाते थे। वहाँ फल बेचने वाले भी होते थे और ऐसी महिलाएँ होती थीं जो पका हुआ भोजन, आटा और मीठा केक और रद्दी चीजें बेचा करती थीं। इनके अतिरिक्त बाजार में सभी प्रकार के मिट्टी के बर्तन बिका करते थे। इन बर्तनों में पानी के बड़े ज़ार से लेकर छोटे जग अपने-अपने स्थान पर सजाए जाते थे। इसके अलावा शहद, शहद की बनी वस्तुएँ और अन्य प्रकार की मिठाइयाँ यथा नौगट बेची जाती थीं। बाजार में अन्यत्र वे लकड़ी, बोर्ड, झूले, बीमा, ब्लाक और बेंच अपने ही स्थल पर बेचा करते थे।

"परन्तु उनके विशाल बाजार की चीजों के नाम पर शब्दों का क्यों दुरुपयोग किया जाए ? यदि मैं प्रत्येक वस्तु का विवरण देने लगूं तो उन्हें पूरी तरह व्यक्त नहीं कर सकता। उस बाजार में कागज, जिसे मेक्सिको में लोग अमल कहते हैं, कुछ नरकुल, जिससे अच्छी सुगंध आती हैं, तम्बाकू, पीला लेप, और इसी प्रकार की अन्य वस्तुएँ भी बेची जाती थीं। अधिकांश किरिमदाने (किरमिज़) की बिक्री भी होती थी और यह बिक्री उसी बाजार में की जाती थी। इसी बाजार में जड़ी-बुटी तथा इसी प्रकार की अन्य वस्तुओं के व्यापारी भी थे।

मैं नमक के विक्रेताओं तथा उन तेज चाकुओं के निर्माताओं के बारे में कहना भूल रहा हूँ, जो पत्थर से अपने आप ही चाकुओं को अलग कर लेते थे। वहाँ एसी मछली पकड़ने वाली महिलाएं और पुरुष थे जो छोटे-छोटे केक बेचा करते थे जिन्हें वे एक प्रकार की छास से बनाया करते थे। इसे वे विशाल झील से निकाला करते थे। इस घास को पीसकर एक प्रकार की रोटी बनाई जाती थी जिसका स्वाद पनीर जैसा होता हैं। वे कुल्हाड़ियां पीतल, तांबे और टीन की बनी होती थीं तथा उस बाजार में पेठा और चमकदार रंग किए हुए लकड़ी के जार भी बेचे जाते थे।. . . ."

बर्नल डियाज़ देल केस्टील्लो
न्यू स्पेन की विजय (1632)
अनुवाद — एम कोहेल (1963), पेंडिवन क्लास्किरम, पेंग्विन बुक्स,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इटली

वेनिस के सौदागर

—डोनाटेल्ला कालाबी

रियाल्त पुल मूल रूप से लकड़ी का बना हुआ है। एक शताब्दी में इस पुल को कई बार दोबारा बनाया गया। 15 वीं शताब्दी के अंत में इसके बीच में एक उठाऊ पुल का निर्माण किया गया। जिससे कि इसके नीचे नावें आसानी से चल सकें। यह चमत्कार, स्मृति चिह्न के रूप में ऊपर दिये गये चित्र में देखा जा सकता है (1494)

बारहवीं शताब्दी के प्रारंभ में एक नहर, जिसे हम अब वेनिस कहते हैं, द्वारा विभाजित द्वीप समूह में एक समृद्ध वाणिज्यिक जिला था। यह ऐसे स्थान पर विकसित हुआ जहां स्थानों की तुलना में भूमि ऊँची थी तथा वह बाढ़ को बचा सकती थी।

तीन शताब्दियों बाद यह जिला — रियाल्तो — वेनिस गणतंत्र (वेनेशियन रिपब्लिक) का वित्तीय केंद्र बन गया। दृढ़ता से निर्मित दूसरे शहरी भाग में कई प्रशासनिक राज्य-कार्यालय थे। सार्वजनिक रूप से समय देने वाली घड़ी, वित्त और वाणिज्य के घंटो का संकेत दिया करती थी।

10 जनवरी, 1514 की रात को रियाल्तो भर में आग लग गई और उसने रियाल्तो का अधिकोश भाग राख कर दिया। यह आग लकड़ी के बने गोदामों में फैल गई जिनमें सामान भरा हुआ था तथा इस आग से सार्वजनिक तथा निजी बहुमूल्य वस्तुएं नष्ट हो गई। इसके पुनर्निमाण में लगभग बीस वर्ष लग गए।

सोलहवीं शताब्दी के मध्य में रियाल्तो, अधिक व्यस्त

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पियाजा सेन गियाकोमो दि रियाल्तो, वेनिस (1730), वेनिस के चित्रकार एन्टोनियो कैनाल द्वारा चित्रित, जो केनालट्टो के नाम से प्रसिद्ध हैं। इस स्क्वेयर में एक बाजार लगा करता था।

गोदी क्षेत्र था। व्यापारिक कार्यकलाप, वाणिज्यिक अहाता, सरकारी भवन और बैंक सेन गिया कोमो के गिरजाघर (वेनिस में सबसे प्राचीन भवन के रूप में प्रसिद्ध) के चारों ओर तथा उसके समीपी स्थानों में फैले हुए थे।

उस लकड़ी के पुल के नीचे, जो ग्रैंड कैनाल के आर-पार पहली बार निर्मित किया गया था, कई कार्यालय थे। सार्वजनिक स्थानों के ठीक सामने कोठरियां उन लोगों की प्रतीक्षा में थीं, जो कर-वंचन में लगे हुए थे अथवा सम्पत्ति के कानून की अवहेलना करते थे। रिवा देल विनो और रिवा देल फेरो (मदिरा और लोहा-घाट)पर मदिरा, तेल, लोहा, नमक और आटा भरे बजरे थे। वहाँ भूमि सीमा शुल्क भवन, मदिरा कर भवन और अन्य मूल्यांकों के कार्यालय स्थित थे जो अंधेरे तथा मैले-कुचैले थे फिर भी वे ऐसे स्थल पर बने हुए थे जहाँ से जलीय यात्रा करने वालों को देखा जा सकता था।

इसके समीप विशाल आटे का गोदाम तेरहवीं शताब्दी में बनाया गया था और यह गोदाम सरकार की ओर से निजी कर्मचारियों द्वारा चलाया जाता था। इसके नीचे एक छोटी पोर्टिका थी जहाँ जई और अनाज उतारा जाता था। रयूजा डंग्ली और फिसी (सुनारों की गली) जो रियाल्तो पुल की ओर जाती थी, में सुनारों की दुकाने थीं और एक लम्बे भवन यथा ड्रेपेरिया नामक भवन में बजाज (ड्रेयर) की दुकाने थीं। टस्कन कपड़ा बेचने वाले सौदागर ड्रेपेरिया के पीछे रियाल्तो नुओवो स्क्वेयर में अपने काम में लगे रहते थे।

पुल के नीचे कई मजिस्ट्रेटो के कार्यालय बने हुए थे। एक खुले पोर्टिका के नीचे अभिजात वर्ग के लोग (नोबेल) और सौदागर अपना वाणिज्यिक लेन-देने किया करते थे तथा मजिस्ट्रेट नौका चालन और वस्तुओं की ब्रिकी नियमित किया करते थे। केमरलेंघी दि कोमन नामक मजिस्ट्रेट, राज्य की निधि के लिए उत्तरदायी होता था और समीजी भवन में स्थाना पत्र रूप से कार्य किया करता था।

डोनाटेल्ला कालाबी इटली निवासी हैं और शहरी इतिहास के विशेषज्ञ है।

सेन गियाकोमो का स्क्वेयर रियाल्तो का कार्य-केन्द्र था और यह स्थान था जहां अन्तर्राष्ट्रीय ठेकों पर लेन-देन किए जाते थे। समीप के भवन पर निचली मंजिल पर मुद्रा-विनिमय करने वाले थे और बाद में ऐसे काउंटर बन गए जहाँ करार किए जाते थे। ऊपर की मंजिलों में सुरक्षित कमरे बने हुए थे जहाँ लोग अपनी कीमती वस्तुएँ रखा करते और प्रोवेडीटोरी नामक लोक निरिक्षकों के आवास स्थल हुआ करते थे। समीप की एक गली में नोटरियों के कार्यालयों के लोहे के बने स्थान थे और यही पर समुद्री बीमा के प्राधिकारियों के मुख्यालय भी थे। दूसरे भवन लोमचर्म-व्यापारी के थे। अन्य दो भवनों में पनीर, टोकरियाँ और रस्सी की दुकानें थीं।

ग्रैंड कैनाल के ऊपर खम्बों के ऊपर विशाल घाट-शुल्क का क्षेत्र था जोजड़ी — बूटियों का बाजार, (एरबेरिया) फल बाजार (फ्रूटारिया) और अन्य विशिष्ट एम्पोरियम तथा अभिजात वर्ग के लोगों के चिंतन के लिए कक्ष बने हुए थे। आस-पास मछली की दुर्गन्ध से बचाने के लिए पैशचेरिया (मछली बाजार) सैन गियाकोमो स्क्वेयर से बाहर भेज दिया जाता था। रियाल्तो के शेष भाग में कुछ घर, गोदाम और दुकानें बनी हुई थीं। और टवरनी भी थे, जहाँ कई विदेशी सौदागर स्वागत सत्कार पाया करते थे तथा कुछ अन्य सराय बनी हुई थीं, जहाँ प्राय: वेश्याएँ आया करती थीं।

रियाल्तों पूर्व और पश्चिम के मध्य व्यापार का केंद्र होने के कारण महत्वपूर्ण हैं। इसके कुछ अवशेष अभी भी रह गए हैं। रियाल्तों पुल के नीचे स्टैंगिरा पब्लिका (सार्वजनिक माप-तोल के तंत्र) और पियेत्रा देल बैन्दो (एक गुलाबी ग्रेनाइट स्तंभ जहाँ गणतंत्र की डिग्रियाँ पढ़कर सुनाई जाती थीं) सैन गियाकोमो स्क्वेयर पर अब भी उपयोग में आते हैं।

1514 की आगजनी के बाद इस जिले के पुन:निर्माण के लिए बुलाए गए वास्तुविद एनटोनियो एबॉन्दी स्कारपैगनीनो के नाम से विख्यात हैं। उन्होंने रियाल्तों को अधिक समरूप और कम घना-बसा जिसे बनाया, जैसाकि हम उनके पुराने भवनों (फैब्रिके विकी) में देख सकते हैं जो व्यापार, जहाजरानी और पूर्ति के अधीक्षकों के पूर्व मुख्यालय थे। वास्तुकला और नगर-नियोजन में अधिक नियमितता की प्रवृत्ति 16वीं शताब्दी के मध्य में जैकोपो सैंसोविनो के नए भवनों (फैब्रीके नौवे) में उभरकर आई जो ग्रैड कैनाल की गोलाई का अनुसरण करती है।

शहर में व्यापारिक केंद्र के एकीकरण की अंतिम मरम्मत 1587 में की गई थी जब पुराने लकड़ी के पुल को पत्थर में पुर्ननिर्माण करने का निर्णय लिया गया था। ■

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ब्राजील

खुला बाजार अथवा बंद दुकान ?

—मैरी फ्रांस गारसिया पारपैट

गन्ना रोपने के सम्बन्ध में आयोजित बाजारों ने प्राय: मालिक को अपने कार्यबल पर कठोर नियंत्रण करने में सक्षम बनाया।

1938 में ब्राजील की पर्नामब्रुको राज्य में सेरो-अज़ल गन्ना रोपने के मालिक ने अपने ही राज्य में बाजार की स्थापना की। यह बाजार, ऐसे अनेक बाजारों में, अपने ही ढंग का था जो उत्तर-पूर्वी ब्राजील में गन्ना उत्पादक क्षेत्र में गन्ने की खेती करने पर लगाया गया था। यह बाजार आधुनिक शुद्धीकरण तकनीकों के प्रारंभ के द्वारा चालू किए गए ऐसे-अज़लपर बड़े पैमानेपर प्रसार करने के समय अस्तितव में आया। परिणामस्वरूप जो परिवर्तन किए गए, उन परिवर्तनों ने मालिक को ऐसा बना दिया कि वह पहले की भाँति व्यक्तिगत रूप से गन्ने के खेतों के कार्य का निरीक्षण करने की बजाय अब दूरस्थ मोरेडोर्स से उन मजदूरों का निरीक्षण करने लगा जो उसके एस्टेट में रहते थे। बिचौलियों और विभिन्न क्षेत्रों के गन्ना उगाने वाले मैनेजर शक्ति का प्रयोग करने लगे।

मालिक ने बाजार की स्थापना की क्योंकि वह अपने वृहद और अधिक जटिल गन्ने की खेती करके दुबारा उत्पादन करना चाहता था ताकि वह ऐसी छोटी दुनिया से आगे बढ़ सके जो भाप से चलने वाली पुरानी मिल पर अपना ध्यान केंद्रित किए हुए थी। यह बाजार ऐसा स्थल था, जहाँ के लोग नियमित समय पर मिला करते थे जो गन्ने की खेती करने में भाग लेते थे। यह बाजार—गिरजाघर, सिनेमा और स्कूल के समान सामाजिक जीवन के लिए केंद्र स्थल था।

उस बस्ती में बाजार के लिए ऐसा स्थल खोजा गया जो परिष्करण शाला के चारों ओर विकसित किया गया। यह स्थल 14,000 हेक्टेयर विस्तार के गन्ने के विशाल खेतों के मध्य स्थित था। 25 किलोमीटर दूर पालमेयर्स के सबसे समीपी नगर तक परिवहन का कोई नियमित साधन नहीं था। इस बस्ती में केसा ग्रेन्डे शामिल था — मालिक का शानदार भवन, परिष्करण प्रबंधकों और कार्यालय-कार्यकर्ताओं के आरामदायक घर और कोठरियाँ, जिनमें कामगार और कुछ मोराडोर्स रहा करते थे (इनमें से मोराडोर्स गन्ने के खेतों में रहा करते थे)।

बाजार शनिवार की संध्या और रविवार की प्रात: लगा

उत्तर पूर्वी ब्राजील के गन्ना रोपन कर्मचारियों के निवास तथा रिफाइनरी

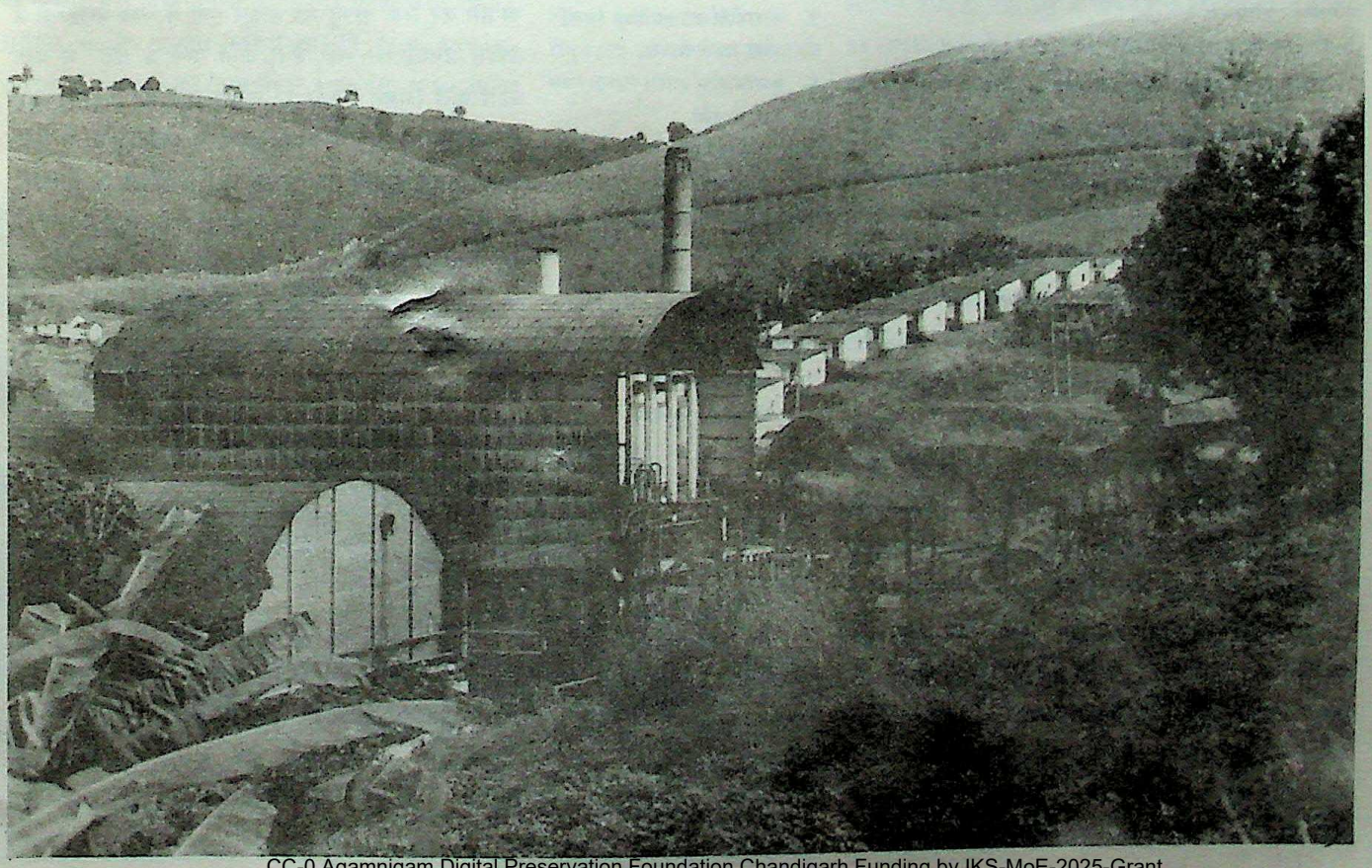

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

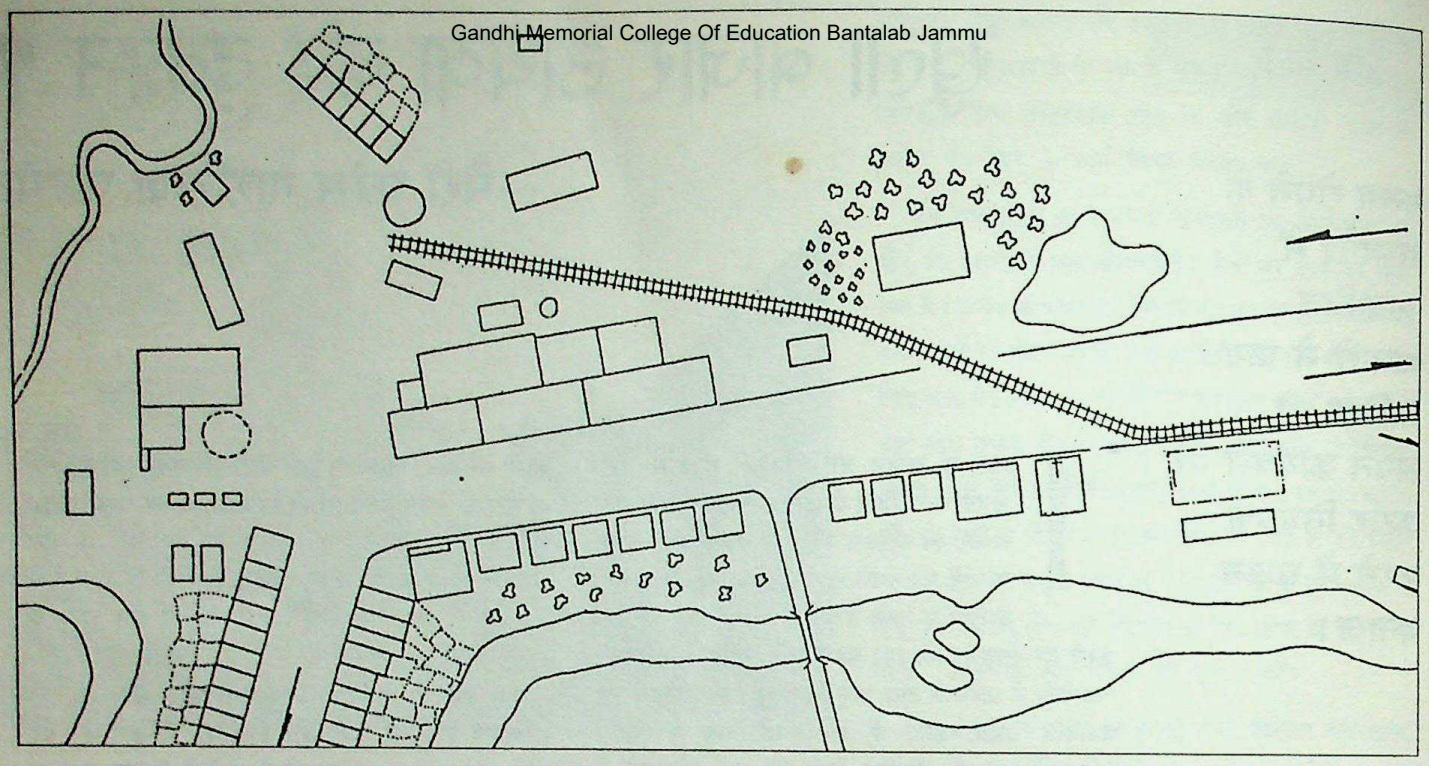

करता था। अन्य किसी छोटे नगर के बाजार के समान ही यह बाजार दिखाई देता था। एक ही प्रकार के भोजन की वस्तुओं (फल, सब्जियां, गोश्त, कसावा आटा, कपड़े और घरेलू लिनेन) की बिक्री होती थी। तथा इन वस्तुओं के एक जैसे ढेर लगा लिए जाते थे। फिर भी यह पता चला कि इस बाजार में पशु अथवा पशुओं की जोड़ी की बिक्री नहीं होती थी। छोटे तथा स्वतंत्र उत्पादकों को पशुपालन का विशेष अधिकार प्राप्त था।

कम्पनी का स्टोर

लोग अपना माल लेकर एस्टेट के बाजार से आया करते थे परन्तु उनमें से अधिकांश वस्तुएँ रोमस्थली से हुआ करती थीं, मोराडोर्स अपने भूखण्डों का उत्पाद लेकर आते थे, वहाँ परिष्करण शाला के कामगार, महिला कार्यालय कर्मचारी और मजदूर भी आया करते थे। प्रत्येक विक्रेता को मालिक अथवा बाजार के अधीक्षक द्वारा एक स्थल आबंटित किया जाता था। यह प्रबंध किसी समय रद्द किया जा सकता था, नगरों में बाजार स्टाल स्थापित करने का अधिकार सामान्यतया नगर पालिका कर के रूप में भुगतान किया जाता था। यहाँ पर स्वामिभक्त *मोराडोर्स* का पुरस्कार था जैसा कि उस भूखण्ड का दिया जाना था, जिस पर कुछ सब्जियाँ उगाई जा सकती थीं।

समीप के स्थानों के निवासी, परिष्करण शाला के कार्यकर्ता तथा कर्मचारियों की पत्नियाँ जैसी ग्राहक मोराडोर्स थीं। इसने क्षेत्रस्थली से बाहर लोगों का ध्यान सेरो-अज़ल से क्रय-विक्रय हेतु नहीं हटाया। यहाँ वस्तुओं की कीमतें नगर की वस्तुओं की कीमतों की तुलना में प्रतियोगी नहीं थीं। सब बातों से अलग यह ऐसा स्थान था, जहाँ रोपस्थली के

सेरो-अज़ल परिष्करण शाला का नक्शा

1. कार्यकर्ताओं के आवास
2. भूखंड
3. ढका हुआ बाजार
4. बाजार का स्क्वेयर
5. माल गोदाम के अतिरिक्त भाग
6. उर्वरक शेड
7. मोराडोर्स का आवास (गन्ने की कटाई करने वाले)
8. मद्यनिर्माण शाला
9. कारखाना
10. गन्ने का शेड
11. कार्यालय
12. कासा ग्रांडे (मालिक का घर)
13. स्कूल
14. गिरजा घर
15. सिनेमा घर
16. प्रबंधक का घर
17. ब्रेराकाओ (स्टोर)

मैरी-फ्रांस गारशिया-पारपेट फ्रांसीसी समाज विज्ञानी हैं।

मालिक यह बता सकता था कि वह अधिकारी है। उन सभी लोगों ने सेरो-अज़ल बाजार का संरक्षण किया, जो रोपस्थली में रह रहे थे। परन्तु प्रबंधकारी कर्मचारी केवल उसी समय नहीं जाते थे जब उनके पास नगर जाने के लिए समय नहीं होता था।

लोगों ने बताया, "हम सेरो-अज़ल से वस्तुएँ तभी खरीदते हैं जब हमें वस्तुएँ खरीदनी पड़ती हैं। ऐसा कुछ भी नहीं हैं जो हम कर सकें परन्तु यह बाजार नहीं हैं, यह बेराकाओं है अर्थात् कम्पनी का स्टोर हैं।" दोनों गन्ने के खेत में काम करने वाले (सबसे निर्धन को बाजार जाने की अनुमति नहीं दी जाती थी) तथा परिष्करण शाला के कार्यकर्ताओं के लिए बाजार उनके अधीन एक प्रतीक था। एपस्थली के प्रबंधक, जो घोड़े पर चढ़कर बाजार में घूमा करते थे, वे घोड़े पर चढ़े हुए मोराडोर्स में से किसी से भी बात किया करते थे, जिससे वे मिलना चाहते थे मालिक और उसके परिवार की उपस्थिति "स्वाभाविक" थी क्योंकि उसका घर अधिक निकट होता था।

अपने क्षेत्र के किसानों से कहीं अलग मोराडोर्स और कार्यकर्ता अपने "मुक्त" समय (मालिक के विवेकानुसार दिया जाता था) में रोमस्थली पर काम न होने के दौरान केवल क्रय-विक्रय कर सकते थे।

नियंत्रण का दस्तावेज

एस्टेट से बाहर के व्यापारी फेरीवाले और छोटे उत्पादक थे, जिन्होंने मौसम के अनुसार रोपस्थली में पहले ही काम किया था। वे आस-पास के क्षेत्र मे भूमि के छोटे-छोटे भूखंडो के मालिक थे और इस प्रकार अपने उद्देश्य की पूर्ति किया करते थे। मालिक उनके प्रति अच्छा व्यवहार किया करता था

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्योंकि फसल काटने के समय वे परिष्करण शाला के बाह्य घरों में रहा करते थे और बृहद् रोपस्थली के नियमों का पालन किया करते थे। वे सभी उसे जानते थे तथा बाजार के स्थान पर उसका अभिवादन किया करते थे।

सरकारी तौर पर बाजार, पालमेयर्स की नगर पालिका के अधीन था परन्तु रोपस्थली का मालिक ही व्यापार का समय और स्थान निर्धारित किया करता था तथा बेराकाओ के उत्पाद का वितरण देखा करता था। बेराकाओ मे माँस, सूखी मछली, तेल और कॉफी की बिक्री बाह्य व्यक्तियों द्वारा नहीं की जा सकती थी। बाजार का अधीक्षक, जो नगर पालिका की ओर से ठहरने का कर वसूल किया करता था, कार्यकर्ता होता था परन्तु वह मालिक का विश्वासपात्र भी होता था।

मालिक, बाजार के प्रत्येक स्थान पर अपना नियंत्रण रखता था, भले ही वह वहाँ उपस्थित न रहे। एस्टेट पर वस्तुओं की खरीद के अवसर उपलब्ध कराने के साथ-साथ वह रोपस्थली के व्यापार तथा सामाजिक जीवन का निरीक्षण कर सकता था तथा मोराडोर्स की वित्तीय स्थिति पर निगरानी रख सकता था, वह बाह्य लोगों के साथ संबंधों पर नियंत्रण कर सकता था और शराबखोरी तथा लड़ाई पर भी रोक लगा सकता था उसने बाजार में कार्यकर्ताओं के साथ अपने संबंध कड़े कर लिए थे तथा उन पर अपनी शक्ति को बलपूर्वक जताया था।

रोपस्थली पर बाजार के अस्तित्व ने मोराडोर्स, मजदूरों अथवा कर्मचारियों को भू-मालिक से स्वायतत्ता प्राप्त करने का अवसर नहीं दिया। लोगों को परस्पर एकत्र करते रहना, समुदाय के लिए उपहार स्वरूप था और इसके एवज में समुदाय को मालिक की निगरानी में रखा जाता था। यद्यपि

उत्तर पूर्वी ब्राजील में रोपस्थली पर बाजार दिवस

यह दृढ़ता से कहा जाता है कि बाजार भू-स्वामी की सीधी देख-रेख में नहीं था, तथापि यह बाजार इस प्रकार संगठित किया गया था कि इसने उन लोगों को बाड़े में फँसा लिया था, जो रोपस्थली में रहते थे, और वे ऐसे क्षेत्र में आ गए जिस पर भू-स्वामी का अधिकार था, उनका मानसिक क्षितिज छोटा हो गया और वे औपचारिक विनियमों को बनाने की आवश्यकता के बिना अथवा रोपस्थली के चारों ओर बाड़ा बनाए बिना औरों से अलग-अलग हो गए थे।

यही स्थिति उस दिन तक वस्तुओं के बारे में रही, जब रोपस्थली के पारम्परिक संबंध अन्ततोगत्वा समाप्त हो गए। 1970 के दशक में जब हम सर्वेक्षण कर रहे थे और इसी सर्वेक्षण पर प्रस्तुत लेख आधारित है तो सेरो-अज़ल बाजार बन्द हो रहा था। अधिकांश मोरोडोर्स ने नगर में बाजार का क्रय-विक्रय कर रहे थे, जहाँ वस्तुएं सस्ती थी और ग्राहकों को सभी प्रकार के लोगों से मिलने-जुलने की छुट थी। बंद-परिवेश को त्यागने लगे थे तथा एकता की ओर अग्रसर हो रहे थे। रोपस्थली के भीतरी भाग से सामाजिक जीवन बाहय भाग की ओर उन्मुख होने लगा था। मालिक और मोराडोर्स के बीच फिर विनिमय का प्रवाह (कार्य, चिकित्सीय सहायता, सुरक्षा) समाप्त हो गया ताकि परस्पर उपहार का विनिमय हो सके तथा यह स्थिति एकता के फलस्वरूप नियोक्ता-कर्मचारी में अधिक उद्देश्यपूर्ण संबंध बन गई। रोपस्थली के मालिक अपने कार्यकर्ताओं से धीरे-धीरे दायित्वों से अलग हटते गए।

सेरो-अज़ल की सीख यह है कि बाजार की संकल्पना, स्वतंत्रता के साथ-साथ बनी नहीं रहती। ■

उत्तर पूर्वी ब्राजील में रोपस्थली पर परित्याग किया हुआ दुकान।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अफ्रीका

सीमा पार व्यापार की परम्परा

— एलिक्स सर्वेस एफ़ाउदा

चाड़ झील का बेसिन सदैव वाणिज्य का ऐसा केंद्र रहा है जिसने राजनीतिक क्षेत्रों से अपनी आँखें मूँद ली थी।

चाड़ झील का बेसिन, सहारा रेगिस्तान, गिनी खड़ी के वन क्षेत्र और मध्य अफ्रीका के पठार के बीच सुदूरवर्ती व्यापार का सदैव केन्द्र रहा है।

उत्तर औपनिवेशिक अफ्रीका में राष्ट्र राज्यों के निर्माण के साथ व्यापारिक कार्यकलाप अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं के साथ केंद्रित हो गए थे तथा क्षेत्रीय व्यापार का केंद्र बिन्दु बन गए थे।

सौदागर इन नगरों में बस गए, परन्तु उन्होंने हौसा, कनूरी, फुलानी, शेवा-अरब और जिन स्थानों से आए थे, वहाँ के लोगों से अपना सम्पर्क बनाए रखा। वे ऐसे नियमों के लोग थे, जो उन दिनों के थे, जब कारवां उस क्षेत्र में आते-जाते थे और उन विनियमों द्वारा प्रशासित होते थे, जो विशेष रूप से धार्मिक दलों के थे।

वे मुख्य रूप से स्थानीय रहन-सहन की वस्तुओं का व्यापार करते थे। इन वस्तुओं में मिलेट (ज्वार, बाजरा और

एलिक्स सर्वेस एफाउदा, बेनिन के निवासी हैं। वह कृषिविज्ञानी तथा भूगोलवेत्ता हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऊपर, नाइजर में नमक ले जाता हुआ एक कारवाँ।

नीचे, दाएं चाड में एक बाजार।

महूआ आदि) सोरघम (चीनी-गन्ना) चावल और कन्द, आयातित चावल, आटा और गेहूँ, पशु, भेड़ और बकरियाँ तथा स्थानीय तौर पर निर्मित वस्तुएँ या अन्य देशों में निर्मित वस्तुएँ सम्मिलित थीं।

उनके अस्थायी प्रकार के कार्यकलापों ने सौदागरों को विदेशी-मुद्रा व्यापारियों, दलालों, मार्गदर्शकों और परिवाहक तथा कर्मचारियों और अन्य बिचौलियों के साथ सम्पर्क बनाए रखने में सहायता की। परन्तु उनके व्यापार की सुदूरवर्ती शाखाएँ तथा दो राज्यों के मध्य सीमा को विस्तृत करने वाले कुछ व्यापारिक केंद्रों की उभयभावी प्रकृति और भ्रष्टाचार तथा तस्करी के अभ्यास के सौदागरों को इस लायक बना दिया कि वे ऐसे व्यापारिक दायरा स्थापित करा सकें, जो राजकीय निरीक्षण की टालमटोल कर सके।

सुदूरवर्ती व्यापार

दो प्रकार के व्यापारिक दायरे होते हैं। स्थानीय रूप से पैदा किया गया फार्म-उत्पाद का व्यापार नियमित अन्तराल में आयोजित नगरों और बाजारों पर आधारित छोटे पैमाने के नेटवर्क में किया जाता है। इस प्रकार का व्यापार राज्य सीमा के किसी भी ओर रहने वाले लोगों को सम्मिलित कर सकता है। स्थानीय उत्पाद अथवा आयातित कृषि तथा नाइजीरिया, केमेरून, नाइजर और चाड को जोड़ने वाले मार्गों के सहारे आयातित कृषि और निर्मित वस्तुओं के अस्थायी व्यापार के सुदूरवर्ती दायरे भी हैं।

इन चारों देशों में व्यापार की मात्रा और प्रकृति आगे दिए गए तीन कारकों से निर्धारित की जाती है।

पारिस्थितिकी अन्तरों के फलस्वरूप पूरक आवश्यकताएँ। मिलेट (ज्वार, बाजरा और महूआ आदि) सोरघम (चीनी-गन्ना) चावल और कंद तथा कोला नाइजर और चाड द्वारा पशु, खालें, चमड़ा, मछली और नैट्रॉन के विनिमय में आयात किए जाते हैं।

प्रत्येक देश की आर्थिक स्थिति अलग-अलग है। चाड बेसिन के देशों की तुलना में नाइजीरिया विशाल केंद्र है। इसके बाद में आकार में केमेरून है और इसके बाद नाइजर तथा चाड हैं, जो उस सहेल को दो भू से घिरे हुए देश हैं, जिसके पास कुछ विकास के संसाधन हैं। नाइजीरिया की आर्थिक शक्ति उसके उद्योगों की विविधता में परिलक्षित है और उसका बृहद उत्पाद तथा उसके निर्यात के संसाधनों का 95 प्रतिशत से अधिक भाग तेल से आता है।

राजनीतिक अन्तर। ये मुख्यतया कृषि नीतियों से सम्बद्ध हैं और इनका संबंध विदेशी व्यापार के नियमन तथा इस क्षेत्र में दो मुद्राओं के प्रयोग (अपरिवर्तनीय नाइजीरिया नैरा और सी एफ ए फ्रॉक जिसकी परिवर्तनीयता की गारंटी बैंक ऑफ फ्रांस द्वारा दी जाती है) से है।

विभिन्न देशों में धोखा-धड़ी के कारण अधिक हानि होने के बावजूद चाड बेसिन में क्षेत्रीय और सीमा पार व्यापार की अधिकता, न्यूनाधिक रूप से कृषि, समानान्तर विनिमय बाजार, परिवहन, हस्तकलाओं और सेवाओं की वृद्धि से प्रोत्साहित हुई है। केवल कृषि कार्य में कुछ क्षेत्रों को अपनी अधिक फसल तथा अन्य वस्तुओं की बिक्री की अनुमति द्वारा उनके जीवन यापन की फसल की कमियों के लिए यह व्यापार क्षेत्रीय खाद्य-पदार्थ की सुरक्षा में एक कारक बन गया है। वह मार्ग, जिसमें खाद्य-पदार्थ सुरक्षा स्टॉक विभिन्न व्यापारिक दायरों द्वारा नियमित किए जाते है, यह दिखाता है कि क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था मजबूत तरीके से समन्वित रही है, चाहे राष्ट्रीय सीमाएं कुछ भी क्यों न बना ली जाएं।

चाड झील बेसिन उप क्षेत्रीय व्यापार के चौराहे पर है जो समस्त नाइजीरिया, केमेरून, नाइजर और चाड तथा अन्य देश यथा केन्द्रीय अफ्रीका गणतंत्र को संभरित करता है। इसकी वाणिज्यिक गतिशीलता ऐसी है कि वस्तुतः एक प्रकार का समन्वयन स्थानीय लोगों द्वारा किया जाता है चाहे राज्य कुछ भी क्यों न चाहे। ■

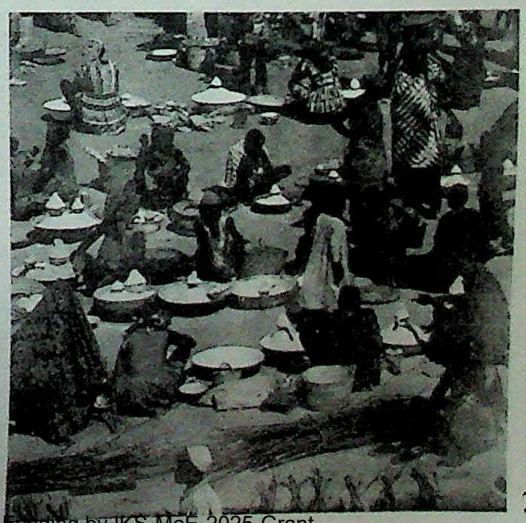

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फ्रांस

कारपेंट्रास में शुक्रवार

एक मानव जाति विज्ञानी यह बताता है कि फ्रांसीसी प्रान्तीय नगर में बाजार के दिन क्या होता है।

—माइकेल द ला प्रेदेल्ले

कारपेंट्रास में शुक्रवार, बाजार का दिन होता है। प्रातः सात बजे तक दक्षिण पूर्व फ्रांस में इस पुराने नगर का केन्द्र, कभी परकोटे से घिरा होता था और आज घुमावदार गलियों तथा सुन्दर स्केवयर हैं। यह क्षेत्र पहले ही से जीवतता से भरपूर है, क्योंकि यहाँ लगभग 350 भ्रमणशील व्यापारियों ने अपने-अपने स्टॉल स्थापित कर लिए हैं और स्थानीय व्यापारी अपनी दुकानों के सामने पटरी पर बर्तन सजाते हैं। मोटर गाड़ियों का आना-जाना वर्जित है तथा पैदल चलने वालों की भीड, धक्के देकर और खाकर अपना मार्ग प्रशस्त करती है। खाद्य पदार्थों, सुगन्धियों और रंगों जैसी विविध वस्तुओं के नाम लेकर फेरी वाले चिल्लाते हैं ताकि भीड़ के लोग उन्हें सुन सकें।

कारपेंट्रास के बाजार में लोग केवल आर्थिक कारणों से नहीं पहुँचते, अपितु कीमतों और बर्तनों के आकर्षण से पहुँचते हैं, क्योंकि वहाँ भी स्थानीय उच्च बाजारों की वस्तुएँ उपलब्ध हो जाती हैं। यह बाजार नगर के उत्तरी भागों से आए उत्तरी अफ्रीकी प्रवासियों, समीपवर्ती देहाती क्षेत्रों के लोगों और ग्रीष्म-ऋतु में आने वाले पर्यटकों तथा उन पेरीशियन के लिए कुठाली जैसा होता है, जिनके इस क्षेत्र में अपने घर हैं। जैसे ही वे बाजार के दिन नगर में से गुजरते हैं, लोग पास-पड़ोस घूमा करते हैं, जहाँ शायद वे अन्यथा जाने का साहस न करते।

कुछ घंटों के लिए बाजार उन सामाजिक दलों को एक दूसरे को समीप लाता है, जिनके सदस्य आमतौर पर परस्पर बातचीत नहीं करते, क्योंकि वे नगर के विभिन्न भागों में रहते हैं तथा जीवन की विभिन्न शैलियाँ और सांस्कृतिक मूल्य रखते हैं। बाजार के व्यापारी इस भेंट में मुख्य भूमिका निभाते हैं।

वे जो कुछ भी करते हैं उसकी अभिकल्पना बिक्री के एक घटना के रूप में रूपान्तरित करने की होती है। एक ग्राहक के लिए असंभव है कि तत्काल ही खरीद की जाए, अतः वह विनीत भाव से बाजार से हट जाता है। व्यापारी ऊँची आवाज में गा-गाकर अपनी वस्तुओं के बारे में बताता है तथा ऊँची आवाज में अपनी वस्तुओं की गुणवत्ता का बखान करता है। पूर्ववत ग्राहक और व्यापारी के संबंध को निरर्थक बनाता है और विचारों के आदान-प्रदान की ऐसी स्थिति पैदा करता है

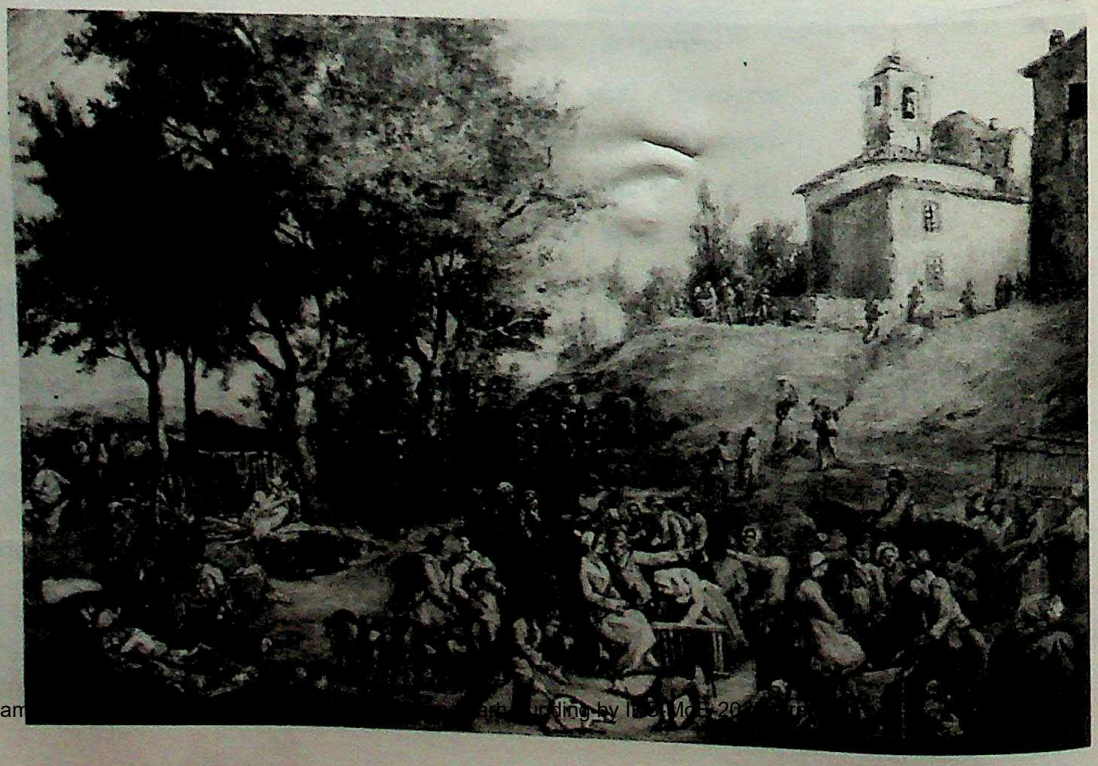

कारपेंट्रास का सूअर बाजार (1841) डेनिस ओनेट द्वारा निर्मित जल चित्र।

माइकेल द ला प्रेडेल्ले फ्रेंच मानव जाति विज्ञानी है।

CC-0 Agam

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

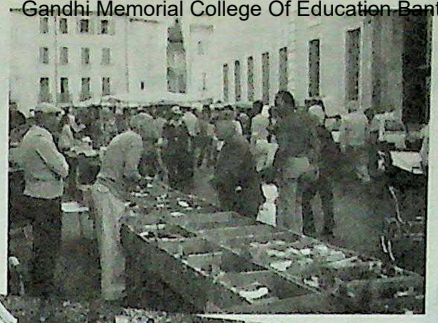

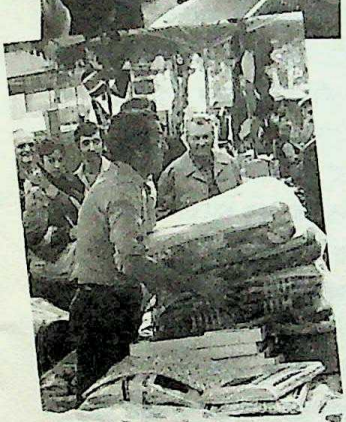

"बाजार, सामाजिक दलों को परस्पर मिलाता है, जिनके सदस्य साधारणतया आपस में बातचीत नहीं करते।"
ऊपर : कारपेंट्रास में बाजार-दृश्य।

जिसमें स्टॉल के चारों ओर प्रत्येक व्यक्ति भाग लेने के लिए स्वतंत्र है।

ग्राहकों के इस कार्य में सम्मिलित होने के लिए अनुबोधित करने की कोई आवश्यकता नहीं होती। सुअर के गोश्त के कसाई के बैन (गाड़ी) अथवा मछली की दुकान पर खड़े होकर अथवा भीड़ में से होकर निकलने के समय आप स्वयं सभी प्रकार के लोगों के संपर्क में आते हैं तथा बाजार के संबंध बनाते हैं जो आपके दैनिक जीवन में से कहीं अलग होते हैं, चाहे वह निजी हो अथवा बातचीत करने के लिए कोई भी बहाना प्रयोग किया जा सकता है : मौसम के बारे में समीक्षा (वह उस समय की जाती है, जब कुछ वर्षा होती है) संधिवात के लक्षण, बज्रांगी की गुणवत्ता, समय कैसे बीतता है आदि।

इस प्रकार की स्थिति में लोग और बोलने के लिए ही बोलते हैं तथा वार्तालाप के चलते रहने के लिए ही बोलते रहते हैं। चाल प्रारम्भ करने के बाद आप स्वयं छद्म विश्वास पैदा करते हैं। आप किसी को भी अपना पुराना मित्र मान लेते हैं, चाहे आपने उससे मात्र पाँच मिनट ही बात क्यों न की हो। आप आम बातों को अपनाते हैं और अपनी वास्तविक स्थिति के बारे में मौन रखते हैं, जो उस व्यक्ति की स्थिति से बिलकुल ही भिन्न रहती है जिससे आप बात करते हैं। आप उन विषयों यथा अपने बच्चों की शिक्षा, अपने उद्यान और अपने घर के काम के बारे में बातचीत नहीं करते।

स्थानीय रंग

यह सामाजिक, स्थानीय आम समझ का परिणाम है जब आप कारपेंट्रास के बाजार में जाते हैं तो आप सामुहिक पहचान की पुष्टि करते हैं अथवा उसका दावा करते हैं। बाजार नगर की संस्थाओं में से एक है, जहाँ आप मुलेट अथवा जैतून का तेल खरीदते हैं और अपनी स्थिति को सिद्ध करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं तथा दूसरों को यह दिखाते हैं कि आप स्थानीय व्यक्ति हैं—चाहे वास्तव में आप हों या न हों। यदि आप फ्रांस में कुछ अन्य प्रकार का व्यक्ति बनना चाहते हैं तो आपको "कहीं" से आना होगा। यदि आप ऐसी टिप्पणी करते हैं कि आपका बाजार से परिचय है—यदि आप कसाई से यह पूछते हैं कि वह अब किसी प्रकार का पेत तैयार करता है तो लोग आपके बारे में यह समझेंगे कि आप नियमित रूप से उसी स्थान के हैं। पेरिशियन के लिए, जो उस क्षेत्र में अपनी सम्पत्ति रखते हैं, बाजार एक ऐसा मौका है, जिसके द्वारा आप अपने स्थानीय संबंध बढ़ा सकते हैं।

यह सामाजिकता ऐसे बाजार की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से अलग नहीं की जा सकती, जो उसी स्थान पर उसी दिन बनी हो, जब वह अतीत के उसी दिन उसी स्थान के बारे में याद कर सकता है। आपकी बकरी के दूध की पनीर और जूते के फीते खरीदने का मुख्य तथ्य प्लेस टू (14वीं शताब्दी में एवैगनोन पोप के आवास गृह) में प्रतीक व्यंजना होती है। परन्तु यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि कारपेंट्राज बाजार का पारम्परिक चरित्र आज वास्तविक की अपेक्षा अधिक सतही रूप से दिखाई देता है। इस बाजार में यात्री, छोटे दुकानदार विश्व की उन पुरानी बातों की याद दिलाते हैं जो लुप्त हो चुकी हैं। यदि आप सावधान नहीं है, तो आलुओं पर मिट्टी और मूलियों से छलकने वाला जल आपको यह विचार करने पर बाध्य कर देगा कि फेरीवाले दुकानदार ने अपने ही बाग में सुबह होते कुछ घंटे पूर्व उन्हें उखाड़ा है।

अतीत का स्वाद

नगरपालिका के प्राधिकारी, ग्राहक और फेरीवाले दुकानदार, बाजार में ऐसा वातावरण पुनर्जीवित करने का भी प्रयास करते हैं जैसा कि अतीत में था। बर्तनों को वर्गानुसार अलग-अलग किया जाता है जैसा कि उस समय का जब बाजार थोक बाजार के रूप में था और अनाज के बाजार में विभाजित था उस समय लहसुन का बाजार, शहतूत की पत्ती का बाजार और अन्य छोटी-छोटी व्यापारिक चौकियां थीं, जहां क्षेत्र के शिल्प तथा फार्म के उत्पाद बेचे जाते थे।

इस पुरानी व्यवस्था के उत्तरजीवी चिह्न हैं कवक बाजार, जो फ्रांस में सबसे बड़ा बाजार है। इस बाजार में कवक दलाल और संरक्षण करने वाले लोग आते हैं तथा इस बाजार में "रैंवेज़ियर्स" आते हैं। ये स्थानीय व्यक्ति होते हैं जो अपने फालतू समय में कारपेंट्राज़ के चारों ओर पहाड़ियों में अपने कुत्तों के साथ घूमते-फिरते हैं। यह एक प्रकार का गुप्त उत्सव होता है और मुख्य बाजार का लघु प्रदर्शन होता है परन्तु यह कारपेंट्राज़ बाजार को प्रामाणिकता प्रदान करता है।

एक सप्ताह कम से कम कुछ घंटे तक कारपेंट्राज़ के नागरिक उस भावना का आनंद उठाते हैं कि वे पुराने विशिष्ट बाजार में क्रय-विक्रय कर रहे हैं। सहभागी पहचान के नाम पर और छद्म नाम पर वे सामान्य रूप से ऐसी मित्रता का लाभ उठा सकते हैं जो आनंदप्रद तथा कल्पनाप्रद, दोनों ही होती हैं। कुछ ऐसी भावना "फिलिया" (मैत्री-भावना) में होती है जिसे अरस्तु ने राजनीतिक समुदाय का आवश्यक घटक समझा था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उलझन भरा संक्रमण

रूसी लोकमत की आर्थिक सुधार के बारे में मिश्रित भावनाएँ हैं

—यूरी लेवेदा

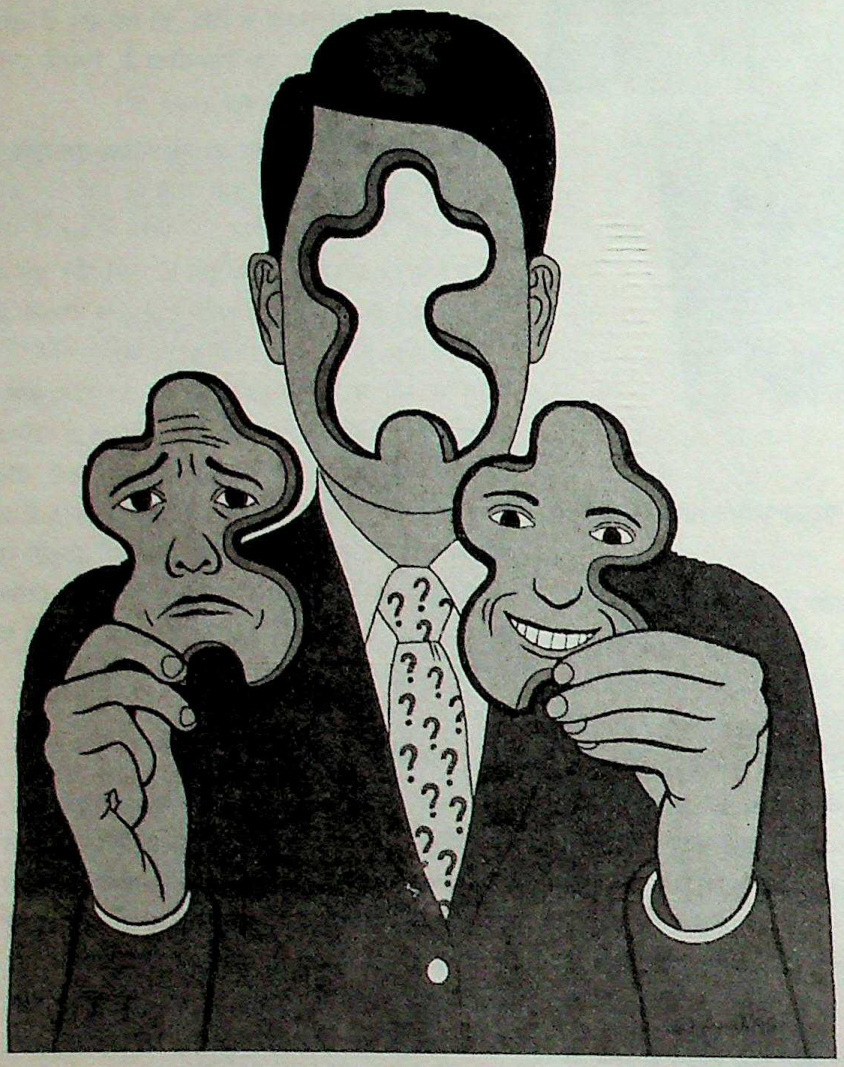

सोवियत संघ में नियोजित अर्थव्यवस्था के भंग हो जाने के बाद कठिन आर्थिक वातावरण में सुधार किए गए, जिनके बारे में लोगों की मिश्रित भावना रही। अधिकांश व्यक्तियों को आर्थिक आपदा से भय उत्पन्न हुआ और बड़े पैमाने पर सार्वजनिक असंतोष प्राप्त हो गया। सर्वेक्षण से यह पता चलता है कि 1992 के प्रारम्भ में उच्च शिखर पर बैठी जनता के बीच भविष्य के बारे में चिंता उत्पन्न हुई।

इसी समय अधिकांश व्यक्तियों को यह विश्वास करने में भ्रम पैदा हुआ कि अर्थव्यवस्था का निजीकरण सरलता से प्राप्त किया जा सकता था और देश को तीव्र गति से विकसित किया जा सकता था। सोवियत संघ के अधिकांश निवासियों की यह मान्यता नहीं थी कि बाजार तंत्र और वित्तीय संरचना वास्तव में किस प्रकार कार्य करती है। सम्पत्ति के अधिकार का किस प्रकार प्रयोग किया जाना चाहिए, किस प्रकार पूँजी एकत्र की जानी चाहिए तथा किस प्रकार बचत की जानी चाहिए। इसके अलावा राज्य में राजनीतिक स्थिति और शक्ति के संतुलन ने यह असंभव कर दिया कि योजना के अनुसार सुधार किस प्रकार किए जाएं। परिवर्तन धीरे-धीरे और उलझनभरे रूप में किए गए, उन्होंने अधिकांश लोगों को हानि पहुँचाई। बाजार की अर्थव्यवस्था द्वारा उत्पन्न प्रारम्भिक उत्साह और निराशा से पूर्व कई वर्ष इस बात में बीत गए कि नई परिस्थितियों में सामंजस्य स्थापित करने के लिए अधिक स्पष्ट मूल्यांकन और दृढ़ धारणा उत्पन्न की।

गत कुछ वर्षो मे लोकमत में आवश्यकता के लिए मतभेद रहा है कि बाजार की अर्थव्यवस्था की ओर उन्मुख आर्थिक सुधारों को कैसे किया जाए। पृष्ठ 28 में दी गई तालिका में यह बताया गया है कि लगभग आधी जनता का इस बारे में कोई मत नहीं था कि सुधारों को आगे बढ़ाया जाए अथवा आगे न बढ़ाया जाए। इन सुधारों के मुख्य समर्थक शहरों में रहने वाले समाज के सबसे युवा और शिक्षित लोग हैं। ऐसे भी लोग हैं जिन्हें सुधार के अधिक अवसर प्रदान हुए हैं ताकि वे अधिगम का अधिक उपयोग कर सके और जो अपने भावी परिवर्तनों के लिए अधिक विश्वस्त रहे हैं। सुधार के लिए सबसे दृढ़ विपक्षी लगातार पाँच वर्ष से अधिक आयु वाले हैं, उनमें सेवा निवृत्त लोग तथा ग्रामीण हैं। अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि उन्होंने बाजार की अर्थव्यवस्था के संक्रमण में जितना लाभ उठाया था, उससे कहीं अधिक खो दिया है।

सबसे धनवान और विशेषकर नवीन शैली के "व्यापारी" और "प्रबंधक" स्वाभाविक रूप से बाजार की अर्थव्यवस्था का स्वागत करते हैं। सबसे अधिक आय वाले लोगों में 48% लोग सतत सुधारों के पक्ष में हैं जब कि 17% लोग विपक्ष में हैं और सबसे कम आय के ग्रुप में केवल 20% इसके पक्ष में है और 35 %इसके विपक्ष में हैं। फिर भी उन लोगों का सबसे अधिक मत है जिन्होंने विश्वविद्यालय अथवा विशेषज्ञतापूर्व शिक्षा प्राप्त की है और वे सुधारों को लागू रखना चाहते हैं, जब कि इनमें से अधिकांश लोगों ने अपने रहन-सहन के स्तर में कमी महसूस की है। यह कमी सुधार प्रारम्भ करने से आई है क्योंकि उच्च शिक्षा, विज्ञान और औद्योगिक अनुसंधान में संघर्ष व्याप्त है। इसके बावजूद वे इस बात से आशावान हैं कि सुधार होते रहेंगे।

यूरी लेवेदा
रूस के अर्थशास्त्री और समाज विज्ञानी हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निजीकरण कितना उचित है?

1995 में की गई मतगणना से लोकमत द्वारा उपलब्ध आंकड़ों को परखा जाए तो जनसंख्या का 42% भाग राज्य योजना और वितरण "अधिक उचित" के रूप में आधारित "आर्थिक पद्धति" को ठीक समझता है जबकि 37% भाग ऐसी पद्धति के पक्ष में है जो निजी सम्पत्ति और बाजार की शक्तियों पर आधारित है। शेष भाग लोग कुछ जानते ही नहीं (लगभग 9,600 लोगों ने मतदान किया)। वयोवृद्ध लोगों के मत नियोजित पद्धति के पक्ष में संतुलन पर जोर देता है।

आज रूस के 26% नागरिक यह विश्वास करते हैं कि उनके अधिकांश साथी नागरिकों ने उन परिवर्तनों के साथ समझौता कर लिया है, जो इस दौरान हुए हैं, 29% लोग यह विचार करते हैं कि वे कल्कट भविष्य में समझौता करने योग्य हो जाएंगे और 32% लोग यह विचार करते हैं कि वे कभी भी कुछ न कुछ कर सकेंगे। शेष 13% लोगों ने कोई निश्चित उत्तर नहीं दिया। स्थिति चाहे कुछ भी क्यों न हो, अधिक पढ़े-लिखे युवा लोग और सबसे सक्रिय लोग नई परिस्थितियों के साथ समझौता करने के लिए तैयार हैं।

जो लोग परिवर्तनो के साथ समझौता करना सबसे अधिक कठिन समझते है, अपने जीवन के पारम्परिक रूप को बदलने में कठिनाई महसूस करते हैं। इन लोगों में मुख्यतया ऐसे लोग हैं जो रूसी गांवों तथा छोटे नगरों में रहते हैं और जो कुल जनसंख्या के लगभग दो तिहाई है। खेती करने वाले सेक्टर के आधुनिकीकरण में बृहद् निवेश निहित है और आज कोई भी ऐसी स्थिति में नहीं है कि इतना निवेश कर सके। अत: बाजार की अर्थव्यवस्था के सेक्टर पर चलने वाले सुधार पर्याप्त कठिनाई से चल रहे हैं। वे अज्ञानता की ओर उन्मुख हैं तथा ग्रामीण जनता के अधिकांश भाग के विपक्षी भी हैं। यही कारण है कि निजी भूमि-स्वामित्व, जिसमें लोकतांत्रिक और सुधारक विधि की प्रतिष्ठा खोज रहें है, को नगर में रहने वालों की सहायता प्राप्त है, परन्तु अधिकांश ग्रामीण जनता उसका विरोध करती है।

अधिकांश जनता, इसके साथ ही साथ कम्पनियों, बैंकों और अन्य कार्यकलापों के निजीकरण को अतिसाधारण समझती हैं। धनी मालिकों के विरुद्ध पक्षपात उतना व्यापक नहीं है जितना कुछ वर्ष पूर्व था। फिर भी, अधिकांश लोग यह महसूस करते हैं कि सबसे बड़ी कम्पनियों और ऊर्जा का एकाधिकार राज्य के हाथों में रहना चाहिए। सबसे बड़ा विरोध विदेशियों की भूमि और बड़ी कम्पनियों के अधिकार के प्रति किया जाता है। अधिकांश व्यक्तियों को अभी भी भय है कि विदेशी पूँजीपति देश के धन का विनियोग करना चाहते हैं।

यह सच है कि बाजार की अर्थव्यवस्था के साथ रूसी लोगों का सम्बन्ध इस बात से कहीं दूर है कि मतदान में लोकमत द्वारा व्यक्त वैयक्तिक मत और प्रवृत्तियाँ होती है। वे सभी व्यक्ति, जो इस स्थिति के चलते रहने का अनुभव कर रहे हैं, नवीन आर्थिक स्थिति की ओर अति वास्तविक परिवर्तन के कारण उनको लगातार अपनी स्थिति

मास्को की गलियो में फेरी लगाने वाले।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial Collection. Digitized by Sarayu Trust. Eka Kolkata Foundation

को परिभाषित और मूल्यांकित करना पड़ रहा है। यहाँ हम इस जटिल स्थिति के मुख्य लक्षणों में कुछ पर दृष्टिपात करें।

संक्रमण से निपटना

रूस में कार्यशील जनता के एक-तिहाई लोग इस समय निजी सेक्टर और एक-छठवाँ भाग राज्य के अधिकार में ज्वाइंट स्टॉक कम्पनियों द्वारा काम पर लगाए जाते हैं। परन्तु सार्वजनिक निकायों और उद्यमों द्वारा काम पर लगाए गए लोगों के 50 प्रतिशत लोग पहले से ही बाजार अर्थव्यवस्था वातावरण में रह रहे हैं तथा उन्हें इन नियमों का ध्यान रखना पड़ता है।

बाजार की अर्थव्यवस्था ने लगभग सर्वत्र उस उपभोक्ता वस्तुओं के अभाव को समाप्त कर दिया है, जो नियोजित वितरण पद्धति का आवश्यक लक्षण था। मुख्य वस्तुओं का अभाव, समस्याओं की सूची में सर्वोपरि रहा। इन समस्याओं ने 1990 के दशक में जनता को सबसे अधिक चिंतित किया। आज लोगों का सबसे कम प्रतिशत (मई 1996 में 2,400 साक्षात्कार का 7 प्रतिशत) इस प्रकार के अभावों का उल्लेख करता है जो अब ऐसी सूची के लगभग अंत में है और जिन्हें सबसे विशिष्ट समस्याएँ माना जाता है आज सबसे गंभीर समस्याएं "बाजार अर्थव्यवस्था का संक्रमण" से उत्पन्न क्रियाएं समझी जाती हैं यथा मूल्य में वृद्धि (68%), अपराध

बाजार अर्थव्यवस्था को प्रोन्नत करने हेतु सुधारों को जारी करने के लिए अभिमत

	मार्च 92	मार्च 93	अप्रैल 94	मार्च 95	मार्च 96
जारी सुधारों के लिए	47	42	32	27	31
जारी सुधारों के विरुद्ध	27	20	28	30	26
पता नहीं	26	38	40	43	44

(59%), बेरोजगारी (55%), और गिरता हुआ उत्पाद (55%) हैं। जनसंख्या के लगभग (50%) लोग यह महसूस करते हैं कि जीवन की गुणवत्ता अब इतनी उच्च नहीं है, जैसा कि 5 वर्ष पूर्व थी।

आज रूस की सीमाएं लोगों, वस्तुओं, सूचना और (कुछ कम मात्रा में) राजधानी के परिचालन के लिए खोले गए हैं। यह स्थिति विरोधों में भरपूर है, परन्तु इससे रूस की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण संक्रमण की महत्वपूर्ण अवस्था का पता चलता है तथा बाजार की अर्थव्यवस्था की ओर समाज का ज्ञान होता है। अधिकांश रूस के लोग इन नए अवसरों के पक्ष में होते हैं और उनमें से 10 प्रतिशत लोग व्यापारिक यात्राओ में अपनी स्वतंत्रता का लाभ उठाते हैं अथवा पूर्व सोवियत संघ की सीमाओ के बाहर छुट्टियो का आनन्द उठाते हैं। इसी समय बाहय विश्व के साथ सम्पर्क बनाए रखने के नकारात्मक पक्षों के बारे में जनसंचार माध्यम में लोकमत बहुत निकट से अनवरत बहस का मार्ग अपनाता है। इनमें उपभोक्ता वस्तुओं का महत्व, संगठित अपराध का अंतर्राष्ट्रीयकरण और नगर सेवा संबंधी भ्रष्टाचार सम्मिलित है।

अधिकांश मतदाताओं ने, जिन्होंने इस वर्ष राष्ट्रपति चुनावोंमें भाग लिया और जीतने वाले उम्मीदवार बोरिस येलत्सिन का समर्थन किया, सुधारों की उपलब्धियों को बनाए रखने के पक्ष में अतीत की ओर लौटने के विपक्ष में मत प्रकट किया। लगभग 80 प्रतिशत वे व्यक्ति हैं जिन्होंने येलत्सिन के पक्ष में मत किए। वे यह विश्वास करते हैं कि अधिकांश व्यक्तियों ने, जिनका संबंध सुधारों से हैं, पहले ही समायोजन कर लिया है, अपना निकट भविष्य में समायोजित हो जाएंगे, तथा 13 प्रतिशत लोग यह मानते हैं कि ऐसा नहीं होगा। इसके विपरीत उनमें से केवल 35 प्रतिशत व्यक्ति, जिन्होंने असफल कम्यूनिस्ट उम्मीदवार के लिए अपना मत दिया, यह मानते हैं कि लोग इन परिवर्तनों के साथ समायोजन करेंगे जबकि उन्हीं से 49 प्रतिशत लोगों का विश्वास है कि यह असंभव है। तत्पश्चात, सुधारों के लिए प्रतिक्रियाएँ, कुल मिलाकर समान के प्रतिबिम्ब के परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट रूप से व्यक्त होगी। ■

मास्को में जीयूएक बाजार आर्केड।

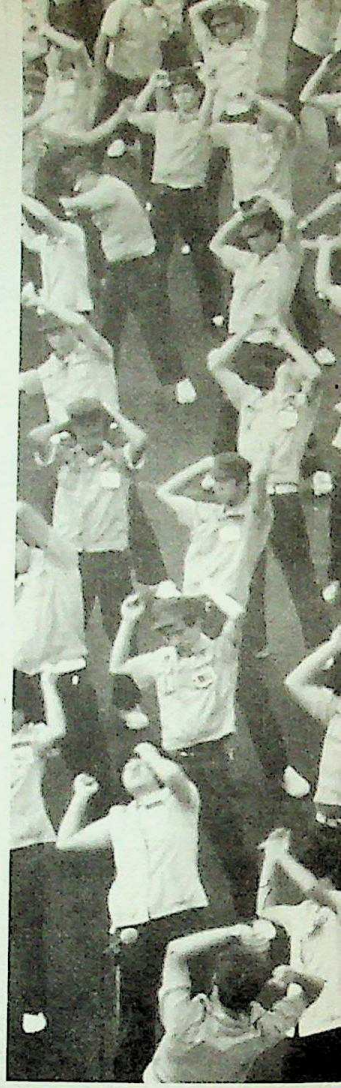

कैगोशिमा में, जो जापान के दक्षिण पश्चिम में है, मिट्टी के बर्तनों की फैक्टरी के कामगार कर्मचारियों की साप्ताहिक बैठक में जमनास्टिक करते हुए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

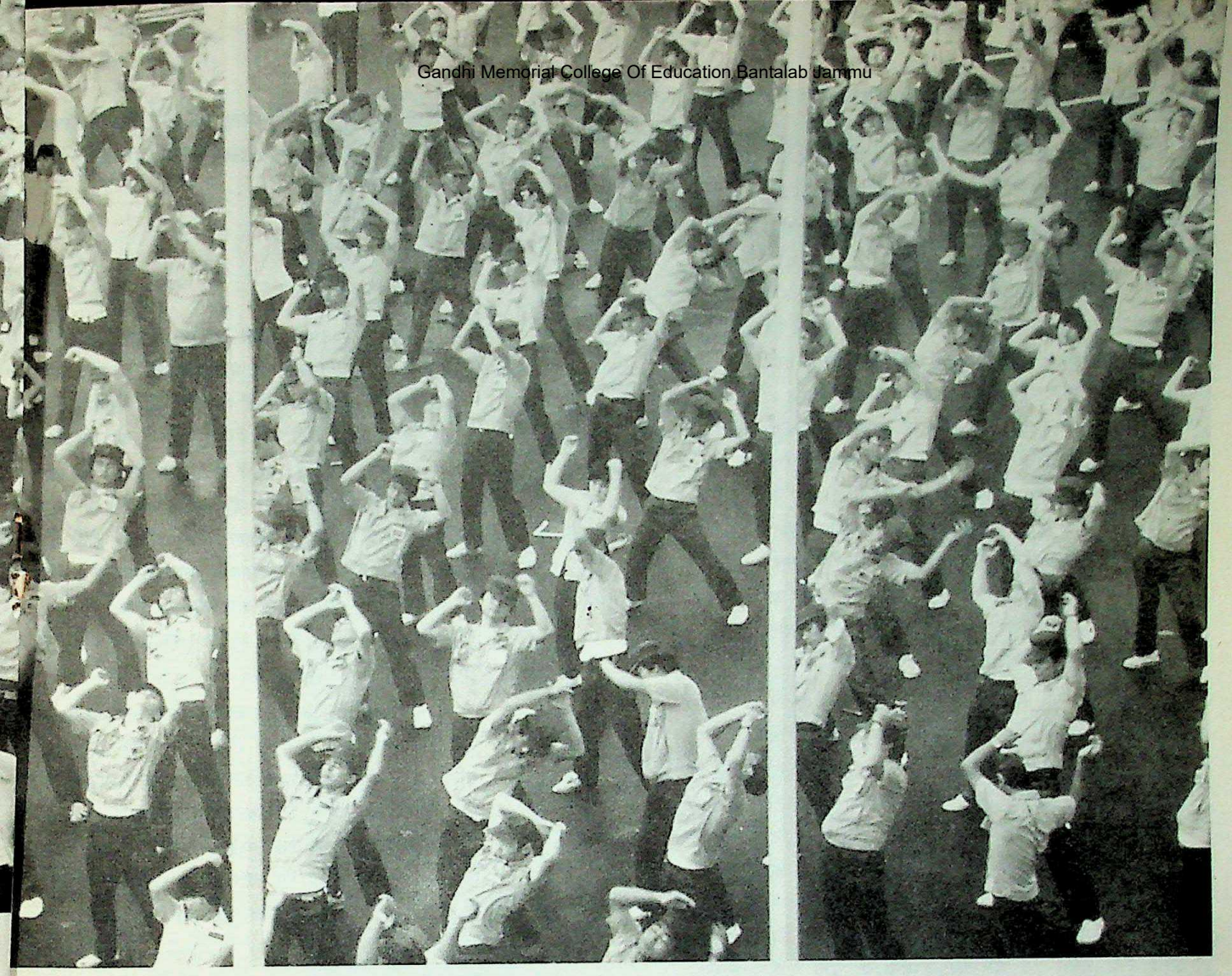

जापान

कम्पनी पूँजीवाद

—हिरोशी ओकुमुरा

क्या जापान की अर्थव्यवस्था संक्रांतिकाल की है?

कम्पनियाँ, जापान के बाजार की अर्थव्यवस्था में मुख्यप्रतिभागी हैं तथा उन्हें अपने ही क्षेत्र में विधि सम्मत इकाई समझा जाता है। बड़े-बड़े व्यापार में मुख्य भागीदार अलग-अलग व्यक्ति नहीं होते परन्तु अंत: आश्रित कम्पनियाँ एक दूसरे की आर-पार की सीमाओं के साथ होती हैं। मैं इस पद्धति को "कम्पनी पूँजी" कहता हूँ।

व्यक्ति, कम्पनियाँ और राज्य, बाजार अर्थव्यवस्था के तीन मुख्य अंग होते हैं। बाजार के अध्ययन के लिए कम्पनियों और व्यक्तियों, स्वयं कम्पनियों और कम्पनियों तथा राज्य के मध्य, सम्बन्धों का विश्लेषण किया जाता है। जापानी कम्पनी पूँजीवाद का एक लक्षण यह है कि कम्पनियों के बीच व्यापार की मात्रा, कम्पनियों और व्यक्तियों के बीच की मात्रा से अथवा कम्पनियों और राज्य की मात्रा से कहीं अधिक है। वह जापानी कम्पनियों के पूँजीवाद के लक्षणों में से एक लक्षण है।

उन निर्मित वस्तुओं के लिए बाजार पर, जिनका आधिपत्य होता है जैसा कि अमरीका और यूरोप में है और यह आधिपत्य बड़े निगमों, कीमतों, गुणवत्ता और सेवाओं की अल्प विक्रेताधिकार, कम्पनियों द्वारा व्यक्तियों पर आरोपित किए जाते है—स्पष्ट तथा समान आधार नहीं होते।

अनेक उत्पाद (सुप्रसिध्द मोटरगाड़ियाँ और बिजली के सामान के सेक्टर) की रेत्सू पद्धति (कीरेत्सू कम्पनियों के उर्ध्वाधर समवेत दल होते हैं) के अनुसार विभाजित किए जाते हैं। निर्माता थोक विक्रेताओं और खुदरा विक्रेताओं के साथ कीरेत्सू बनाते हैं। वे आर्डर देते हैं और कीमतें निर्धारित करते है। बड़े-बड़े खुदरा विक्रेता यथा सुपर मार्केट बहुत कम कीमतों पर सामान लेकर इस प्रकार के वितरण के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं परन्तु साथ ही निर्माताओं के साथ अच्छा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संपर्क बनाए रखते हैं।

कम्पनी की व्यक्ति पर वरीयता रोजगार बाजार पर सबसे अधिक स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। जापान प्रबंध के स्पष्ट लक्षण "जीवनयापन के लिए रोजगार सेवा काल पर आधारित मजदूरी और कम्पनी संघ" हैं परन्तु चूँकि व्यापार और व्यक्तियों के बीच संबंध एक समान नहीं होते इसलिए जीवन-पद्धति के लिए रोजगार का अर्थ यह है कि व्यक्ति कम्पनी द्वारा आत्मसात कर लेता है। भर्ती के प्रश्न को ही ले। प्रतिवर्ष पहली अप्रैल को सभी कम्पनियाँ एक ही समय पर नए ग्रेजुएट लेती हैं और उन्हें आंतरिक प्रशिक्षण दिया जाता है। तथा उन्हें कम्पनी की संस्कृति सिखाई जाती है। भर्ती किए गए प्रत्येक व्यक्ति को एक पद दिया जाता है। फिर वह कम्पनी में अपने स्टाफ की बारी के अनुसार जगह-जगह काम करता है। भर्ती किए जाने वाले व्यक्ति "रोजगार" की अपेक्षा कम्पनी प्राप्त करते हैं। इस संदर्भ में बाजार का तंत्र काम नहीं करता और रोजगार बाजार अस्तित्वहीन होता है। कम्पनी ताल-मेल बनाए रखना चाहती है।

सैद्धांतिक रूप से संघ, कम्पनी के समतुल्य भार के अनुसार कार्य करते हैं। परन्तु जापान में संघ, कम्पनियों के भीतर ही संगठित होते है और वे व्यापारों अथवा शाखा द्वारा दलबध्द नहीं किए जा सकते। अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि वे विपक्ष की मजबूत शक्ति के रूप में नहीं होते और वास्तव में कम्पनियां ही अपने स्टाफ और अन्य नीतियों के कार्यान्वयन के लिए संघों का उपयोग करती हैं। कम्पनी पूँजीवाद का आधारभूत सिद्धांत यह है कि कम्पनी को सर्वोपरि रखा जाता है। कर्मचारी कम्पनी के प्रति पूर्ण निष्ठावान होते हैं और कम्पनी से बाहर व्यापारिक मुखिया, परन्तु सम्बध्द होने के नाते कम्पनी के नियंत्रण में होते हैं।

प्रत्यक्ष लेन-देन व्यापारों के बीच सबसे आम रूप होते हैं। कम्पनी अनेक सशक्त भागीदारों में से अपना व्यापार का साझेदार चुनती है और उसके बाद व्यापार की शर्तें निर्धारित की जाती हैं। यह पद्धति व्यापारों के बीच परोक्ष रूप से प्रतिस्पर्धा उत्पन्न करती है। परन्तु यह नहीं कहा जा सकता है कि बाजार का तंत्र उसमें पूर्णतया कार्य नहीं करता है।

सम्बध्द संस्थाओं के प्रबंधक कम्पनी के क्योतो मुख्यालय में अपनी जनक कम्पनी में मिला करते हैं।

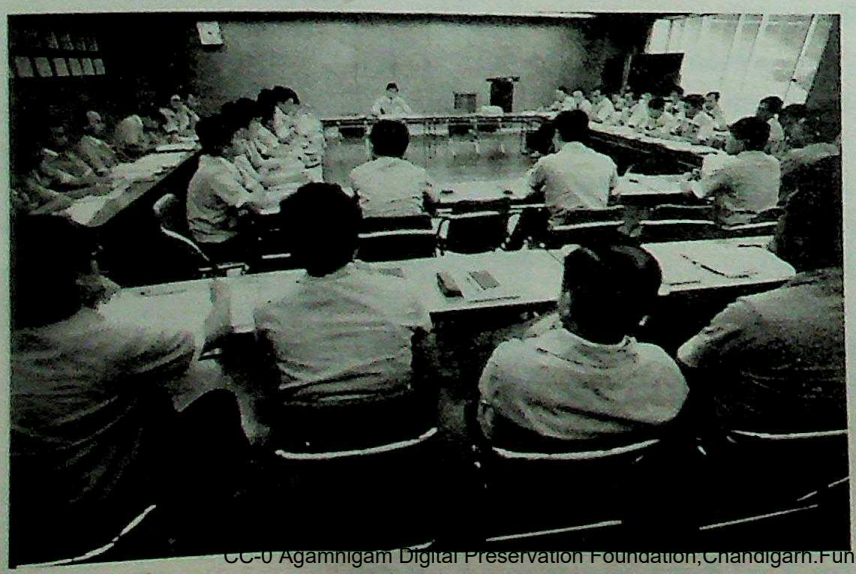

बड़े व्यापार और बैंक

इन प्रत्यक्ष लेन-देन में अपने साझीदार चुनने के लिए कम्पनियां दो मुख्य प्रकार के एसोशिएशनों में भाग लेती हैं: कीरेत्सू (सम्बध्द कम्पनियों के दल) और सपिंडी (बड़े भौगोलिक दल)। सपिंडी बड़े निगम होते हैं जो ऊर्ध्वाधर रूप से सम्बध्द होते हैं। इनमें से प्रत्येक निगम के साथ अनेक सम्बध्द कम्पनियां होती हैं। प्रत्येक सपिंडी के भीतर कम्पनियां क्रास होल्डिंग्स द्वारा परस्पर निर्भर होती हैं। मुख्य कम्पनियों के प्रबंध-निदेशक के क्लब नियमित रूप से बैठकें करते हैं। संपिंडी के भी कम्पनियों के बीच सोगो शोशा (व्यापारिक कम्पनिया) द्वारा समन्वय किया जाता है, जो मुख्य भूमिका अदा करता है।

यद्यपि कीरेस्सू के भीतर व्यापार जनक कम्पनी द्वारा एकाकी निर्णय के फलस्वरूप होता है, तथापि औद्योगिक सपिंडी में परस्पर लेन-देन के आधार पर बड़ी कम्पनियों के मध्य व्यापार किया जाता है। यह पध्दति पूर्णतया बाह्य लोगों को अलग नहीं करती तथा सभी लेन-देन पर लागू नहीं होती। परन्तु तथ्य यह है कि नवीन शास्त्रीय आर्थिक सिध्दांत में वर्णित बाजार अर्थव्यवस्था का तंत्र यहाँ काम नहीं करता।

जापान में लोगों का कहना है, "मुख्य बैंक के बिना व्यापार का अस्तित्व नहीं होता है।" नियम के अनुसार यह बैंक इसके व्यापार के साझीदारों को पूंजी उपलब्ध करने का मुख्य दाता है जिसके लिए वह उत्तरदायी होता है। यदि व्यापार के साझीदार दिवालिए हो जाएं तो बैक उनके ऋणों का उत्तरदायित्व स्वीकार करता है तथा उन बाँडों को प्राप्त कर लेता हैं, जो उसने जारी किए हैं। यह इन व्यापारों के बैंक के शेयर होते हैं इसलिए यह क्रास-होल्डिंग्स पारगामी धारणाधिकारों की पध्दति है।

कीरेस्सू के लिए संपिंडी और प्रमुख बैंक, स्वामीत्व में भागीदार होते हैं और यह कम्पनियों को परस्पर पास लाने का सर्वोत्तम उपाय है। जापान में बैंक और वित्तिय कम्पनियां स्टॉक बाजार में उद्धृत सभी कम्पनियों के 70% शेयर की मालिक होती है। शेयर स्वामित्व न्यास विधि के विपरीत कानून द्वारा लिमिटेड होता है। बैंक, कम्पनी द्वारा जारी किए गए शेयर के पांच प्रतिशत से अधिक शेयर लेने के अधिकारी नहीं होते।

कम्पनियां आपस में शेयरधारक होती हैं ताकि परस्पर लम्बी अवधि तक व्यापार करने के लिए शर्तों का परस्पर नियंत्रण और सृजन कर सके। ("अनिवार्य" व्यापार को बाजार अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों के तहत कार्य करता है।) परन्तु बाह्य कम्पनियों द्वारा शेयर-खरीद के माध्यम से लेने की प्रक्रिया से बंचने का यह उपाय भी है। 1960 के दशक में पूंजी के संचलन के उदारीकरण के बाद जापान की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

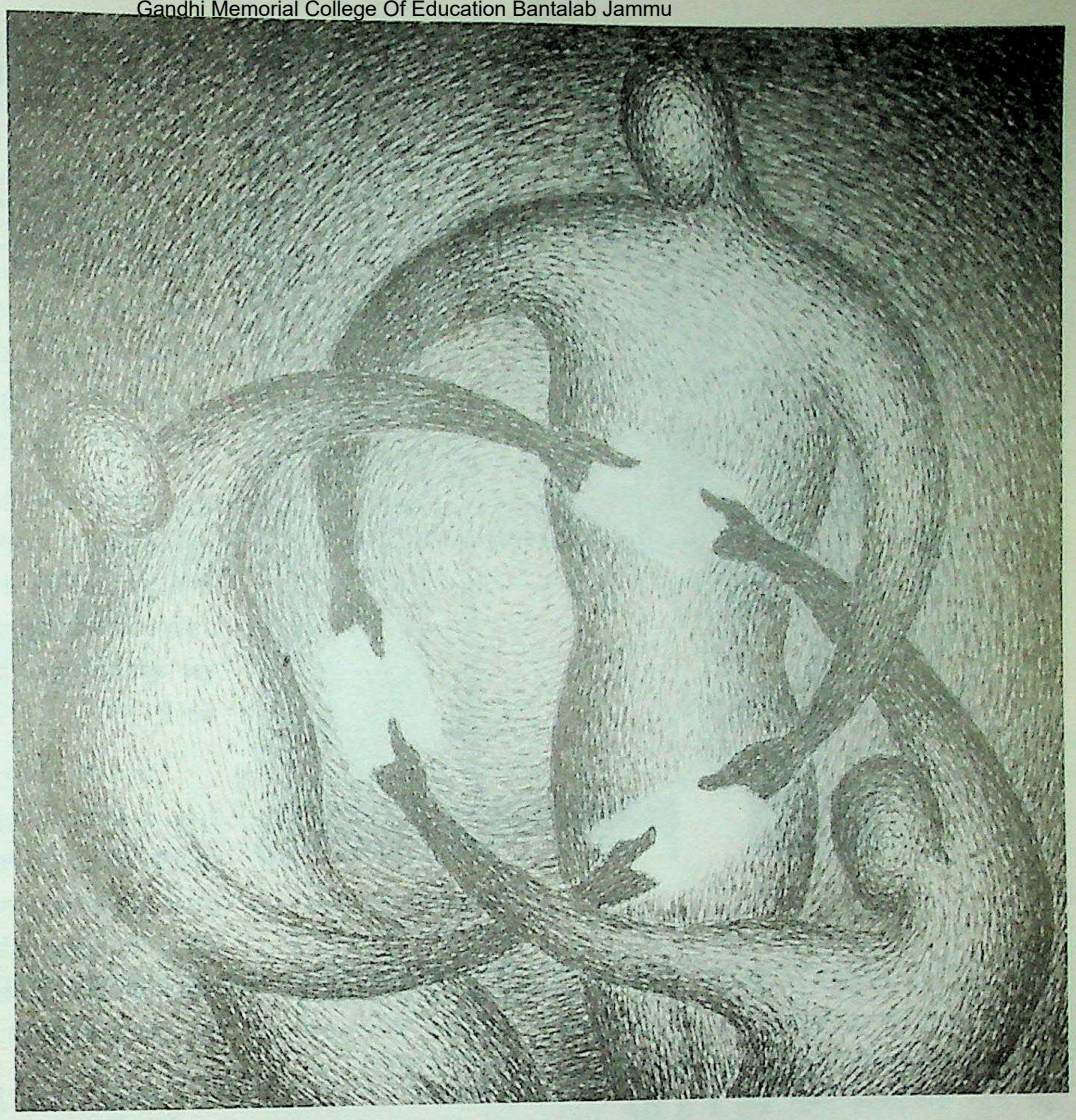

जापान के बारे में यह कहा जाता है कि यह ट्रोइका द्वारा शासित होता है जिसमें राजनीतिक विश्व उच्च सिविल अधिकारी और वित्तीय विश्व शामिल होता है।

बड़ी कम्पनियों ने अपने शेयरधारकों के द्वारा बड़े पैमाने पर स्थायित्व के क्रिया-कलाप संगठित किए ताकि अपनी कम्पनियों को लिए जाने से विदेशी पूंजी से बचा जा सके।

व्यापार और राज्य

इन क्रियाकलापों से कम्पनियों की क्षमता पर कुछ हानिप्रद प्रभाव पड़े और विशेषकर उनका पुन: निर्माण अधिक कठिन हो गया। बैंक और बड़ी-बड़ी कम्पनियां शेयर और भूमि की सट्टेबाजी से अधिक प्रभावित हुई, मुद्रा का "उछाल" दिखाई दिया और यह इतना बढ़ गया कि 1990 के दशक के प्रारम्भिक वर्षों में उस समय नष्ट हो गया जब शेयर और भूमि की कीमतों में एकाएक गिरावट आ गई। फिर जापान के कम्पनी पूँजीवाद का पतन प्रारम्भ हो गया।

यह कहा जाता है कि जापान ट्रायका द्वारा शासित होता है जो राजनीतिक विश्व का मूल्यांकन करता है और यह उच्च सिविल सेवा तथा वित्तीय विश्व का भी मूल्यांकन करता है। इस प्रसंग में वित्तीय विश्व का अर्थ यह है कि उन बड़े-बड़े व्यापारिक नेताओं को दलबध्द किया जाए जो अर्थव्यवस्था पर आधिपत्य रखते हैं और राज्य से सम्बध्द होते हैं। इसने व्यापार को प्राथमिकता देकर तथा अनेक सहायता और सुरक्षा की नीतियाँ स्थापित करके जापान की अर्थव्यवस्था की सशक्त वृध्दि को संभव बनाया है।

वित्त, सेवाओं और अन्य सेक्टरों में निजी उद्यम के विकास को प्रोत्साहित करने की नीति प्रशासनीय निदेशों, विधान से स्वतंत्र द्वारा प्राय: कार्यान्वित की गई है और इसने जापान के सामन्त वर्ग के लोगों को काफी शक्तियां प्रदान की है। ट्रोइका पध्दति ने ऐसी वित्तीय सहायता की ओर उन्मुख किया है जो राजनीतिक पार्टी को दी जा सकती है तथा उस नीजि सेक्टर में उच्च सिविल अधिकारियों को नियुक्ति दी जा सकती है जहां वे दूसरी आजीविका में प्रवेश करते है। इन संबंधों ने राजनीतिकों उच्च सिविल अधिकारियों और व्यापार में ऐसी साँठ-गाँठ करती है जिससे लोक निंदा और भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया है (सिध्दान्तत: जो बाजार अर्थव्यवस्था के प्रतिकूल है।

यदि समाजवादी परम्परा यथा सोवियत संघ और चीन के देशों से और पश्चिम यूरोप के देशों से तुलना की जाए तो जापान में राष्ट्रीयकृत उद्योगों की आर्थिक स्थिति तुलनात्मक रूप से हल्की है और राज्य सेक्टर का कम महत्व है। इस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

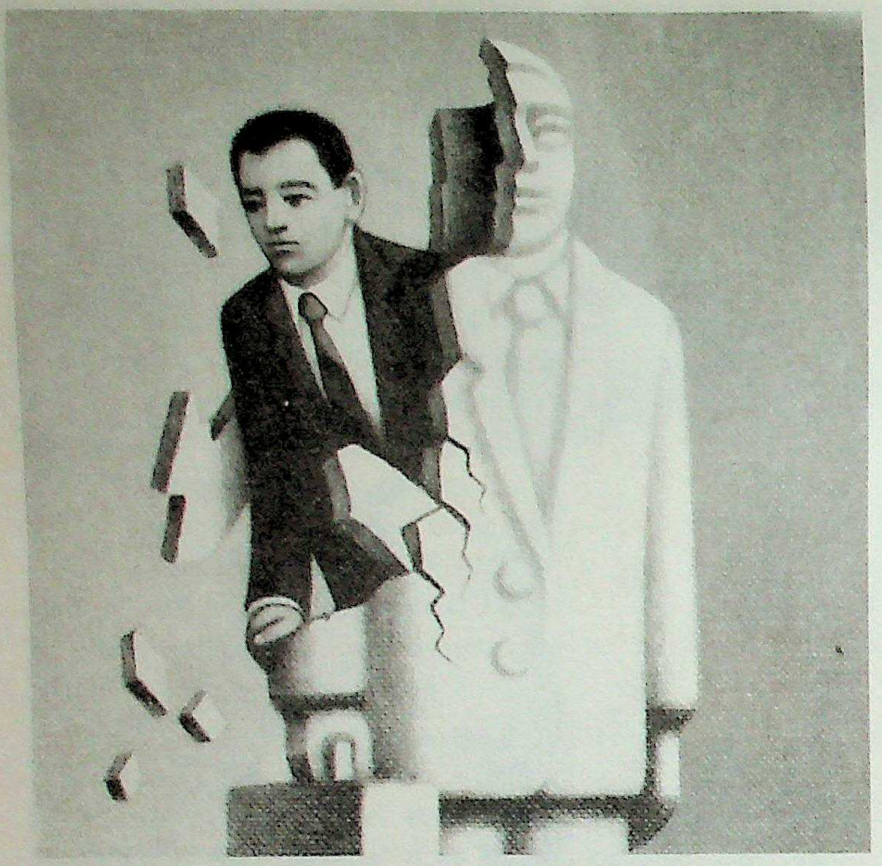

"जापान में व्यक्तिवाद असाधारण घटना है और यह व्यापार तथा लोगों के बीच सम्बन्धों से उभर सकती है तथा कम्पनी की उच्चता के सिध्दांत का स्थान ले सकती है।"

संबंध में जापान की अर्थव्यवस्था बाजार की अर्थव्यवस्था होती है और योजनाबध्द अर्थव्यवस्था नहीं होती है। फिर भी, इसे बाजार अर्थव्यवस्था बताया जाता है जो राज्य द्वारा निदेशित होती है क्योंकि निजी व्यापार राज्य से अधिक समीप से बँधी रहती है।

बदलाव बिन्दु

इन आन्तरिक विरोधों के अलावा विदेशी जापानी कम्पनियों द्वारा अर्थात अमरीका, यूरोप और एशिया में 1970 तथा 1980 के दशकों में किए गए प्रत्यक्ष निवेदनों द्वारा समस्याएँ पैदा होती हैं। जापान का अमरीका के साथ अतिरिक्त बाजार बड़ी राजनीतिक समस्या बन गया है और जापानी-अमरीकी संरचनात्मक समस्याओं पर सहकारिता के क्षेत्र में जापान और अमरीका के बीच में संघर्ष के कई मामले उभरे हैं।

कम्पनी पूंजीवाद की अपनी सीमाएं होती हैं। जब निर्मित वस्तुओं के लिए बाजार/व्यापार और व्यक्तियों के बीच संबंधों की बात है, अल्पविक्रेताधिकार आधिपत्य पर अधिक दबाव होता जाता है विशेषकर विदेश से आयातित वस्तुओं के मूल्य में वृध्दि होती जाती है। जहाँ तक श्रम बाजार का संबंध है, जीवन के लिए रोजगार और भर्ती के लिए जापान की शैली ने अपना आधार खोना प्रारम्भ कर दिया है। यूनियन अब भी कम्पनी यूनियन है और वे कम्पनी को प्राथमिकता देती हैं। परन्तु इसके सदस्य कम से कम रुचि रखते है तथा यूनियनवाद की महत्त कम होती जा रही है।

कम्पनियों के बीच संबंधों में यह देखा जा सकता है कि *कीरेत्सू* का औचित्य कम होता जा रहा है और कम्पनियां उन्हें छोड़ती जा रही है। संपिंडी होने की आवश्यकता ने अब कमजोर होना प्रारंभ कर दिया है जिससे औद्योगिक संरचनाएं बड़े उद्योग और रासायनिक उद्योग के मॉडल से दूर हटती जा रही है। यहाँ तक कि पारगामी पद्धति व्यापकता कम होती जा रही है।

प्रमुख बैंक की संस्था भी कमजोर होती जा रही है। 1980 के दशक से व्यापार वित्त पद्धति, विविध प्रकार की होती जा रही है। कम्पनियों द्वारा पारगामी प्रभाव, उद्योगपतियों के लिए बाधा बनना प्रारंभ हो गया है तथा कुछ कम्पनियाँ लाभ कमाने के लिए अपने शेयर बेच रही हैं।

राज्य और व्यापार के बीच संबंधों के बारे में 1990 के दशक में विनियमन बड़ी सरकारी प्रवृत्ति बन गई है। राजनीति-सिविल सेवावित्त ट्रोइका (राजनीतिक अपकीर्ति, एक ही पार्टी के आधिपत्य का अंत) की संरचना में विभाजन होने से यह अधिक कठिन हो गया है कि ऐसी नियंत्रण पद्धति की सुरक्षा की जाए जिसे पारस्परिक समर्थन द्वारा इन तीनों इकाइयों को कार्यान्वित किया गया है।

जापान की शैली के अनुसार बाजार अर्थव्यवस्था का विकास किस प्रकार होगा? क्या "एंग्लो-सेक्सन" प्रकार के बाजार की अर्थव्यवस्था अथवा नितांत नवीन शैली की अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर है? मैं यह कहना चाहूँगा कि 21वीं शताब्दी ऐसा युग नहीं होगा जिसमें बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ अथवा संयुक्त स्टॉक कम्पनियाँ होंगी। कम्पनियाँ ज्यों की त्यों विलुप्त नहीं होंगी। वे अब भी अर्थव्यवस्था की मुख्य धारा होंगी। परन्तु औद्योगिक संरचनाएं भारी उद्योग और रासायनिक उद्योग से उत्तरोत्तर अलग होगी। अतः बड़ी-बड़ी कम्पनियां, जो अधिक उत्पाद में लगी हुई थीं, उन छोटे और मध्यम आकार के व्यापारों से अपना आधार खो देगी जो अलग प्रकार के उद्योगपतियों द्वारा संरक्षण पाए हुए हैं। मैं उन्हें नेटवर्क द्वारा अधिक कुशलता से अंतःसम्बन्धित मानता हूँ और उन्हें *कीरेत्सू* तथा संपिंडी पद्धति द्वारा संबंधित नहीं मानता हूँ।

व्यक्तिवाद, जापान की असाधारण घटना है और यह व्यापार तथा लोगों के बीच संबंध स्थापित करेगा एवं कम्पनी की उच्चता के सिद्धांत का स्थान ग्रहण करेगा। एक सहकारी संरचना अथवा शायद कुछ अलग पद्धति संयुक्त स्टॉक कम्पनियों का स्थान ले ले। ये कम्पनियाँ लुप्त नहीं होगी। परन्तु यह हो सकता है कि वे व्यापार के कई अन्य रूपों के साथ बनी रहें। ■

हेरोशी ओकूमुरा
जापान के अर्थशास्त्री हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाजार की सार्वभौमिकता

—मैरी-फ्रांस बौद

हाल ही के वर्षों में अधिक आर्थिक घटना, सार्वभौमिकता, सशक्त देशों को लाभ पहुँचा रही है और गरीबी को हटा रही है।

यह घटना अर्थव्यवस्था की सार्वभौमिकता के नाम से जानी जाती है जो उच्च उत्पाद के वर्षो में और 1980 के दशक के उत्तरार्द्ध में अनदेखी मानी गई और अब महत्वपूर्ण विषय बनी हुई है। फिर भी, यह हाल का विकास नहीं है। कई देशों की फर्मे, आकार और प्रतिस्पर्धा की आवश्यकताओं की प्रतिक्रिया में सशक्त आर्थिक वृद्धि के साथ विश्व के क्षेत्रों में अपने को बहुत पहले से स्थापित कर रही है। वे उन स्थानों पर जाती है जहाँ वे उत्पादकता को सुधार सकें। उनकी वर्धित कार्यनीति को वित्तीय सार्वभौमिकता (पूँजी की स्वतंत्र परिचालन तथा विनिमय के नियंत्रणों का हटाया जाना) द्वारा सहायता मिली है।

संबंधित देशों में प्रत्यक्ष रूप से स्थापना द्वारा नए बाजारों को जीतने के दृढ़ निश्चय ने अलबत्ता उत्पादन पद्धति के तितर-बितर होने में गति पैदा की है। निर्मित वस्तुओं के व्यापार में प्रारंभिक कृषि, खनन और ऊर्जा उत्पादों की लागत पर वृद्धि हुई है। कुल व्यापार के अनुपात के रूप में यह 1970 में 50 प्रतिशत से बढ़कर 1990 के दशक के प्रारंभ में 70 प्रतिशत तक हो गया है। यह मई, 1993 के यूरोपीय समुदाय सर्वेक्षण के अनुसार है।

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश ने भी पूर्ति में वृद्धि की है यद्यपि यह विश्व के तीन सबसे विकसित क्षेत्र—उत्तरी अमरीका, यूरोप और दक्षिण-पूर्व एशिया तथा जापान तक ही सीमित है। बाजार क्षेत्रों की अपेक्षा परस्पर समन्वित हो रहे है यथा जापान के उद्योग ने दक्षिण-पूर्व एशिया में 65 बिलियन डॉलर निवेश किए (दक्षिण-पूर्व एशिया निवेश का मुख्य क्षेत्र है) यह आँकड़ा अमरीका और यूरोप दोनों को सम्मिलित करके अधिक बनता है। फिर भी, बाजार उत्तरोत्तर खुलते जा रहे है। 1995 में अमरीका को प्रत्यक्ष रूप से फ्रेंच विदेशी निवेश प्रवाह का मुख्य लाभ मिलता रहा।

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की मात्रा में वृद्धि ने विकसित देशों में औद्योगिक दलों को यह बता दिया है कि वे उत्तरोत्तर अन्तर्राष्ट्रीय पूर्ति में विश्वास करे। अब ये दल सार्वभौमिक स्तर पर कार्यकलापों की पुनर्संरचना कर रहे हैं और कम मजदूरी वाले देशों में स्थिति बदल कर तथा कार्य-कलाप का स्थान बदल कर प्रतिस्पर्धा वातावरण बना रहे है और कुशल श्रमिकों के संगठन की उथल-पुथल कर रहे है। बहुराष्ट्रीय दलों वाली कम्पनियों के बीच मध्यवर्ती वस्तुओं में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की बढ़ती हुई मात्रा लगभग एक जैसी है। एक ही दल में व्यापार के बारे में यह विश्वास किया जाता है कि इसकी मात्रा विश्व व्यापार का 25 प्रतिशत होगी।

मैरी-फ्रांस बौद
फ्रेंच आर्थिक पत्रकार है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1993 में 23 ट्रिलियन डालर के सार्वभौमिक घरेलू उत्पाद (जी डी पी) में से 18 ट्रिलियन डालर का उत्पाद औद्योगिक देशों और 5 ट्रिलियन डालर विकासशील देशों में रहा जबकि इनमें विश्व का लगभग 80 प्रतिशत भाग था।

गत 30 वर्षों में विश्व की जनसंख्या का सबसे गरीब 20 प्रतिशत में, सार्वभौमिक आय में अपने भाग की आय 2.3% से गिरकर 1.4 प्रतिशत हो गई। इसी बीच, सबसे धनी 20 प्रतिशत का वर्ग का शेयर 70 प्रतिशत से बढ़कर 85 प्रतिशत हो गया। अन्य शब्दों में यह कहा जा सकता है कि सबसे धनी और सबसे गरीब के शेयर का अनुपात दुगना हो गया 30/1 से बढ़कर 61/1 हो गया। उन लोगों का अनुपात, जो एक वर्ष में प्रति व्यक्ति कम से कम 5 प्रतिशत की आय वृद्धि दुगने से भी अधिक हो गया (127 प्रतिशत से बढ़कर 21 प्रतिशत) जबकि उन व्यक्तियों का अनुपात जिन्होंने ऋणात्मक रूप से वृद्धि प्राप्त की थी, तिगुने से भी अधिक हो गया (5 प्रतिशत से बढ़कर 18 प्रतिशत)।

विश्व के 358 बिलियन डालर के व्यक्तियों की आस्तियां विश्व में 45 प्रतिशत लोगों वाले देशों की वार्षिक आय मिलाकर अधिक होती है।

स्त्रोत : ह्युमन डेवलपमेंट रिपोर्ट 1996, यूएनडीपी।

सार्वभौमिकरण और दरिद्रीकरण

जून, 1996 में लेयोन्स, फ्रांस में आयोजित प्रमुख औद्योगिकीकृत देशों की जी-7 शिखर सम्मेलन का कार्यसूची में आर्थिक सार्वभौमिकरण विषय था इसका सामाजिक साहचर्य और मौद्रिक तथा वित्तीय पद्धति की समानता पर नकारात्मक परिणाम हुए हैं। इस बात के साक्ष्य यूरोप में 19 मिलियन बेरोजगार व्यक्तियों के आंकड़े से स्पष्ट है जहाँ एक प्रतिशत से नीचे वृद्धि रूकी है और 1994-95 की शीत ऋतु में मेक्सिको के संघर्ष द्वारा जारी उत्क्षेपण में है।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू एन डी पी) द्वारा तैयार की गई 1996 की मानव विकास रिपोर्ट के अनुसार 1980 के दशक में 70 देशों में औसत आय कम हो गई। 1990—93 की अवधि के दौरान ही औसत आय 21 देशों में पाँचवें अथवा अधिक भाग कम हो गया जिनमें मुख्यतया पूर्वी यूरोप और स्वतंत्र देशों का मित्र राष्ट्र कामन वैल्थ आफ इन्डीपैन्डेंट स्टेट्स (सी आई एस) में आय कम हुई।

सार्वभौमिकरण, सशक्त देशों को लाभ पहुँचाता है और सबसे कम देशों की हानि की ओर ले जाता है : "सबसे गरीब देशों में जहाँ विश्व की 20% जनसंख्या है, विश्व व्यापार के अपने भाग में 1960 और 1990 के बीच 4% से कम होगा, 1% से भी कम गिरावट आई है।" जैसा कि यूएनडीपी की रिपोर्ट में बताया गया है, "यद्यपि निजी निवेश का प्रभाव विकासशील देशों को 1970 और 1994 के बीच 5 बिलियन डालर से बढ़कर 173 बिलियन डालर हो गया और इसका तीन चौथाई भाग केवल 10 देशों को प्राप्त हुआ, जिनमें मुख्यतया पूर्व और दक्षिण पूर्व एशिया तथा लेटिन अमेरीका में निवेश हुआ।"

फिर भी, 1995 में विश्व बैंक ने यह भविष्यवाणी की कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और वित्तीय बाजारों का प्रसार स्थायी रूप से आर्थिक वृद्धि को प्रोत्साहित करेगा और इस वृद्धि से विकासशील देशों में [illegible] होगा और इन प्रयोजनाओं के अनुसार यह आशा की जाती है कि 2010 तक विश्व-उत्पाद 38% रहेगा जबकि इसकी तुलना में 1980 में यह 22% था। ऐसे मामले में विकासशील देश विश्व के लगभग आधी उपभोज्य वस्तुओं और खरीद योग्य सेवाओं का उपयोग करेंगें।

पुनर्निर्धारण और बेरोजगारी

अनेक विकसित देशों ने यह महसूस किया है कि यह उनके हित में है कि निर्माण-प्रक्रिया का अंतर्राष्ट्रीयकरण कर लिया जाए। इसके फलस्वरूप वे अपने औद्योगिक उत्पादन का पुन:निर्धारण कर रहे हैं ताकि कम मजदूरी की कीमतों का लाभ उठाया जा सके और कच्चे माल तथा प्राथमिक उत्पाद के स्रोतों के अधिक समीप पहुँचा जा सके।

क्या इसका अर्थ है कि पुनर्निर्धारण उस बेरोजगारी के लिए उत्तरदायी है जिसने अधिकांश विकसित देशों को प्रभावित किया है? कुछ अधिकारी, जिनमें चार्ल्स ओमन सम्मिलित हैं, जो आर्थिक सहकारिता और विकास के संगठन (ओईसीडी) में इन समस्याओं पर कार्यशील दल का प्रमुख है, विश्वास करते हैं कि कम रोजगार की संभावना इस कारण से है कि यह कठिनाई अंतर्निहित है ताकि औद्योगिक उत्पादन की भारी प्रक्रिया से अधिक लचीले और उत्पाद के ऐसे नये तरीकों की ओर ले जा सके जो नवीन प्रौद्योगिकी के द्वारा द्विगुणित किए जाते हैं। अन्य शब्दों में यह कहा जा सकता है कि यांत्रिकी का युग छोड़ा जा रहा है और स्वत:चालन के युग में प्रवेश किया जा रहा है।

कुछ अर्थशास्त्री यह तर्क देते हैं कि पुनर्निधारण की प्रक्रिया में वास्तव में क्या दाँव पर लगा है—यह इतना नहीं है कि कम मजदूरी के देशों से जटिल उत्पाद और प्रमुख प्रौद्योगिकीयों में बाजार काम शेयर को थामने के सक्षम बन सके। उस तर्क के अनुसार वास्तविक समस्याओं को रोजगारों को समाप्त करने तथा उत्पादन के पुन: परिनियोजन को मिलाकर लड़खड़ाते हुए छिपाना है।

5 जनवरी, 1995 को मेक्सीको शहर में स्टॉक एक्सचेंज में एक उत्तेजित प्रतिक्रीया, जब मेक्सीको आर्थीक संकट की दलदल में फँसा था।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation [illegible] MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वाशिंगटन के समझौते

नियम विनिमय दरों की पद्धति के अधीन विनिमय तंत्र केवल माध्यमिक भूमिका अदा करता है। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का विकास और पूँजी संचलन के सामान्य उदारीकरण ने विनिमय दर के निर्माण में नवीन तंत्र को बढ़ावा दिया है। दिसम्बर, 1971 में वाशिंगटन का समझौता होने के समय से, जिन्होंने 1944 में ब्रैटन वुड्स में स्थापित अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक पद्धति को भंग किया। इसके अंतर्गत प्रत्येक प्रकार की मुद्रा निर्धारित की गई जिसकी समानता सोने में व्यक्त की गई। अधिकांश देशों ने अपनी मुद्रा के सरकारी मूल्य को स्थापित करना रोक दिया है। दरों के अवलोकित अथवा प्रत्याशित उद्भव मुद्रा के मूल्य की तुलना में कहीं अधिक प्रभावकारी है।

अंतिम उपेक्षित प्रभाव यह है कि वित्तीय सार्वभौमिकरण और विनियमन में विश्व अर्थव्यवस्था के लचीलेपन के पर्याप्त तत्व को प्रारम्भ किया गया है। सूक्ष्म आर्थिक प्रवृत्तियाँ उन राजनीतिक निर्णयों की तुलना में बाजार के मत द्वारा अधिक प्रभावित लगती हैं। जिनमें सरकारें अपने मतदाताओं के प्रति उत्तरदायी हैं। इससे भी बुरी बात यह है कि वित्तीय प्रतिक्रियाएँ सामूहिक प्रवृत्तियों में अधोगति को प्राप्त हो सकती हैं, चाहे वे निचले स्तर अथवा उच्च स्तर की क्यों न हों। इसके फलस्वरूप कीमतें ऐसे क्षेत्रों में उँची हो जाती हैं जो आधारभूत आर्थिक तत्वों के साथ कोई संबंध नहीं रखते क्योंकि बाजार स्वत: नियमन के योग्य नहीं होते हैं। प्रति 24 घंटे में एक ट्रिलियन डालर से अधिक डालर विश्व भर में संचरित होते हैं और सबसे अधिक उत्पाद की कोशिश करते हैं। यूएनडीपी ने यह कहा है कि पूँजी के इस प्रभाव ने विश्व को उस सार्वभौमिक वित्तीय बाजार के क्रिया-कलाप के लिए खोज दिया है जो ब्याज की दरों, विनिमय की दरों अथवा अन्य वित्तीय नीतियों से ऊपर सीमित स्वचालन के साथ सबसे शक्तिशाली देशों को भी छोड़ देता है।

यह निरंकुश सार्वभौमिकरण ऐसा असमान आर्थिक विकास कर रहा है जो रोजगार बनाने की अपेक्षा दरिद्रीकरण को बढ़ा रहा है। प्रतिवर्ष विश्व के गरीब लोग 25 मिलियन तक बढ़ जाते हैं। आर्थिक कार्य-निष्पादन के अंतर इतने अधिक बढ़ गए हैं कि दो अलग-अलग विश्व अस्तित्व में आ गए हैं और बराबर बढ़ती हुई अमीरी तथा गरीबी के बीच एक खाई सी बन गई है।

इस वर्ष जी-7 शिखर सम्मेलन की समाप्ति पर सात प्रमुख औद्योगिक देशों ने नवीन विश्व सहभागिता की पुकार की है ताकि ऐसा विकास हो सके जो जिसमें विकासशील देश, विकसित देश और बहुपक्षीय संस्थाओं को सम्मिलित किया जाएगा जिससे अधिक गरीब देश सार्वभौमिकरण से लाभ उठा सकें। क्या राजनीतिक निर्णायकों ने सही आवाज़ उठाई है अथवा उन्होंने अंततोगत्वा ऐसे कदम की आवश्यकता महसूस की है। ■

दक्षिण चीन में यून्नान प्रांत की राजधानी कुनमिंग की दुकान में पश्चिमी वस्तुओं के प्रदर्शन की एक झलक।

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्टॉक मार्किट का उदय

—एमैनुअल वेलैंट

न्यूयार्क का स्टॉक एक्सचेंज

स्टॉक एक्सचेंज को बॉरसेज भी कहा जाता है। यह स्टॉक एक्सचेंज़ 16वीं शताब्दी के मध्य में यूरोप में अस्तित्व में आए जब बाजारों और व्यापारिक मेलों के साथ ऐसे स्थानों को बनाया गया जहाँ व्यापारिक कम्पनियों के साख पत्रों और शेयरों का लेन-देन निहित था। "बॉरसे" शब्द ब्रूज़ेस (आजकल बेलज़ियम) में 1549 में प्रथम बार प्रयोग किया गया था और यह शब्द वैन दैर ब्यूरसे परिवार से लिया गया है जिसका नगर हाउस का उपयोग उन नगर व्यापारियों द्वारा होता था जो वास्तविक सम्पत्ति प्रतिभूतियों में व्यापार किया करते थे।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक ब्रूज़ेस, ऐंतवर्प, लियोंस, एमस्टरडम, पेरिस और लंदन एक के बाद एक प्रमुख वित्तीय बाजार रहे। पूँजीवादी पद्धति में उनकी भूमिका यह थी कि वे बचत करने वालों (निजी व्यक्तियों और बैंकों) तथा निवेशकों (राज्य और व्यापार) के बीच मिलन-स्थल की व्यवस्था करते थे।

दो प्रकार की मुख्य प्रतिभूतियाँ होती हैं—शेयर और बांड। शेयर कम्पनी की पूँजी के भाग को इंगित करते हैं और लाभ (डिवीडेंड) देते हैं जो कम्पनियों के लाभों के अनुसार घटते-बढ़ते रहते हैं। दूसरी ओर बांड प्रतिभूतियां हैं जो नियत समय के लिए जारी की जाती है तथा प्रतिभूतियों के धारकों को नियत ब्याज की आय उत्पन्न करती हैं। पूर्ति और माँग के अनुसार कीमतें बढ़ती या घटती रहती हैं तथा सट्टे के अधीन होती हैं।

बीसवीं शताब्दी में विश्व के स्टॉक एक्सचेंज ने राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्थाओं के वित्त घोषणा में महत्वपूर्ण योगदान किया है। न्यूयार्क का वाल स्ट्रीट (अमरीका) आज प्रमुख वित्तीय बाजार है जिसकी स्पर्धा एशिया (विशेषकर टोक्यों, हाँक-काँग तथा सिंगापुर) और यूरोप (फ्रैंकफर्ट, लंदन और पेरिस) के स्टॉक एक्सचेंज से की गयी है। इन बढ़ते हुए सार्वभौमिक वितीय बाजारों, जो अधिक जटिल उत्पादों का विकास कर रहे हैं, प्रतिभूतियों में व्यापार, आर्थिक, मौद्रिक, राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक कारणों द्वारा प्रभावित है।

इन बाजारों की यदा कदा "वित्तीय बबूलों" के समान आलोचना की जाती है और वे विशुद्ध रूप से सट्टे के ऐसे लाभ पैदा करते हैं, जो तथाकथित "वास्तविक" अर्थव्यवस्था के विकास से असंबंधित होते हैं अर्थात् यह वास्तविक अर्थव्यवस्था उद्योग, व्यापार और सेवाओं की है। ■

एमैनुअल वेलैंट
फ्रांसीसी पत्रकार है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

त थ्य फा इ ल

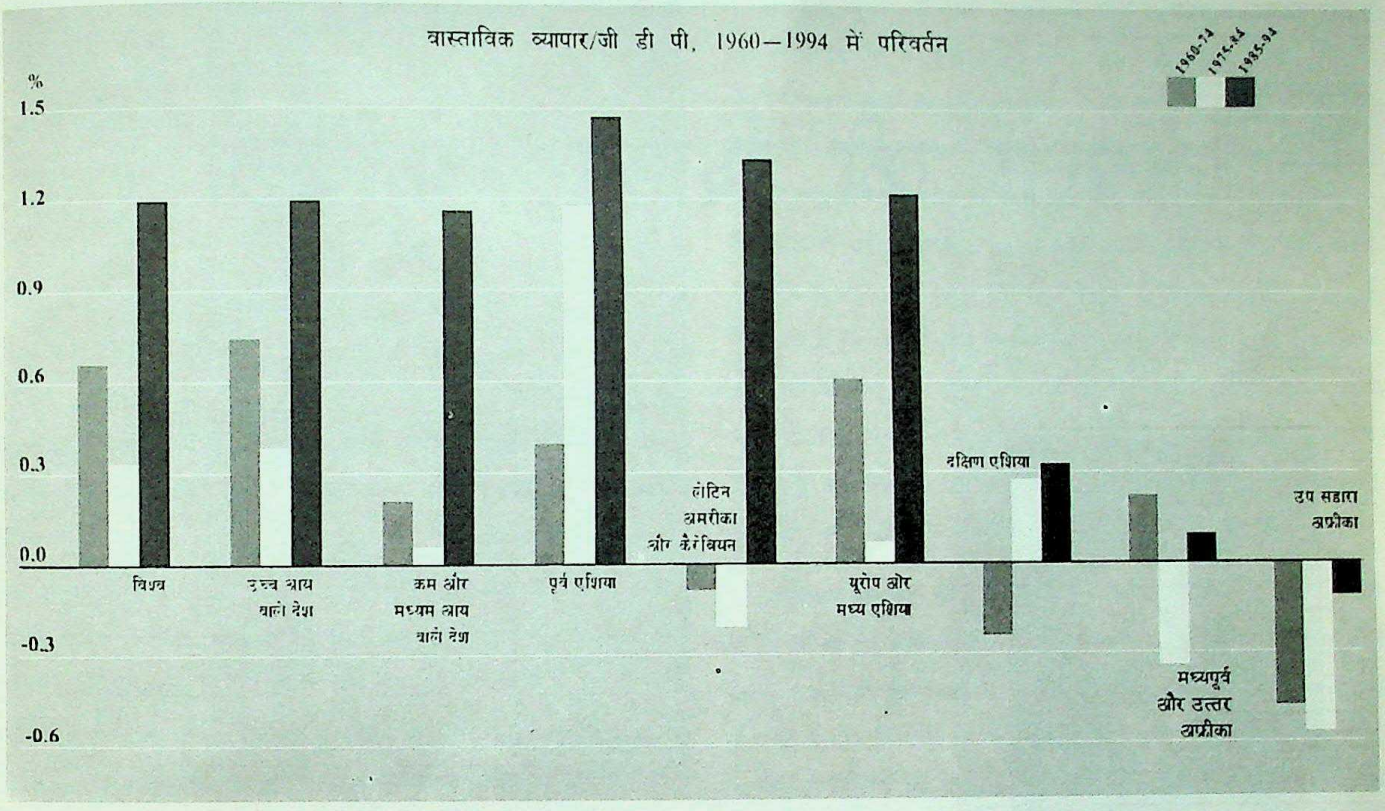

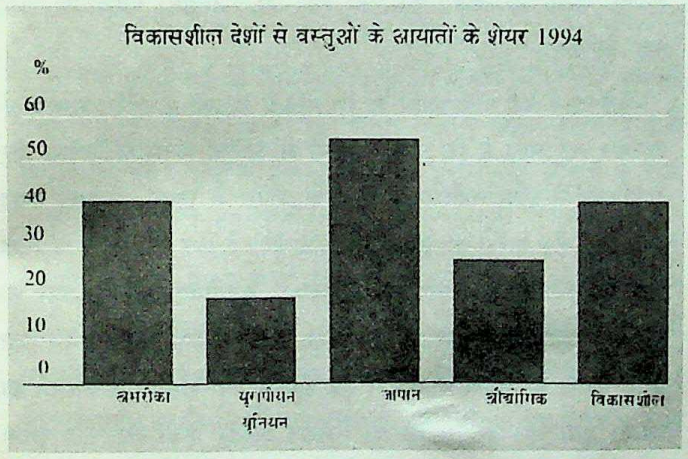

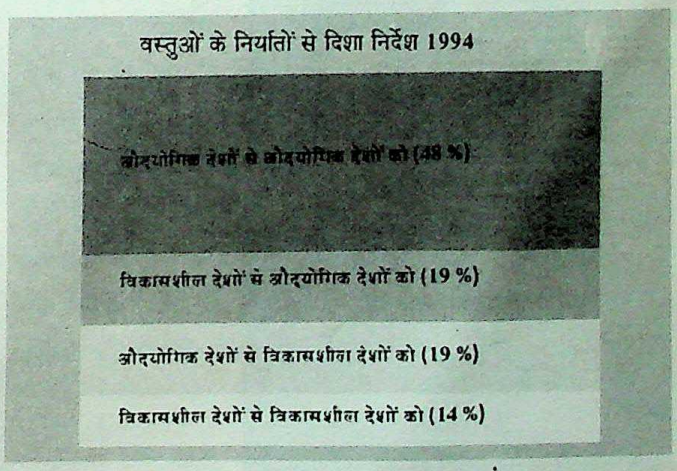

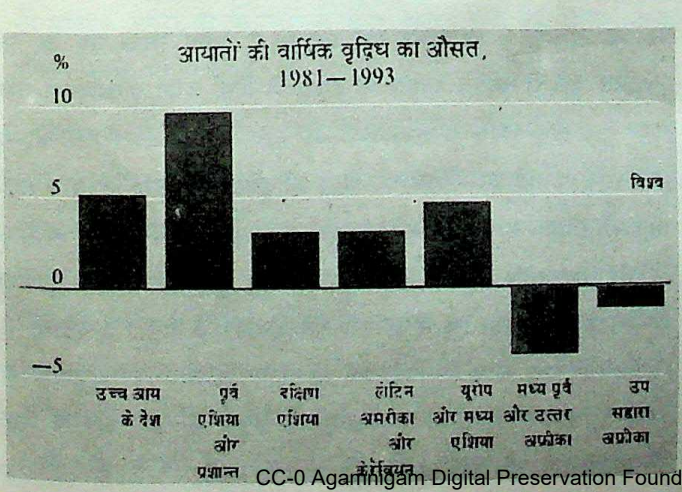

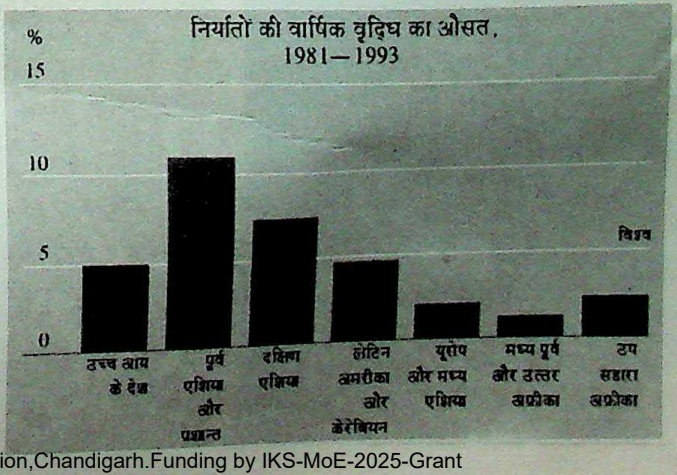

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समीक्षा

फेडेरिको मेयर

स्वतंत्रता की शिक्षा, कविता

यह असंभव है कि आज विश्व में ओपेरा की स्थिति से बिल्कुल असंबद्ध रहा जाए। अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दियों में यह कला का ऐसा स्वरूप था जो मानव-स्वर, वाले संगीत और दृश्यगत प्रभावों के सम्मिश्रित रूप में इंग्लैंड, जर्मनी, स्पेन और फ्रांस के कोर्ट तथा थियेटरों में मन बहलाता रहा। गत चार शताब्दियों में महान् ओपेरा कृतियां, संगीत रचना की पूर्णता के क्षण रहे हैं। इन वर्षों में माउंटवर्डी, लुल्ली, सियरलत्ती, हेंडेल, रेक्यू, ग्लक, मोजार्त, बीओवन, बेगनर, वर्दी, बरलियोज, बिज़ेन और ग्लिंका ने अतीत की विरासत को आत्मसात किया तथा नई प्रेरणा का आधार पैदा किया। चाहे नाटकीय विषय कुछ भी क्यों न रहा हो, चाहे उनका कैसा ही रूप क्यों न रहा हो, उन्होंने रचनात्मक जादू पैदा किया।

केसेन्द्रा ने यह भविष्यवाणी की कि बीसवीं शताब्दी में ओपेरा समाप्त हो जाएगा। यह सत्य है कि आधी शताब्दी से अधिक समय से सिनेमा और टेलीविजन ने लोक मनोरंजन के रूप में ओपेरा के स्थान पर मुख्य स्थान बना लिया है। ओपेरा का मंचन अधिक खर्चीला है तथा यह जनता या निजी रूप से प्रायोजन पर निर्भर है। यह सबसे समसामायिक संगीतकारों का स्वप्न माध्यम है और फिर भी सार्वजनिक अनुसरण बना हुआ है। मैंने हाल ही में इटली के बेरोना के क्षेत्र में इसे देखा है जहां बाइजेत के कारमेन का प्रदर्शन हुआ था। इस ओपेरा का निर्देशन मास्टर फ्रेंको जेकरेल्ली द्वारा किया गया और डेनियल ओरेन ने संचालित किया।

यह असंभव है कि महान स्वर कगवारे में विचार किया जाए कि गत चालीस वर्षों से अधिक अवधि में ओपेरा के लिए नवीन प्रामाणिकता तथा शान आई है। ओपेरा के ध्वनि रूप पर दर्शक आश्चर्यचकित रहते हैं, वे ओपेरा के वाक्यों का सौष्ठव तथा शैली की दृष्टि से पूर्णतया पर मुग्ध रहते हैं। मैं विशेष रूप से मोनसेरात केवेल्ले, प्लेसीदो डोमिगनगो, बारबारा हैंक्स और जोसे केरारत के बारे में सोचता हूँ, जिन्होंने मुझे गुडविल एम्बेसेडर के यूनेस्को ग्रुप में शामिल होने की प्रतिष्ठा दी है। वे यूनेस्को के आदर्शों की रक्षा करते हैं, विशेषकर संस्कृतियों के आदन-प्रदान युवाओं के प्रशिक्षण तथा सार्वजन्तमक कार्यकलापों में उनके सन्नहित होने के लिए प्रोत्साहन देने में कार्य करते हैं।

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

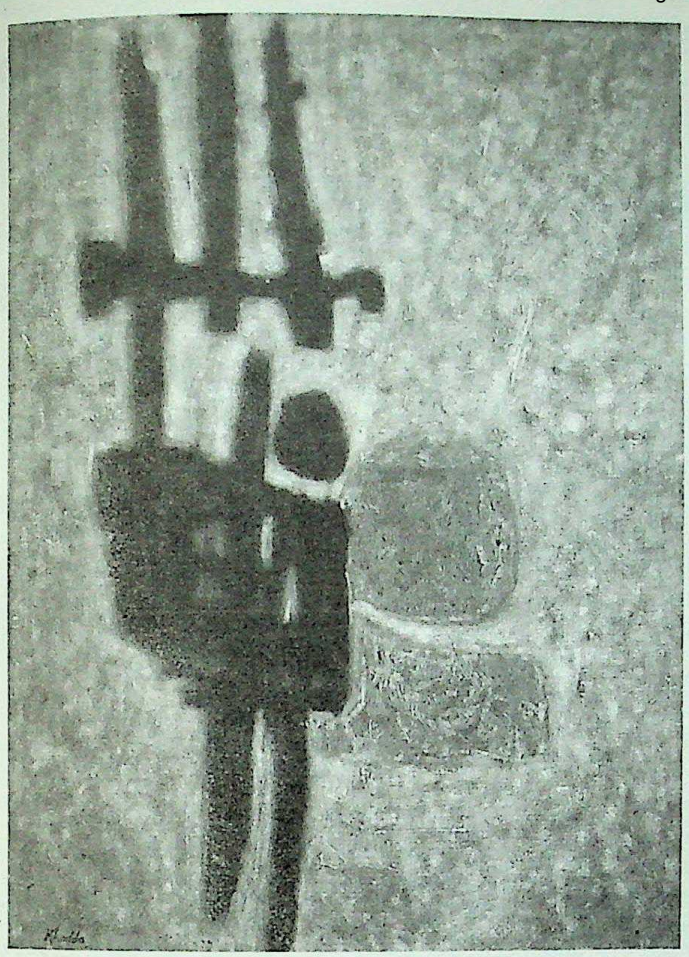

मेरा गया चिह्न शान्ति (1971) है. एल्जीरिया के कलाकार मोहम्मद खड्डा (1930-1991) द्वारा तैयार किया गया चित्र।

वे ऐसी परियोजना का भी समर्थन करते हैं जिनसे मैं विशेष रूप से सम्बद्ध हूँ और जिनके बारे में मैंने विस्तार के साथ बेरोना प्राधिकारियों के साथ इस विषय पर विचार-विमर्श किया है : ओपेरा और कविता के लिए अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान का सृजन।

भावी संस्थान, मिलन-स्थल और विचारों के विनिमय का स्थान होगा जहाँ ओपेरा के वर्तमान विकासों, उनके भविष्य, नई प्रौद्योगिकी में उसकी सहभागिता और युवाओं के प्रशिक्षण के बारे में विचार-विमर्श किया जाएगा। प्रमुख विशेषज्ञ वैज्ञानिक शक्ति की भावना और विशिष्ट तथ्य तथा ज्ञान में योगदान करने में सक्षम होगा। कहने की आवश्यकता है कि विशेष ध्यान गैर-यूरोपीय ओपेरा की परम्परा पर दिया जाएगा चाहे वह बीजिंग बरवा अथवा बाली का क्यों न हो।

संस्था का अन्य भाग विश्व कविता को समर्पित किया जाएगा। मैं अपने कार्यशील जीवन में चाहे कुछ भी सरकारी कार्यों में लगा रहूँ फिर भी, संध्या और प्रात: की शांति में मैं सदैव कविता की ओर उन्मुख रहता हूँ। कविता स्वतंत्रता की शिक्षा है। उन बाधाओं और असमानताओं के बावजूद, जो विश्व में विद्यमान है (और जिन्हें मैंने पहली बार, उस समय देखा था, जब मैं यूनेस्को के लिए यात्राएं कर रहा था), ऐसी स्थिति में लेखक, कवि, उपन्यासकार और विचारक ही है जिन्होंने विचार, दकियानूसी और खोखले करने वाले पक्षपात के तरीके-बेमतलब है। [illegible] की गरिमा के प्रति प्रशंसनीय होकर शब्दों में बंधनों को काटने की शक्ति होती है। कभी-कभी शब्द सर्वशक्तिमान होता है।

मेरे सभी विचार शांति की संस्कृति के साथ सम्बद्ध है जिसके बारे में मेरा विचार है कि मैं यूनेस्को की मूल ज्वाला के समीप हूँ और यूनेस्को संयुक्त राष्ट्र पद्धति की बौद्धिक तथा नैतिक आत्मा है। यह मेरा विश्वास है कि कविता नैतिक पद्धति कि चम्बी में शुद्ध दाने डालती है और इसके बारे में दुबारा विचार करना चाहिए। क्या यह व्यर्थ है कि एक अलग प्रकार के समाज के बारे में स्वप्न देखा जाए जो नवीन आत्मीयता के उत्पन्न करने तथा समता भरे मानव संबंध को बनाए रखने में सक्षम होता है? क्या यह पागलपन है कि भयंकर रूप से विनाशकारी अभ्यास (युद्ध) के अन्त करने की इच्छा की जाए और अन्य प्रकार के अभ्यास (शांति) को पुनर्जीवित किया जाए। जिसके अनुभव का आंकलन किया जाता है? मैं जिस कविता को प्रेम करता हूँ वह निस्तार खेल नहीं है। यह काव्यशास्त्र, नीतिशास्त्र और राजनीति की आंतरिक कड़ी है।

इतिहास—मानवता का इतिहास और भाषा का इतिहास—समाप्त न होने वाली प्रक्रिया है। कवि को उन सक्रिय चिन्तन और मूल्यों के पुनर्निवीकरण के लिए उत्प्रेरक होना चाहिए जो हमारी आनुवंशिकता के लिए अंदर है तथा हम पर बराबर जोर देते हैं कि हम अपनी आशाओं को बढ़ाते रहें। कविता अपने कई रूपों में क्रूरता पर विजय पाने के लिए परकोटा है : आदर्शात्मक और प्रौद्योगिकीय विपथगमन, हिंसा, राष्ट्रवाद, धार्मिक और राजनीतिक उन्मादवार, जातिवाद, असहनशीलता तथा स्वार्थ। कविता के प्रति अपील क्यों की जाए जब कि कविता, कालातीत, अभौतिक और निरस्र होती है? इसका उत्तर यह है कि कविता में शब्द ऐसी उद्दीप्त ताप पैदा करता है और वह हममें से प्रत्येक से कुछ न कुछ बात करती है, यह प्रेम के समीप होती है। जी हाँ, कविता कॉवेनैट की आर्क है, कानेवैट की हमारी आर्क है। हम सभी के लिए कवि और पाठक समान होते हैं। कविता विश्व का अर्थ बता सकती है और यह अर्थ कविता के अस्पष्ट रहस्यों, बड़े विरोधों और उदात्त उपलब्धियों में निहित होता है। ■

"मेरे भीतर जो स्वप्न है, उसे मैं जब श्वास लेता हूँ, बनाए रखूँगा। मेरा जीवन स्वप्न है, यह प्रेम का स्वप्न है जो हममें से प्रत्येक जीवित व्यक्ति में समाहित है।"

फेडरिको मेयर, *पेटर्न्स*, रोजमेरी बिल्लशायर, फारेस्ट बुक्स लंदन, 1994 द्वारा अनूदित।

CC-0. Panjab Digital Library Chandigarh. Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हरित परिरक्षण

हवाई ज्वाला मुखी, नेशनल पार्क

—फ्रांस बेकुइत्ते

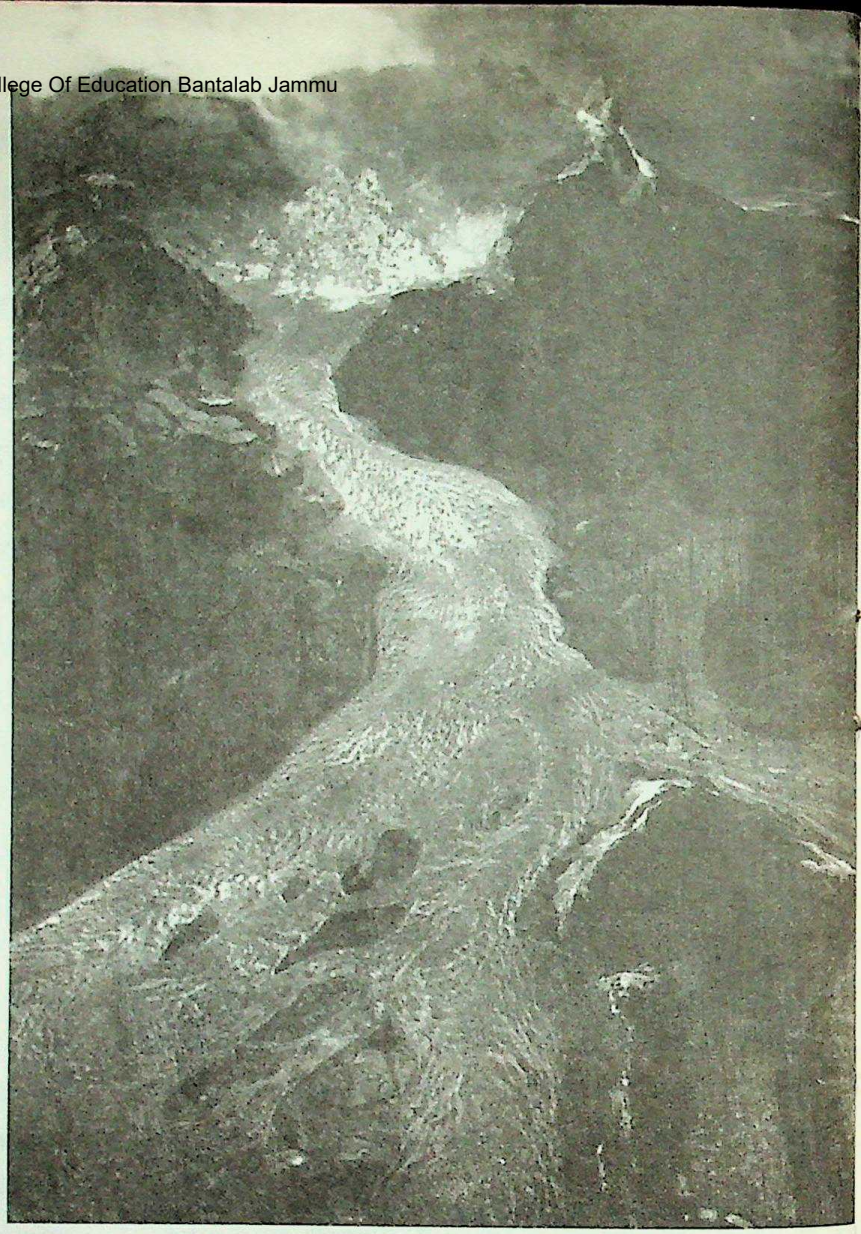

किसी समय अग्नि देवी पेले जिसकी काला दुःख उत्पन्न करने वाली मोए-मोइया-औ. ली थी, पेले बसने के लिए स्थान की खोज में यात्रा कर रही थी। उसने हवाई द्वीप समूह में एक के बाद दूसरे द्वीप में प्रयत्न किया परन्तु जब कभी उसने जादू की छड़ी आग का गड्ढा खोदने के लिए धरती में गाड़ी वह समुद्र के अति समीप गई और लहरे उठी तथा उन लहरों ने अग्निशिखा को बुझा दिया। इसके बाद अन्ततोगत्वा उसने कभी बिग आइलैंड (बड़ा द्वीप) कहे जाने वाले हवाई द्वीप के दक्षिण पूर्व कोने में कैलायूएआ में अपने स्वप्न का घर पाया।

जन्मा-जात हवाईआन्स अपनी परम्पराओं से जुड़े रहते है और अपनी देवी को मांस, मछली, फल और फूल अर्पित करते हैं जिन्हें वे हेलमाऊपाऊ ज्वालामुखी मुहाने पर रख देते है, यह पवित्र स्थान उनके द्वीप-शृंखलाओं में है। यह पवित्र स्थान हवाई ज्वालामुखी नेशनल पार्क में स्थित है जो 1961 में अमरीकी कांग्रेस की डिगरी द्वारा जैसा किया गया था और 1980 में यूनेस्को का जीव मण्डल रिजर्व[1] बन गया। पार्क की प्रतिष्ठा स्थानीय लोगों को अपनी परम्पराओं को निभाने से नहीं रोकती। उन जन्मजात हवाईवासियों को

हवाई हंस अथवा नेने (ब्रेन्ता सेंडविसेनसिस)

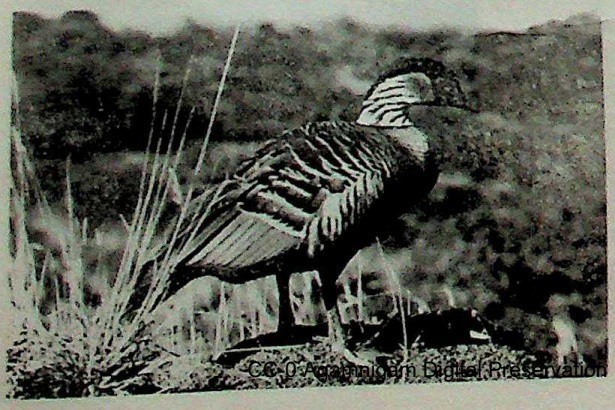

लावा की नदी जो किलायूएआ से निकलती है। किलायुएआ हवाई द्वीप पर सक्रिय ज्वालामुखी है।

5 डालर प्रवेश शुल्क अदा नहीं करना पड़ता जो नियमित रूप से वहां जाते है। वे औषधि के पौधें तोड़ सकते हैं जिनकी उन्हे आवश्यकता होती हैं तथा महिलाओं को गर्म झरनों में स्नान करने की अनुमति दी जाती है।

ईडन का उद्यान

लगभग दो मिलियम लोग प्रतिवर्ष पार्क की यात्रा करते हैं। उनके स्वागत के लिए उत्कृष्ट सुविधाएं उपलब्ध है। प्रदर्शनियां, फिल्म प्रोजेक्शन उन बड़े यात्री केन्द्र पर दिखाए जाते है जहां मार्गदर्शी यात्राओं से संबंधित विषय का प्रस्ताव किया जाता है तथा वृत्त-चित्र प्रचुर सामग्री उपलब्ध की जाती है। डामर की बनी सड़को का नेटवर्क यात्रियों को फिलायुएआ के किनारे-किनारे घूमने की सुविधा प्रदान करता है अथवा समुद्र की ओर यात्रा करने में सहायता उपलब्ध करता है। भू-दृश्यों की विविधता चमत्कारी है और सभी दिशाओं में टहलने वाले प्रेमियों के लिए मार्ग खोलते है। जैसे ही सूर्यास्त होता है आप धुएं, सितम्बर-ये ज्वालामुखी के मुहाने गंधक के नारंगी रंग के समूहों, खनिज रेगिस्तानों और घने जंगलों में से होकर गुजरते हैं, जहां ऊँचे-ऊँचे चीड़ के वृक्ष अन्य वृक्षों के धुधंले पर्णसमूह में घुल-मिल जाते है। यात्री 4,170 मीटर ऊँचे मौनालोआ (बड़ा पर्वत) पर चढ़ सकते है जो लगातार लावा के प्रवाह से निर्मित हुआ है और ब्रिजली, जिसकी पूर्व गोलाकार शिखर कभी-कभी बर्फ से ढक जाता है।

यह 124 द्वीपों, प्रशान्त द्वीपिकाओं और एटोल्स का सुदूर महासागर का द्वीप समूह है, जिसमें आठ मुख्य द्वीप सम्मिलित हैं। यह 70 मिलियन वर्ष पूर्व महासागर से उभरा था परन्तु 1600 वर्ष पूर्व तक इसमें सर्वप्रथम मानव जाकर बसे—मार्क्वेसास द्वीप समूह से पॉलीनिशियन पहुँचे। नए बसने वालों ने ऐसे पौधे और किड़े पाए जो हवा, चिड़ियों या समुद्र द्वारा इन द्वीपों पर पहुँचे थे परन्तु परभक्षी भूस्तरपायी प्रशु नहीं थे, यह परभक्षियों की अनुपस्थिति में निर्णायक कारक था। पौधों अथवा जानवरों में से किसी ने भी सुरक्षा की अनावश्यक विकसित पद्धतियां नहीं बनाई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2020-Gen

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रथम बार आने वाले जहाजों में प्रच्छन्न यात्रियों के रूप में द्वीप समूह पर मच्छरों के आने से पूर्व लाल एपापेन (हिमाशने सैंगुनिया) नामक छोटी चिड़िया ने मलेरिया से रोधक्षमता नहीं विकसित की। अब एवियन मलेरिया से अधिक लोग मरते हैं। बकरियों के आने से पूर्व मिंट और सेज को सशक्त और रक्षात्मक सुगंधियों की आवश्यकता नहीं थी। पार्क के अधिकारी इस राज्य की चिड़ियों को बचाने के लिए सबसे अधिक प्रयत्नशील है। वे नैने अथवा हवाईआन हंस (*ब्रांटा सैंडवी सैन्सिस*) 7 को मरने से बचाने में लगे हुए है। अमरिकी प्राणिविज्ञानी स्टुअर्ट पिम का मानना है कि हवाई द्वीप समूह पर मानव के पैर रखने के बाद कम से कम 101 चिड़ियों की वंश परम्परा लुप्त हो चुकी है।

ज्वायलोनिक सल्फर बैंक

आन्तरिक दुश्मन

हवाई के एकाकीपन से यह स्पष्ट होता है कि इस द्वीप समूह पर स्थानिक पौधों की संख्या असामान्य रूप से अधिक क्यों है: रिकार्ड की गई लगभग —1 000 जातियों में से 95 प्रतिशत विश्व में कहीं भी नहीं मिलती। परन्तु जंगली सूअर(सुस स्क्रोफा) तथा अन्य कोपल चरने वाले पशु असुरक्षित हैं। वनस्पतीशास्त्री चार्लस लेमूरेयुनल, होनोलूलू के लाइऑन आर्बोरेटम के महानिदेशक, के अनुसार लगभग आधे पौधों को खतरनाक स्थिति में समझा जाता है, यद्यपी वे अभी तक सरकारी सूची में सम्मिलित नहीं किए गए हैं।

ऐसी 5,000 जातियां हैं जिन्हें बाहर से लाया गया है, इनमें से 25 जातियां विशेषकर विनाशकारी हैं। केनेरी द्वीप समूह से लाए गए फायरट्री (*मायरिका फाया*) सबसे अधिक हानिकारक है, इनमें ब्राजील से स्ट्राबेरी गुआवा (*सिडियम केट लियानम*), दक्षिण अमरीका से केला पोका वाइन (*पेसीफ्लोरा मोलिसिमा*) और केंद्रीय अमरीका से लाए गए "कोस्टर कर्स" (*क्लाइडेमिया हिता*) शामिल हैं। वे सभी प्रचुर मात्रा में उत्पन्न होते हैं तथा देशी पौधें सूखते जाते हैं। परन्तु वे नष्ट होने से भयभीत है। एक मामले में केनेरी द्वीप समूह से एक कीड़ा आयात किया गया है ताकि इस देशी पौधें फायरट्री से लड़ा जा सके परन्तु इसके परिणामों की गति धीमी है। नेशनल पार्क के वनस्पतीशास्त्री लिंडा प्रेट ने विभिन्न प्रकार के तृणभक्षी प्रयोग किए हैं परन्तु यह कठिन कार्य है क्योंकि अहानिकर पौधों के नाश किए जाने का खतरा है तथा जल को प्रदुषित किए जाने का भय है। व्यापक रूप से प्रसारित "मृतक या जीवित चाहिए" नामक पोसर उस माइकोनिया का नाम और फोटो प्रदर्शित कर रहे हैं जो प्रचुरमात्रा में उत्पन्न होते हैं। इसका विनाश कर देना चाहिए ताकि यह पूरे द्वीप में न फैले जैसा कि इस पौधे ने ताहिती(फ्रेंच पॉलीनिशिया) ने खतरा पैदा कर दिया है जहाँ इसने वन क्षेत्र के तीन चौथाई भाग में ही से आक्रमण किया है।

ट्री फेर्नस ऑन द आईसलैंड ऑफ हावली।

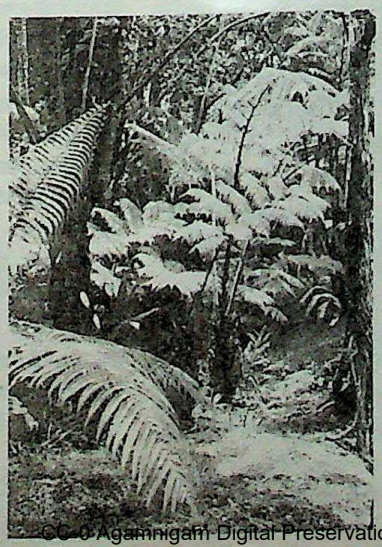

फ्रांस बेकुइत्ते
फ्रैंको-अमरिकन पत्रकार

पाई को बचाने का अर्थ यह है कि भूमि के स्तनपायी पशुओं की कतिपय जातियों को कम कर दिया जाएं, जिन्हें मानव ने शरण दी है। ऐसा करने के लिए पार्क सुपरीनटेन्डैट जिम मार्टिन ने शिकार चोरों की सहायता मांगने का असाधारण कदम उठाया है। कुछ व्यक्ति इस बात से दुःखी हो सकते हैं कि जंगली बिल्लियों से बचा जाएं। परन्तु वे खतरे से ग्रस्त जातियों के अंडे और शिशु चुराते हैं, इनमें काले रंग की पेट्रेल (टेरोड्रोमा फेओपायगिया सेडविसेन्सिस) प्रमुख है। हानिकारक बकरियों को स्थानिय शिकारियों से समाप्त कर दिया गया। उनकी संख्या 1880 में 15000 थी जो घटकर 100 से भी कम रह गई है। यद्यपि 1930 और 1970 के बीच 11.000 हानिकारक सुअर मारे गए, यह तखमीना लगाया जाता है कि अभी भी लगभग 4,000 हानिकारक सुअर बचे हैं।

शिकार करने के अलावा बाड़ बनाने का तरीका अच्छा है, यद्यपि इस कार्य में अधिक काम किया जाता है। जिम मार्टिन का कहना है कि इसके लिए धन का अभाव है। केवल आठ रेंजर है जब कि उचित देखरेख के लिए 15 से 20 रेंजरों की आवश्यकता है। पार्क भविष्य में शोधकर्ताओं को भुगतान नहीं कर सकता। जो व्यक्ति यहाँ अध्ययन के लिए आते हैं वे बाह्य संगठनों के होते हैं। विरोध में, पार्क नवम्बर, 1995 में बंद कर दिया गया परन्तु इसके 3 सप्ताह बाद इसको पुनः खोला गया जबकि जनता प्रारम्भिक रूप से सर्तक थी और उसने पार्क के बंद रहने पर अपना धैर्य खो दिया था।

यह स्थिति विशेषकर चिंताजनक है क्योंकि पार्क खतरनाक क्षेत्र में स्थित है। समुद्री तट की चट्टाने टूट रही है और किसी भी क्षण लावा उबल सकता है क्योंकि मौना लोआ और किलउइआ विश्व के सबसे सक्रिय ज्वालामुखी है। सबसे हाल के लावा प्रवाह के कुछ भागों में कांट-छांट की गई है ताकि कुछ सडकें फिर खोली जा सके।

प्रयोग और दुरूपयोग

यद्यपि ज्वालामुखियों का पार्क बड़े द्वीप के केंद्रीय क्षेत्र में भली-भांति सीमाबद्ध है फिर भी, इसके मानचित्र न तो मध्यवर्ती अथवा चित्र के क्षेत्र दिखाते हैं जैसा कि जीव मंडल के रिजर्व के लिए आवश्यक होता है। मार्टिन यह स्पष्ट करता है कि संघीय कारावास और निजी भूमि के साथ समझौता कर लिया गया है जो पार्क को घेरे में लिए है और विकास

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

योजना तैयार की जा रही है। समीप के गाँव में नए भवन, वन के अनुरूप होंगे और कोई हानि नहीं करेंगे।

इस तथ्य से अधिक गंभीर समस्या उभरती है कि हवाई की आर्थिक स्थिति अधिक चिंताग्रस्त रही जब से विश्व में चीनी के भाव काफी गिर गए। गन्ने के खेत छोड़ दिए गए और बेरोजगार मजदूर पार्क की सीमाओं में भांग, गांजा और चरस पैदा कर रहे हैं। वे अपनी फसलों के लिए वन की भूमि साफ कर रहे हैं तथा घातक घोलों द्वारा उन्हें बचाते हैं और इस प्रकार वे पारिस्थितिकी पद्धती को खतरे में डाल रहे हैं। फिर भी अधिक राशि के जुर्मानों और कारावास में भेजने के आदेशों से इस स्थिति में सुधार हुआ है।

परन्तु यही सब कुछ नहीं है। पेड़ों की पत्तियाँ दरारीदार आरों से काटी जा रही हैं और ट्रकों में भरकर हटाई जा रही हैं। चाहे खोजी कैमरे कितने ही क्यों न लगाए गए हों, दुष्ट लोग पुरातात्विक बहुमूल्य वस्तुओं को चुरा रहे हैं। यह पार्क यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में 1987 में शामिल किया गया था और इसमें कभी बसी हुई गुफाएं, गाँव के अवशेष तथा कमजोर प्रागैतिहासिक शिलोत्कीर्णन शामिल हैं जिनमें से अभी कुछ लावा के प्रभाव द्वारा ढक गए हैं।

हवाई ज्वालामुखी वेधशाला 1912 में स्थापित की गई थी और यह किलायूइआ कैलडेरा के सिरे पर पार्क के भीतर स्थित है

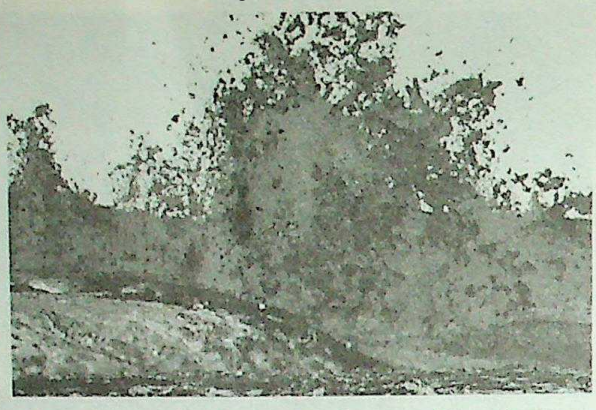

तथा पार्क के चलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जमीन के उतार-चढ़ाव, गैस के रिसने, बिजली, चुम्बक और गुरुत्वाकर्षण के क्षेत्रों में परिवर्तन और लावा के संचयन खतरनाक भूकम्पीय गति को प्रत्याशित रूप से बताने के प्रयत्न बहुत नजदीक से किए गए है। इस पार्क के एक भाग में लावा प्रचुरता से बह रहा है और इस भाग को जनता के लिए बंद कर दिया गया है। रात के समय अग्निभरी नदियाँ देहाती क्षेत्र में और समुद्र में पर्वत श्रेणियों के नीचे बहती है तथा वायु में लाल रंग की भाप की बड़ी-बड़ी तरंगे उठती है। ■

मोनु ला के ज्वाला-मुखी से लावा रस का उड़ता हुआ फव्वारा और बहता हुआ लावा।

1 इस समय इस प्रकार के 337 है। संपादक

विश्व ...

शक्तिशाली श्रिम्प (झींगी)

कैलीफोर्निया राज्य (अमरीका) में भूस्वामी, सड़क निर्माता और विकासकर्त्ता संघीय सरकार से संघर्षरत है जिसने अच्छी झींगी के लेने के बजाए प्रभावकारी विकास के लिए भूमि से सुदूर सीमाओं पर मिलियन हेक्टेयर भूमि को आरक्षित किया है। यह स्थल खतरे से भरी जातियों की सूची से अलग फ्रेस्टेशिया संबंधी छोटी श्रिम्प का है। 1978 में एक जीवविज्ञानी ने यह अनुमान लगाया है कि 90 प्रतिशत श्रिम्प के आवास स्थल नष्ट हो गए है यह ऐसा दावा है जिसको अन्य विशेषज्ञ मना करते है। इन विशेषज्ञों का जोरदार शब्दों में कहना है कि यह छोटा जीव वास्तव में पनप रहा है। 1995 में एक हजार कैलीफोर्निया-वासियों ने इस प्रदर्शन में खतरेवाली जातियों की सूची से ताजे जल की छोटी झींगी को हटाने की आवाज़ उठाई। कैलीफोर्निया के गवर्नर के अनुसार जिस कीट से खतरा है, वह श्रिम्प नहीं है परन्तु राज्य का आर्थिक विकास है। ■

सीडी पर कीट ओपेरा

320 मिलियन वर्ष पूर्व कीट-स्वर पहले ही कोपधारी जंगल में चीड़ के वृक्षों की पत्तियों और टहनियों से उड़ते हुए सुनाई देते थे। यद्यपि आज कई लोग झींगुर, रइयों और टिटिढ़यों तथा अन्य कीटाणुओं के स्वर दीमक, चींटी या घुन के समान उनके धमकाने; प्रेम-राज अलापने, मैत्रीभाव निभाने अथवा शेर की स्वीकृति के स्वर है जो मानव-कान में सुनने में नहीं आते क्योंकि वे बहुत हलके होते हैं और/या उच्च (अल्ट्रा-साउंड) अथवा धीमे (इंफ्रासाउंड) होते हैं। अब अति जटिल रिकार्डिंग टेक्नीक की अतिहारी है कि 50 कीटाणु की जातियों के स्वर फ्रांस में रिकार्ड किए गए है तथा उन्हें काम्पेक्ट डिस्क द्वारा सुनने योग्य बना दिया गया है। ओपेरा के रूप में प्रस्तुत इस डिस्क के साथ 200 पृष्ठीय व्याख्यात्मक "लिब्रेटो" जोड़ दिया गया है और इसके साथ रंगीन फोटो भी दिए गए है। लेखक एंड्रे-जेक्विस एंड्रियू और बर्नार्ड डयूमोरटियर फ्रेंच नेशनल इंस्टीटयूट ऑफ एग्रोनॉमिक रिसर्च (आई एन आर ए) के सदस्य हैं। ■

एंटो मोफोनिया
एंड्रे-जेक्विस एंड्रीयू और
बर्नार्ड डयूमोरटियर,
आई एन आर ए, 1994

प्रेरणा शक्ति

गाजर और डी डी टी

विसालिया कैलीफोर्निया (अमरीका) में एक छोटा खेती करने वाला समुदाय है जो सेनफ्रांसिस्को और लासएंजिल्स के मध्य में स्थित है। इसके छोटे हवाई अड्डे के पास एक क्षेत्र है, जो नियमित अलग-अलग स्थानों के साथ सम्बद्ध असाधारण संकेतों के साथ बड़े परकोटे द्वारा घिरा हुआ है। इन संकेतों में गाजर और मियाओं भाषा के दो वाक्य प्रदर्शित है।

यदि पीछे मुड़कर सन् 1947 पर दृष्टि डाली जाए तो पता चलेगा कि तब हवाई अड्डे के एक कोने में फसल की धूल साफ करने वाली कम्पनी ने एक दुकान स्थापित की थी। 1946 से 1972 तक डी डी टी कीटनाशक का विश्व में कीड़े मारने के सबसे अधिक प्रयोग किया जाता था। 1973 से अमरीका ने इस पर प्रतिबंध लगा दिया। भूमि पर रखे हुए ड्रमों में डी डी टी का स्टोर किया गया और फसल की धूल झाड़ने के जहाजों में इन ओकों को स्थानांतरित कर दिया गया और प्रति उड़ान के बाद उनको खाली होने के लिए खोल दिया गया। खाली ड्रमों से ब्रेसिन में स्टॉक कर दिया गया।

1984 में अमरीकी स्वास्थ्य विभाग ने इस भूमि का निरीक्षण किया। फसलों की धूल झाड़ने वाली कम्पनी उसके बाद विलुप्त हो गई। परन्तु डी डी टी के अवशेषकण बने रहे, जिन्हे उस भूमि में से फिर खोल लिया गया। सौभाग्यवश न तो वह घुलनशील था और न ही उड़नशील। उसने केवल 15 सें॰ मी॰ गहरी मिट्टी की ऊपरी सतह को ही संक्रमित किया था। इसकी सफाई की जानी थी परन्तु कोई भी मानक घोल अधिक उपयुक्त नहीं पाया गया : भूमि को सतहबद्ध करने तथा ताप द्वारा उसको ठीक करने की लागत 2 मिलियन डालर रही। यदि इसे मानव रहित क्षेत्र में स्टोर कर दिया जाता तो उसके लगातार सर्वेक्षण की आवश्यकता पड़ती।

इसके बाद इंजीनियर डेनिस कैलर ने गाजर और उगाने का विचार कार्यान्वित किया। यह सत्य है कि प्रत्येक फसल की लागत 170,000 डालर रही (जो ताप द्वारा उपचार करने की अपेक्षा कम है) परन्तु गाजरों ने मिट्टी में शेष डी डी टी का 50% भाग सोख लिया। गाजर, विशेषकर बड़ी फ्रेंच-किस्म के है जिस नैटेयस का स्कारलेट कहते है। यही केवल ऐसी सब्जी है जो अपने तंतुओं में इस प्रकार के कीटनाशक पदार्थ को केंद्रित करने में समर्थ है और इसकी केवल परत ही नहीं है जैसा कि सामान्य रूप से विश्वास किया जाता था परन्तु यह पदार्थ उसके भीतर जड़ों में घुल मिल जाता है। इसके बाद गाजरों को सुखाया जाता है और उन्हें जला दिया जाता है। डेनिस कैलर का कहना है कि गाजर उगाने का विचार आस्ट्रेलिया में डी डी टी को साफ करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

फैंसिंग वाले क्षेत्र और इसके विभिन्न संकेत जो 1992 में बनाए गए थे, मिआओ तथा वियतनाम के युद्ध से जनित वाले पदार्थों को दूर करने के लिए है। इस भूमि को सुधारकों को सौंपने से पूर्व कुछ समय के लिए भूमि छोड़ देनी चाहिए। धरती के प्रति किलो 1.4 एम॰ जी॰ का स्वीकार्य डी॰ डी॰ टी॰ स्तर अभी तक प्राप्त नहीं हो सका है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर्यावरण के लिए युवा रिपोर्टर

1994 में यूरोप में पर्यावरणीय शिक्षा का फाउंडेशन (एफ ई ई ई) (फाउंडेशन फॉर एन्वायर्नमैन्टल एजूकेशन इन यूरोप) गैर सरकारी संगठन है। इस संगठन ने पर्यावरण के लिए युवा रिपोर्टर (यंग रिपोर्टर फॉर द एन्वायर्नमैंट्स) शुरू किया। यह उन हाईस्कूल विद्यार्थियों के चुने गए दलों के लिए अन्तः अनुशासनात्मक परियोजना है जिन्हें पत्रकारिता में आधारभूत प्रशिक्षण दिया जाता है और विश्व में भ्रमण कराया जाता है ताकि वे पर्यावरणीय मामलों पर अपनी रिपोर्ट दें। उनके 1996 के मिशन ने सौ ऊर्जा जल विद्युत भूमध्यसागर के वायुमंडलीय उत्थान-पतन की गतियों और ध्रुवीय पर्यावरण पर ध्यान केन्द्रित किया है। वियतनाम, क्वेबेक (कनाडा), फ्रांस और स्पिटसबेजेन (सिल्लबार्ड द्वीप समूह) की यात्रा पर गए हुए युवा रिपोर्टरों ने इंटरनेट द्वारा अपने स्कूल के "साथियों" को सूचनाएं भेजी हैं। सर्वोत्तम लेखों को चुना गया और इन चुने गए लेखों को "मेगज़ीन" में प्रकाशित किया गया जो अनुरोध पर निःशुल्क एक ई ई ई के राष्ट्रीय कार्यालय से मिल सकती है। फाउंडेशन एक न्यूज़ लेटर (अंग्रेजी और फ्रेंच में) प्रकाशित करता है जो पर्यावरणीय शिक्षा में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के वास्ते अपनी सूचना के लिए है तथा जो इस नेटवर्क में सम्मिलित होना चाहता है।

यूनाइटेड किंगडम : श्री पेंहम हेशवर्थ, टाइडी ब्रिटेन एण्ड, द पायर, विगान, डब्लू एन3 4 ईएवस
टेलो : (44) 1942.72.46.20:
फैक्स : (44) 1942.82.47.78.

आयर लैंड : सुश्री पेट्रीशिया ऑलीवर या सुश्री जो कुके, एन० टैसी, द टेलर्स हॉल, ब्रेक लेन, डब्लिन 8
टेलो : (353) 1454.17.86:
फैक्स : (353) 1 453.32.55.

पॉलीस्ट्रीन के बारे में सन्देह

पॉलीस्ट्रीन फूला हुआ प्लास्टिक उत्पाद है जो पेट्रोलियम से तैयार किया जाता है तथा विश्व के प्रत्येक समुद्र तट पर धुला उपलब्ध है। अब इसने घर के कुड़ा-कबाड़ में अधिक स्थान ले लिया है। इसे भवनों में इन्सूलेशन के रूप में उपयोग किया जाता है तथा इसे विशेषकर प्यालो और खाद्य पदार्थों के पैकिट बनाने में काम में लाया जाता है। यह कागज की अपेक्षा दो या तीन गुना कम कीमत का होता है। परन्तु वह कागज की तुलना में निर्माण में अद्भुत सस्ता है। इसमें 36 गुना कम बिजली लगती है तथा ठंडा करने के लिए आधे जल की आवश्यकता होती है, परन्तु उसे दुबारा काम में लाने की पद्धति कागज की अपेक्षा अधिक कठिन और खर्चीली है। नए पॉलीस्ट्रीन की तुलना में पुराने पॉलीस्ट्रीन के पुनः तैयार करने में 25% अधिक कीमत लगती है।

बैकाल झील के लिए शुभ समाचार

क्षेत्रीय रूप से बैकाल झील में 2,500 जीव और पौधों की जातियां है जिनमें से 1500 यथा स्वच्छ जल की सील, महामारी फैलाने वाली है। यह विश्व में सबसे पुरानी है सबसे गहरी है और अनेक व्यक्तियों की राय में सबसे सुन्दर स्वच्छ जल की झील है। परन्तु गत 30 वर्ष से यह झील दक्षिणी किनारे पर सेल्यूलीज़ कारखाने द्वारा निष्कासित कूड़ा-करकट द्वारा प्रदूषित हो गया है। यह ऐसा कारखाना है, जो प्रत्यक्ष रूप से कूड़ा-करकट झील में डालता है। यद्यपि इर्कुत्स्क शहर इस फैक्टरी को बंद करने के लिए लागत का कुछ भाग भुगतान करने के लिए तैयार है। इस कारखाने के 300 कर्मचारियों के लिए रोजगार की समस्या का समाधान नहीं हो पाया है।

विश्वबैंक हरित हो गया है

62 देशों की 137 परियोजनाओं के लिए पर्यावरणीय पोर्टफोलियो में 10 बिलियन डालर के साथ विश्व बैंक अब विकासशील विश्व में पर्यावरणीय परियोजनाओं के वित्त पोषण हेतु विश्व का सबसे अधिक धन देने वाला बैंक है। 1995 में पर्यावरणीय वार्षिक रिपोर्ट रूदमेनस्ट्रीनिंग दी एन्युल रिपोर्ट के अनुसार बैंक ने यह निश्चय किया है कि पर्यावरणीय प्रबंध के सामाजिक आयामों को ठीक किया जाए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि स्टेक-धारक, परियोजनाओं की अभिकल्पना तथा कार्यान्वयन में लगे हुए है। इस्माइल सेरागेल्दीन, पर्यावरणीय स्थायी विकास के लिए उपाध्यक्ष के लिए यह प्रश्न है कि "बैंक के समस्त पोर्टफोलियो को हरित किया जाए"।

परिष्कारक बीज

ब्रिटिश शोधकर्त्ता ज्योफ फोवार्ड ने वैज्ञानिक रूप से यह पुष्टि की है कि मोरिंगा आलीफेरा वृक्ष के बीज का शुद्ध करने वाला प्रभाव होता है। ये वृक्ष कतिपय अफ्रीकी देशों में अधिक समय से जाने जाते थे। जब इन बीजों को दबाया जाता है तो इनसे प्रोटीन निकलती है जिसके साथ बैक्टिरिया, वायरस और अन्य जल जनित माइक्रो-अर्गोनिज़्म चुम्बक के समान लगे रहते है। प्रदूषक एकत्र हो जाते है और जल में छान कर उन्हें अलग किया जा सकता है। मोरिंगा ओलीफेरा के गुण समाप्त नहीं हो जाते। यह वृक्ष खराब मिट्टी में पैदा हो सकता है, इसकी पत्तियों और फूलों में विटामिन तथा अन्य पोषक तत्व भर जाते है। इसके बीजों से लेम्प और साबुन के लिए तेल उपलब्ध होता है।

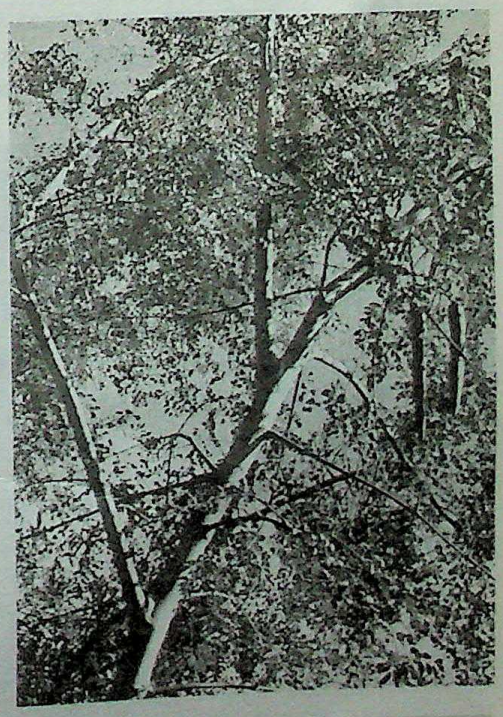

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फिलीपिन्स के बारोक गिरजाघर

—ऑगस्टो फेबेल्ला विल्लेलॉन

धार्मिक वास्तुकला का मौलिक रूप उस समय उभरा जब यूरोपीय बरोक फिलीपीन्स में आया

भूकम्प सदृश्य बड़े-बड़े शहरों पर खड़ा हुआ पा ओ ए (लोवोस नॉर्टे प्राविन्स) में सेंट ऑगस्टीन का गिरजाघर एक उल्लेखनीय उदाहरण है जिसे "भूकम्पीय बरोक" कहा जाता है।

पाँच सौ वर्ष पूर्व जब फिलीपीन्स अपनी शक्ति के शिखर पर था, उस समय वह स्पेन के साम्राज्य का सबसे पूर्वी सीमा प्रान्त था। मेड्रिड से सुदूर उपनिवेश तक यात्रा करने में कई महीने लग जाते थे। अंधमहासागर के क्रासिंग के पास स्थल से दक्षिण अमरीका तक के भाग के बाद मेक्सिको में एक पुल तक को धरती की यात्रा करनी होती थी और उसके बाद प्रशांत महासागर के आर-पार समुद्री यात्रा एकापुलको से फिलीपन की राजधानी मनीला तक करनी होती थी।

सोलहवीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी तक कई स्पेन के सन्यासी इस कठोर यात्रा पर जाते थे ताकि उनके देश में एशियाई चौकी पर ईश्वर के नाम का प्रसार किया जाए। जब वे फिलीपीन्स पहुँचे तो उन्होंने कृषि और समुद्र से भयभीत होने वाले समाज की खोज की। लोग बांस और ताड़ से बनी झोंपड़ियों में रहते थे और ये झोंपड़ियाँ समुद्री तट या नदी के किनार पर बनी हुई थी। ये झोंपड़ियाँ जमीन के ऊपर पैरबॉसा पर रखी हुई थीं ताकि मौसमी बाढ़ के पानी के नुकसान से बचा जा सके और खम्बों पर झुलती हुई बड़ी-बड़ी टोकरियों के समान दिखती थीं।

यद्यपि उन्होंने उष्णकटिबंधीय द्वीप के पर्यावरण को पूर्ण रूप से निभाया था, फिर भी ये पारम्परिक आवास बहुत समय तक के लिए नहीं रह सकते। वे आवास शीघ्र ही जलने लगते थे और सरलता से तूफ़ान के वेग से उड़ जाते थे जो प्रतिवर्ष आते थे। वे आवास हल्के और लचीले सामान से बनाए जाते थे। परन्तु ऐसे सशक्त पृथ्वी पर भूकम्प आने पर गिर जाते थे जो समय-समय पर देश को नष्ट-भ्रष्ट कर देते थे फिर भी ऐसे स्वाभाविक सामान से बनाए जाते थे जो प्रचुर मात्रा में गाँव में मिल जाता था और उन्हें शीघ्र ही पुनः बना लिया जाता था।

स्पेन के सन्त हजार वर्ष तक रहने वाले बड़े ऊँचे और मजबूत पत्थर के गिरजाघर बनाया करते थे। परन्तु वे इन संरचनाओं को ईश्वर के रहने के लिए स्थायी और उपयुक्त स्थान नहीं मानते थे। उन्होंने फिलीपीन्स में वास्तुकला को पश्चिमी संकल्पना प्रारम्भ की और भवन-निर्माण के लिए पत्थर का उपयोग किया।

सन्तों ने कुशल फिलीपीन्स तथा चीन के उन कारीगरों को काम पर लगाया जिन्हें पश्चिमी निर्माण-तकनीकों का ज्ञान नहीं था और वे धार्मिक कला की औपचारिक संवेदनशीलता से भी अपरिचित थे। गिरजाघर का निर्माण सामूहिक प्रयास था और फिलीपीन्स के अधिकांश गिरजाघर किसी एक डिज़ाइनर या वास्तुविद की कृतियां नहीं कहे जा सकते। वे कई अज्ञात कलाकारों द्वारा सामूहिक रूप से निर्मित हैं।

सन्तों को उन गिरजाघरों के अपने कुछ न कुछ स्मरण द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त हुआ था जिन्हें उन्होंने अपने जन्मजात स्पेन को छोड़ने से पूर्व देखा था। उन्होंने देखने में सुन्दर और फिलीपीन शैली में उच्च रूप से अभिव्यक्त संरचनाओं का निर्माण किया। यह फिलीपीन शैली, स्पेन के बारोक से ली गई। जैसे ही अधिकाधिक गिरजाघर निर्मित किए गए, यह "परिधीय बारोक" का विकास हुआ और इन्होंने फिलीपीनों की कल्पना को साकार रूप दिया। स्पेनी औपनिवेशिक वास्तुकला की उच्च वैयक्तिक असंगत रूप सहने योग्य बना। परन्तु आज अधिक खतरे में खड़ा हुआ है, जो उस अंतरक्रिया का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रमाण है जिसने सफलतापूर्वक दो अलग-अलग संस्कृतियों को समन्वित किया है और पश्चिम तथा पूर्व की दृश्यमान संवेदनशीलता को एकता के सूत्र में बाँधा हैं।

1993 में आगे दिए गए चार उत्कृष्ट वास्तुकला से भरपूर स्पेनी, औपनिवेशिक गिरजाघर जो फिलीपीन्स में है, विश्व विरासत सूची में सम्मिलित कर लिए गए हैं।

सेंट अगस्टीन का गिरजाघर (पाओ आए, इलॉकॉस नार्टे प्रांत)

अगस्टीनियन द्वारा 1710 में निर्मित यह गिराजाघर और इससे अलग घंटा मीनार, लम्बे-चौड़े प्लाजा के किनारे पर खड़ी है और देखने में यह शानदार भवन है। इसकी त्रिकोणिका का अग्र भाग हल्के पत्थर का बना हुआ है जिसका निचला भाग समतल है तथा त्रिकोणिका के ऊपरी भाग को प्रकाशमय, सुन्दर उत्कीर्णन द्वारा सजाया गया है जिसके किनारों पर पंख समान पत्थर (कलशनुमा अलंकरण) जड़े हुए हैं जो आकाश को कोमलता से चमकाते हैं। लम्बनुमा मोटे पत्थर के खंबे गिरजाघर को संभाले हुए हैं ताकि भूकम्प से मुख्य संरचना को बचाया जा सके। इसके पुश्ते बड़े दोहरे मरगोल (घुमावदार आकृतियों) जैसे डिज़ाइन किए गए हैं और उनके घुमाव तथा प्रति घुमाव का पारस्परिक प्रभाव जादूभरे हल्केपन की छाप छोड़ता है।

पाच्य विशिष्टता को फिर से प्रचलित करते हुए घंटे वाली मीनार मुख्य गिरजाघर की संरचना से कुछ दूर स्थित है जो पेगोड़ा की स्मृति के समान परतों में कुछ ऊपर की ओर पतली होती जाती है। इसके [illegible] फूलदार नक्काशियों से सुसज्जित है और उनके ऊपर नक्काशी किए गए तैरते हुए बादलों द्वारा उसकी धारा-प्रवाहिकता को अधिक प्रज्वलित करते हैं। इसका अग्रभाग लोकोत्तर का लालित्य भारी वास्तुकला के तत्वों को कोमल बना देता है और विशाल इंडोनेशिया के बोरोबुदर की वेदी गिरजाघर के अन्दर सम्पन्न किए गए कैथोलिक अनुष्ठान का प्राच्य पक्ष है।

हमारी कल्पना की महारानी का गिरजाघर (सान्ता मारिया, इलोकोस सुर प्रोविन्स)

गिरजाघर का यह समिष्ट भवन तथा जीर्ण आवास ऑगस्टीनियनों द्वारा निर्मित किया गया था जो चीन से आयातित/चौड़े ग्रेनाइट ब्लाकों द्वारा पचासी सीढ़ियों की चढ़ाई के बाद ऊपरी प्लेटफार्म से सान्ता मारिया नगर दिखाई देता है। इसके अग्रभाग के बावजूद, यह अपने आडम्बरहीन, लगभग खिड़की रहित किनारे नीचे के नगर की ओर प्रदर्शित करता है। आवास-गृह जो गिरजाघर की संरचना से तोरणिका पुल द्वारा जुड़ा हुआ है, गिरजाघर के सामने है और वास्तुकला के सामूहिक दृश्य को पूर्णता प्रदान करता है। पाओ आय में सेंट ऑगस्टीन के गिरजाघर के सामने इसके पुश्ते ऊपर की ओर घुमावदार हैं ताकि किनारे की दीवारों को प्रज्वलित करके उन्हें भूकम्प की हानि से बचाया जा सके। पेगोडा के समान अलग से घंटे की मीनार मुख्य भाग से कुछ ही दूरी पर है ताकि उसे मुख्य संरचना के गिरने से बचाया जा सके यदि वह संरचना भूकम्प से गिर जाती है। सान्ता मारिया का लालित्य उसके पर्वत शिखर की स्थापना में निहित है। नगर से ऊपर मजबूती से बने गिरजाघर के भवन किलानुमा मध्यकालीन गढ़ से मिलते-जुलते हैं।

सांतामारिया (इलोकोस सुर प्रोविन्स) पर हमारी महारानी का गिरजाघर और इसकी अलग घंटे की मीनार।

मनीला की पुरानी दिवार के जिले में सेंट ऑगस्टीन का गिरजाघर।

सेंट आगस्टीन का गिरजाघर (इंट्राम्यूरोस, मनीला)

यह गिरजाघर 1587 में ऑगस्टीनियन की देखरेख में निर्मित किया गया। वर्तमान गिराजाघर फिलीपीन्स में सबसे पुराना गिरजाघर है। इन्ट्राम्यूरोस में गिरजाघर संबंधी वास्तुकला के कुछ उदाहरणों में से यह एक उदाहरण है। इंट्राम्यूरोस किलेबंद बस्ती है, जिसे मनीला खाड़ी के किनारों के आस-पास स्पेन के लोगों द्वारा निर्मित की गई थी। फिलीपीन्स और एशिया में ऑगस्टीनियन क्रम की मदर हाऊस निर्मित किया गया था। इस पुनरोद्धार शैली के परिसर में मुख्य गिराजाघर मठ, विहार और वनस्पति उद्यान सम्मिलित किए गए हैं। यह भवन, समग्र शहर ब्लॉक में स्थित है। गिरजाघर का आडम्बरहीन अग्रभाग एक छोटे प्लाजा की ओर है जो चीनी प्रस्तर कुल्लों के जोड़े से आरक्षित है। दीवारों के बाहर विस्तार किए जाने के बजाए मोटे पुश्ते बनाए गए हैं ताकि भूकम्प की क्षति से बचाया जा सके। गिरजाघर के दोनों ओर किनारे के प्रार्थना-लयों में भरपूर सजावट भवन के अंदर की गई है। फिलीपीन का यही गिरजाघर है, जो तूफानों और भूकम्पों का अभी तक सामना कर सका है। यह क्रांतिकारी घटना है। यह विश्व युद्ध की क्षति और [illegible] से घिरे

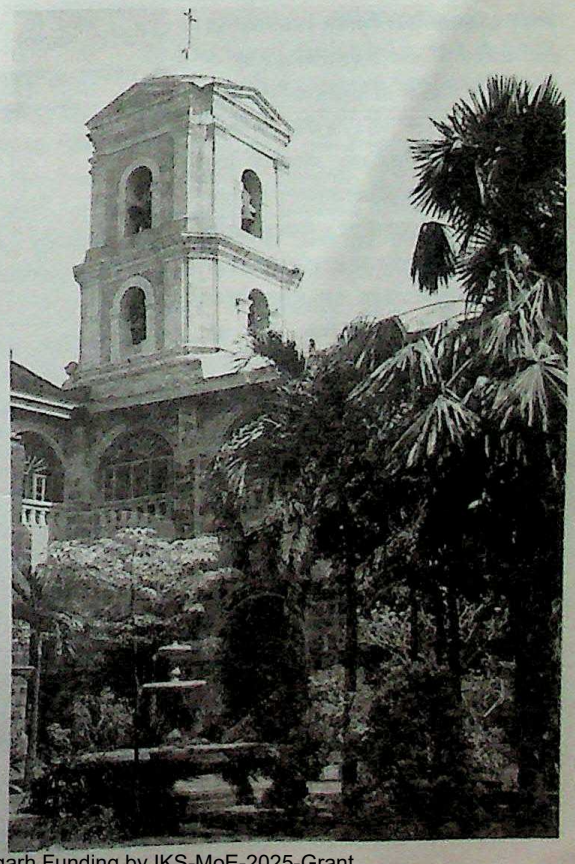

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मनीला के पुराने दीवार से घिरे जिले में सेंट आगस्टीन का गिरजाघर सबसे प्रसिद्ध धार्मिक स्मारक है, जो फिलीपीन की राजधानी में है। इसमें प्रसिद्ध पवित्र कला का संग्रह है।

मुख्य तारीखें

1521

फर्डीनेंड मागेल्लान स्पेनी मुकुट के लिए फिलीपीन पर अधिकार रखता है परन्तु मेकटन के द्वीप में मारा जाता है। उसके साथी स्पेन लौट आते है और वे प्रथम बार विश्व का चक्कर लगाते हैं।

1571

मनीला की स्थापना। इन्ट्राम्यूरॉस के किलों का निर्माण

1587—1606

इंट्राम्यूरॉस (मनीला) में 1854 में सेंट आगस्टीन गिरजाघर का निर्माण, मनीला के म्यूनिसपाल वास्तुविद, डॉन ल्यूसियानो आल्विर द्वारा अग्रभाग का विस्तृत पुनर्नवीकरण। 1863 में भूकम्प से एक मनोरा क्षतिग्रस्त हुआ था और उसका पुनर्निमाण फिर कभी नहीं हुआ।

1710

पा ओ ए (इलोकॉस नोर्टे प्रान्त) में सेंट आगस्टीन का गिरजाघर का पूरा किया जाना।

1765—1810

सान्ता मारिया (इलोकॉस सुर प्रान्त) की हमारी कल्पना की महारानी के वर्तमान गिरजाघर का निर्माण

1768—1797

मिआगो (इलोइलो प्रान्त) में विलानुएवा के सेंट थॉमस का निर्माण

1898

स्पेनी युग का अन्त

1945

फिलीपीन की स्वतंत्रता की स्वीकृति

सेंट थामस ऑफ विलान्युइवा का गिरजाघर
(मियाग-आओ, इलोइलो प्रांत)

होने पर भी बचा हुआ है। इस गिरजाघर में धार्मिक कला और देश की विरल पुस्तकों का प्रमुख संग्रह है।

यह गिरजाघर 1797 में पूरा किया गया। यह गिरजाघर सबसे संगीतमय और कलामय हैं तथा फिलीपीन की संस्कृति का ऐसा उदाहरण है जिसे बहुरंगी स्थानीय शैली में पश्चिमी बारोक डिज़ाइन के सिद्धांतों की अभिव्यक्ति है। यह गिरजाघर समुद्र के सामने ऊँचे स्थान पर निर्मित किया गया था और प्रारम्भ में यह गिरजाघर डाकुओं के आक्रमण से ग्रामीणों को बचाने के लिए किले जैसा काम करता था। इसका मूलभूत वास्तुकला का कम्पोज़ीशन, साधारण छत ठोस और शक्तिशाली आयताकार संरचना की फिलीपीन वास्तुकला का अनुसरण करता है। एक त्रिकोणिका अग्रभाग सादी संरचना के अलावा सामने की सतह तक तैयार किया गया। गोल-मटोल, असंतुलित घंटों की मीनार की जोड़ी, जो कभी खतरे के समय ग्रामीणों को सावधान करने के लिए मीनारों का काम देती थी, वर्गाकार आधार से ऊपर जाते हुए पतली होती जाती है। दोनों मीनारें आसमान ऊँचाई की हैं और सशक्त रूप से ऊपर उठती है जबकि दृश्यगत रूप से सामने के प्रत्येक किनारे पर ठहरी-सी प्रतीत होती हैं। अग्रभाग में उत्कीर्णन द्वारा उल्लेखनीय तीन आयामी गुणवत्ता में सेंट क्रिस्टोफर को दिखाया गया है जो फिलीपीन किसान का परिधान पहने हुए हैं और अपनी बाहों में बालक क्राइस्ट को लिए हुए है, वह नदी पार करते हुए दिखते हैं और वह स्थान पर्याप्त उष्णकटिबंधीय वनस्पति से भरपूर हैं। उच्च अतिरंजित सशक्त रचना, अनवरत संचलन में तरंगित वास्तुकला के ब्योरे फिलीपीन कला के उत्कृष्ट नमूने है और वे वास्तविक दृश्यवान होने पर आनन्द देते हैं। ■

ऑगस्टो फेब्रेल्ला विल्लोलेन
फिलीपीन के समाजविज्ञानी, वास्तुविद और कला इतिहासकार हैं।

मियाग-आओ (इलोलिओ प्रांत) में विल्लान्यूवा के सेंट थॉमस का आकर्षक गिरजाघर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक आधुनिक केटलान संगीतकार जिसकी कृति का परिचय और अधिक होना चाहिए।

फेडेरिको मोमपौ की छिपी हुई आवाज़

—इसाबेले लेमेरी

फेडिरिको मॉमपौ 3 डेनकॉसे (1893—1987) केटेलान संगीत के प्रतीकात्मक मानव हैं। कुछ लोगों के दावे के अनुसार वह कुछ मूल्यवान लघु रूप अथवा गरीब आदमी के डेनुयी ही नहीं थे परन्तु अपने समय में स्पेनी संगीतकारोंमें सबसे असाधारण और महत्वपूर्ण संगीतकार थे। उनकी कृति में मुख्यतया पियानो और स्वर संगीत की झलकियां सम्मिलित हैं परन्तु उन्होंने गिगर फ्रेंच में हार्न, आरगेन और चेम्बर आरकेस्ट्रा के लिए भी लिखा। मोमपौ का संगीत प्रायः अपने स्वर में करुण होता है और ऐसी कविता में निमग्न होता है जो कभी संक्षिप्त और दृष्टा होता है तथा कभी श्रोता की संवेदना में अधिक गहन और सबसे पवित्र प्रक्रिया में होता है।

फ्रेंच दार्शनिक व्लेडीमीर जानकेलेविच ने लिखा, "मोमपौ का रहस्य हमें भ्रम में डाल देता है जब हम उसको वर्गीकृत करना चाहते या किसी वर्ग में उसको फिट करते है।" परन्तु हम वह गुप्त और अप्रतिम आवाज़ सुन सकते हैं, जो शान्ति की आवाज़ है : हम उस आवाज को आत्मा के कान से सुन सकते है, जब एकान्त संगीत बन जाता है।[1] उनके संगत और अनलंकृत संगीत के विधान *म्यूज़िका केलेडा* (संगीत जो शान्त हो जाता है। 1959—67) जिसकी प्रेरणा महान स्पेनी रहस्यवादी सेंट जॉन ऑफ द क्रास, मोमपौ न्यूनतम साधनों द्वारा अधिकतम अभिव्यक्ति प्राप्त करता है। उसमें जो संगीत है, वह शांत है, जैसा कि उन्होंने बताया क्योंकि यह संगीत आन्तरिक रूप से सुना जाता है। इसका संवेदन गुप्त है और हमारे एकान्त में शीत की थिरकन द्वारा आवाज़ बन जाता है।"

महान केटेलान कलाकार, जो आन मीरो के समसामयिक मोमपौ जिसकी प्रेरणा का उत्साह और ताजगी अपने ही समान थी, 16 अप्रैल, 1893 को बार्सेलोना में पैदा हुआ था। उसकी माता फ्रेंच वंशज की थी और पिता केटेलान वंश के थे। बचपन में वह अपने दादा की फाउंड्री की घंटियों की आवाज से मंत्रमुग्ध होता था और यह आवाज उसे जीवन पर्यन्त सुनाई देती रही। उसने बार्सेलोना में *कन्जेंवेटरी देल लिस्यू* में पियानों का अध्ययन किया और वह अपने समय के महान पियानोवादक कलाकारों के संगीत समारोह में उपस्थित रहा। उसने पन्द्रह वर्ष की आयु में संगीत प्रस्तुत किया जिसमें मोज़ार्त, शूबर्ट, ग्रीज और में डेलस्सोडन की रचनाएं शामिल थी।

पियानों वादक के रूप में उसके श्री गणेश से ऐसा लगा कि उसका भविष्य उज्वल है। परन्तु फौरे के संगीत को उसने प्रथम बार 1909 में सुना था और यह संगीत उसके लिए ऐसा रहस्योद्घाटन हुआ कि उसने यह निर्णय किया कि वह संगीतकार बनेगा। 1911 में वह संगीतकार एनरिक्यू ग्रेनाडॉस (1867—1916) से परिचय पत्र लेकर पेरिस में बस गया और उसने कन्जर्वेटचायर में प्रवेश किया जहां उसने पियानो और लययुक्त संगीत सीखा। उसके बाद उसने अपनी ही लययुक्त पध्दति का विकास किया जो अपने अप्रत्याशित धागो के साथ वातावरण में छाप छोड़ने वाले थे, परन्तु पूर्णरूप से मूल तर्क द्वारा शासित होते थे। उसका आदर्शवाक्य था, "दुबारा समीप आओ" जिसका अर्थ यह है कि संगीतमय कम्पोज़ीशन में "आदिवासियो—" की भावना में लौट चलें। उसने स्वराघात परिवर्तन, बार लाइन और प्रति बिन्दु (काउंटर प्वाइंट) का निषेध किया तथा वह "अति सूक्ष्म स्वरों" को पसन्द करता था। (व्लेडिमिर जानके लेविच)।

1913 और 1921 की मध्य अवधि में मोमपौ में पियानो के लिए अपनी सर्व्वोत्तम कृतियों को लिखा, "इनमें पेसेब्रेस (क्रिब्स), एसेन्स द इनफेंट्स (बच्चों के दृश्य), और सुब्बुरब्रिस (उपनगर) सम्मिलित थे जिन्होंने वातावरण की आवाज भावना का सूक्ष्म प्रकाश, अनोखे वृतांत की कोष्ठक बहता" की अभिव्यक्ति थी जैसा कि केटेलन संगीतज्ञ लुयस मिलेट का कहना था। जब वह पेरिस में था, उस समय संगीत की सर्जनात्मकता छाई हुई थी, उस समय मोमपौ अन्य व्यक्तियों के साथ मारिस रेवल तथा एरिक सेटी से मिला और अपने कई सहदेशवासियों का मित्र बन गया यथा मूर्तिकार एपेल्लेस फेनीसा और चित्रकार मिक्वेल रेनॉम तथा सेल्लो लेगार।

जब 1914 में प्रथम विश्व युद्ध छिड़ गया, मोमपौ बार्सेलोना लौट आया तथा उसने केटेलान के पुनरुध्दार आन्दोलन में भाग लिया जिसका नाम नौसेनूटिसमे था। 1921 मे वह पेरिस आ गया जहां उसकी संगीत कृतियों को ख्याति मिल गई और वह वहां नागी के आधिपत्य होने के बाद उन्नीस वर्ष तक रहा जब कि वह कभी-कभी अपने नगर को भी गया। 1920 के दशक के अन्त तक उसने अपनी प्रथम रचना केन्कॉस इ देनसेस (गीत और नृत्य), प्रथम दो प्रस्तावना, अन्य पियानों की रचनाएँ और कई गीत लिखे। यद्यपि उसके मित्रों में फ्रान्सिस पौलीन और जार्जेस औरी थे फिर भी उसने सिक्स[2] के ग्रुप में सम्मिलित होने से इंकार कर दिया और स्वतंत्र रहने के लिए वरीयता दी।

1930 के दशक में मोमपौ एक दुःखदायी मामले में उलझ गया जिसके कारण वह प्रचुर मात्रा में संगीत की रचना नहीं कर सका। वह 1941 में बार्सेलोना लौट आया तथा स्वतंत्र केटेलान संगीतकार के आन्दोलन में सम्मिलित हो गया जब कि उसने फ्रेंच संगीतज्ञो के साथ अपने संपर्क बनाए रखे। वह लेखकों और प्रकाशकों से मिलता रहा और अपने केटलान मित्र के संगीत तथा कविता के साथ जुड़ा रहा। उसके केलेलान मित्र का नाम जोसेप जेन्स ओलिक था। परन्तु इस सबके बावजूद वह अपने युवा पियानोवादक कार्मे ब्रेवो से भी मिलता रहा जिसके साथ उसने कुछ वर्ष बाद विवाह कर लिया। इसके बाद उसने निर्णय किया कि नए संगीतकार के रूप में वह कार्य करेगा और उसे पुनर्नवीकृत सर्जन में अद्वितीय ख्याति प्राप्त हुई। इस अवधि में उसने जो संगीत रचनाएँ तैयार कीं, उनमें कुछ नवीन *केनकॉन्स इ डान्सेज*, चापिन द्वारा विषय पर वेरियेशन्स का सेट, *क्वायर और आर्केस्ट्रा के लिए सेंटार डेल आल्वा* (आत्मा का गीत) शामिल है जिन्हें सेंट जॉन ऑफ द क्रास ने प्रेरित किया था। 1967 में उसने अपने *म्यूज़िका केल्लाडो* का अन्तिम खंड पूरा किया, इसकी सात लघु रचनाओं में से किस रचना में मध्यम को अपेक्षा *तीव्र टेम्पो* नहीं है। पियानोवादक एलिसिया द लारोचा अपने कार्य के प्रति समर्पित था और उसके 1972 में केडेक्रीक्स में अपना प्रथम प्रदर्शन किया।

मोमपौ अकेला व्यक्ति था, जिसने परम्परा का विरोध किया और वह सदैव अपने मिज़ाज तथा संवेदनशीलता के प्रति आस्थावान रहा। वह बार लाइन्स के अवरोधों से दूर रहा, उसने स्वराघात तथा स्थापित संगीत रूपों का बहिष्कार किया। वह वेंगर तथा शोएनबर्ग से अलग है क्योंकि वह उन स्पेनी पूर्वजों की कोटि का पक्षधर है, जिनमें *मेनुएल द फाल्ला, एलबेनीज़* और *ग्रानाडोस* (अंतिम दोनो कलाकार बेटोलोनिया में पैदा हुए थे परन्तु वे अन्य आन्दोलनों में भाग लेते रहे) और वे डेबुसी से थे। वह भूमध्यसागरीय संगीत के बीते हुए युग की परम्परा का था। वह कभी-कभी *केनकॉन्स इ डान्सेज* में अपनी रुचि की केटोलॉम लय की पंक्तियां उद्धृत करता है और सुब्बुर ब्रिस में कामगार वर्ग के गीतों को उद्धृत करता है यद्यपि वह राष्ट्रवाद तथा लोक संगीत का निषेध करता है। उसकी आम बेरिया की उच्च भावनाएं जो उसके अधिक जादू-टोना संबंधी बातों और स्वप्नवत प्रवृत्तियों से विपरीत है, उसके अंतिम इन्प्रेशन्स इनटाइम्स गिटानो में मुख्य रूप से पाए जाते है तथा उसके कुछ फ्टस लोइनटेवीज़ में उपलब्ध हैं। मोमपौ ने *केंद्रस म्यूजीस* और *चार्मेस* में ब्रह्माण्ड के रहस्यपूर्ण स्रोतों को गहराई से नापा।

मोमपौ का निधन 30 जून, 1987 को हुआ उसने अपने स्मृति लेख में कहा है :

> "मृत्यु आत्मा की शांति के साथ मिलन को आशीर्वाद देती है, वह मेरे हृदय में सोता तथा आराम करता है। मरणोत्तर जीवन सांध्यगीत देता है और आप उससे शान्त हो जाते हैं।" ■

---

1. इन *आलबेनीज, सेवेरेक, मोमपौ एट ला प्रेजेन्स लोइनटैने*-वेल्डीमीर जानकेलेविच, सेउल पश्चिशर्स, पेरिस, 1983

2. 1918 में पेरिस में बनाए गए छः युवा फ्रेंच संगीतकारों का ग्रुप। इसके सदस्य डेरियस मिल्हॉद, आर्थर हानगेर, जार्जेस औरी, फ्रांसिस पौलीन लौइस डूरे और जर्मेने टेलेफेरे हैं। उन्होंने एरिक सेटी को अपना आध्यात्मिक परामर्शदाता स्वीकार किया। सम्पादक।

इसाबेले लेमेरी
फ्रेंको-अमरिकन संगीतज्ञ है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वर्ष गांठ

जीन पियागेट

स्विस मनोवैज्ञानिक (1896-1980)

एक मूलाधार विचारक

—रिचार्ड शूमेकर

इस वर्ष शैक्षिक संस्थाएं, व्यावसायिक पत्रिकाएं और सभी प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय संगठन जीन पियागेट के जन्म दिन की सौ वीं वर्ष गांठ मना रहे हैं। न्यू शेटल (स्विटजरलैंड) में 9 अगस्त, 1896 को जन्में इस जीववैज्ञानी, मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक ने हमारे मानव जीवन की समझ को बदल दिया है और उसे गहन बना दिया है। प्रमुख रूप से उन्हें बच्चों का मनोवैज्ञानिक माना जाता था, वह अपना शोधकार्य बच्चों पर किया करते थे ताकि मानव व्यक्तिगत को अच्छी समझ हो सके। ज्यों-ज्यों हमारी शताब्दी का अन्त हो रहा है, ज्यां पियागेट के संतुलित, मानवीय और मौलिक पक्ष के प्रभाव से मानव विज्ञानों में से किसी विज्ञान को प्रभावित होने से नहीं बचाया जा सकता।

सक्रिय एजेण्ट के रूप में बालक

पियागेट को शायद बच्चों के प्रारंभिक जीवन के बारे में लेखन के कारण अधिक जाना जाता है। इस क्षेत्र में उनका महत्व मुख्य रूप से अभिनव उपायों और महात्वाकांक्षी उद्देश्यों से जाना जाता है। बचपन के अध्ययन के लिए वयस्क पूर्वग्रह तथा सामाजिक आधारों को लागू करने के बजाय पियागेट ने विकासशील बच्चों के विचार का वर्णन तथा उसके मूल्यांकन करने का प्रयत्न किया है। सारांश में, उन्होंने बच्चों की सभी उलझनो, बेचैनी और चिन्ता में उसके दैनिक जीवन के पुनर्निर्माण का प्रयत्न किया है। इस प्रणाली विज्ञान के अनुसार अभिनवीकरण ने कुछ ऐसी खोजों को उजागर किया, जिन्होंने बचपन के बारे में हमारे सबसे आत्म संतोष वाले विश्वासों को हिला दिया।

सैकड़ों लेखों और पुस्तकों में पियागेट ने यह दिखाया कि बच्चों के मानसिक जीवन में कुछ भी नित्य अथवा स्थायी नहीं है। यहां तक कि आधारभूत लगने वाले विचार यथा स्थान, समय, सम्बन्ध और कारण बच्चों के प्रारंभिक वर्षो में परीक्षण-प्रणाली के आधार पर निर्मित होते है। इसके अलावा वयस्क के व्यक्तित्व का समग्र रूप-उसकी तार्किकता, उसकी नैतिकता उसका बोधात्मक स्थायित्व बच्चों के प्रारंभिक वर्षो में भौतिक प्रक्रिया पर आधारित है। पियागेट "समझ" के साम्यानुमान में विशेष रुचि रखते थे ; यदि कोई व्यक्ति किसी विचार को कस कर पकड़ता है तो इससे पूर्व उसे ठोस वस्तुओं को पकड़ना सीखना चाहिए। बच्चों के प्रारंभिक और लड़खड़ाते संचलन उसके बाद के विकास के लिए तैयार करते है और उसकी भावी झांकी दिखाते है।

कसौटी के रूप में बचपन

पियागेट ने यह भी अध्ययन किया कि बच्चों के प्रारंभिक दृश्य, वर्ष प्रति वर्ष किस प्रकार उत्पन्न होते है। एक बार फिर उन्होंने बच्चे के संसार में अस्थायी परीक्षण-प्रणाली पर बल दिया। यद्यपि उन्होंने बचपन से लेकर जीवन के जटिल उत्तरदायित्व के अनुमान तक पेचीदा संरचना का चार्ट बनाया, यह उद्भव अनवरत नहीं है तथा बच्चों के परिवेश के साथ संघर्ष से बराबर व्यतिरेक होता रहता है। इस प्रकार पियागेट ने प्रारंभिक जीवन की आवस्थाओं का जो लेखा प्रस्तुत किया है, वह अधिक यथार्थपूर्ण है तथा फ्रायड, एरिकसन अथवा मेतलो के लेखों की अपेक्षा कम पक्षपूर्ण है।

पियागेट के प्रारंभिक जीवन के उतार-चढ़ाव की मजबूत पकड़ ने उन्हें ऐसा बना दिया कि वह बचपन के अध्ययन को अधिक गहन विचार हेतु मंच के रूप में उपयोग कर सके तथा जीवन की वास्तविक विशेषताओं को पहचान सके प्रारंभिक जीवन की प्रक्रियाएं और संरचनाएं जीवन की प्रकृति में अपनी सभी सामान्यता को सूत्र के रूप में उपयोग की गई।

गंभीर दार्शनिक अध्ययन के गौरव से कम बचपन को रद्द करने के बजाए

रिचार्ड शूमेकर
अमरिका वासी है। आप बीसवीं शताब्दी के साहित्य के रिव्यू से संबंधित "फोकस" के सम्पादक है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पियागेट, जिन्होंने अपने जीवन पर्यन्त दर्शन का व्यापक अध्ययन किया था, इस बात पर जोर देते है कि बचपन का गहन अध्ययन ही पक्षपात तथा आदत के नीचे सरकने दे सकता है तथा हमें इस योग्य बना सकता है कि हम जीवन को अपनी सही स्थिति में देख सकें।

न्यू चेटेल से अन्तर्राष्ट्रीय दृश्य तक

अपने प्रारंभिक वर्षों से पियागेट ने प्राकृतिक विज्ञान में अपनी रुचि और प्रतिभा, दोनों का प्रदर्शन किया और इस वर्ष की आयु में उन्होंने सूरजमुखी, गौरैया पर लेख न्यूचेटेल पत्रिका को भेजा। 1916 तक उन्होंने मोलस्क पर बीस लेख प्रकाशित किए। इन लेखों का इतना अधिक महत्व था कि उन्हें जिनेवा में प्राकृतिक इतिहास के संग्रहालय में क्यूरेटर के स्थान पर रखने के लिए विचार किया गया। पियागेट ने अपनी आत्मकथा के स्केच[1] में यह लिखा है कि इतने महत्वपूर्ण स्थान को स्वीकार करने के लिए इनकार करना आवश्यक था क्योंकि "उन्हें अपनी माध्यमिक शिक्षा को पूरा करने के लिए दो वर्ष की आवश्यकता थी।"

उन्होंने अपनी आयु के बीसवीं वर्ष में मनोवैज्ञानिक समस्याओं में रुचि बढ़ा ली और वह थियोडोर साइमन के साथ काम करने लगे जो बुद्धिमत्ता के बाइनेट स्केल में सहयोगी थे। यही समय था जब उन्होंने ज्यूरिच में यूजेन ब्लूयेर की मनोवैज्ञानिक क्लीनिक में कार्य किया और वह चिकित्सक उपायों से परिचित हो गए जिनका उन्होंने बाद में अपने शोधकार्य में प्रारंभिक शैली के रूप में प्रयोग किया।

पियागेट ने स्वीटज़रलैंड तथा फ्रांस में कई शैक्षिक पदों पर कार्य किया जब उन्होंने 1918 में प्राणिविज्ञान में अपनी डॉक्टोरेट की उपाधि प्राप्त कर ली थी। परन्तु वह कभी भी एकान्तवासी अथवा अधिक विशिष्ट अनुसंधानकर्ता नहीं रहे। 1920 के दशक के प्रारंभ में उन्होंने यह महसूस किया कि उनके महत्वाकांक्षी बौद्धिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए सहयोग और अन्तर्राष्ट्रीय विचार-विमर्श की आवश्यकता होगी। वह दशाब्दियों तक जिनेवा स्थित जीन जेक्वेस रूसों इन्सटीटयूट (अब इन्स्टीटयूट ऑफ एज्युकेशनल सायन्सेस) से सम्बद्ध रहे। 1956 में उन्होंने राकफेलर फाउंडेशन को मनाया कि जिनेवा स्थित जिनेवा विश्वविद्यालय में उनके इंटरनेशनल इन्स्टीटयूट ऑफ जेनेटिक एपिसटिमॉलॉजी को वित्तीय सहायता मिले। वह यूनेस्को में कार्यकारी बोर्ड के सदस्य के रूप में सम्बद्ध रहे। वह यूनेस्को में (आय बी ई) इंटरनेशनल ब्यूरो ऑफ एजूकेशन के निदेशक तथा कुछ समय के लिए शिक्षा के लिए सहायक महानिदेशक भी रहे।

जीन पियागेट को आधारिक विचारक कहा जा सकता है। उन्होंने पक्षपात, द्वेष और अलंकृत आदतों के होते हुए भी अनुसंधान किए ताकि ज्ञानात्मक जीवन के आवश्यक स्रोतों की खोज की जाए। इससे ऊर्जा के उत्सर्जन का निर्माण हुआ, जिसने व्यक्ति और समाज में वृद्धि तथा नवीकरण का आधार स्थापित किया। पियागेट का कार्य, जिसने अधिक शिक्षा तथा जीवन के आवश्यक प्रश्नों पर सशक्त रूप से केन्द्रित होने का सम्मिश्रण किया, निस्संदेह हमारी शताब्दी का महानतम खजाना है। ■

[1] काहिअर्स विलफ्रेडो पारेटो, 1966 संख्या 10, जिनेवा, ड्रज, लेखक की टिप्पणी

जैसा कि था...
यूनेस्को दूत,
जनवरी, 1981

गोलियों का मनोविज्ञान

—जीन पियागेट

बच्चों के खेल, सबसे प्रशंसनीय सामाजिक संस्थाएं हैं। उदाहरणार्थ गोलियों का खेल, ऐसे नियमों की अधिक जटिल पद्धति होता है, जिसमें भलीभांति चिन्हित सामाजिक वास्तविकता होती है, "यह व्यक्तियों से स्वतंत्र" होता है और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक भाषा के समान प्रेषित होता है।

हमने सरल भाव से अपने ही से पूछा, (1) व्यक्ति इन नियमों के अनुकूल अपने को वैसे बनाते हैं अर्थात् वे प्रत्येक आयु तथा मानसिक विकास के स्तर पर किस प्रकार अवलोकन करते हैं, (2) वे कहीं तक इन नियमों के प्रति जागरूक होते हैं, अन्य शब्दों में कहा जाए तो किस प्रकार के दायित्व (सदैव बच्चों की आयु के अनुसार) उत्पन्न होते हैं, जो नियमों द्वारा अभ्यास की गई वर्धमान प्रबलता से पैदा होते हैं। प्रश्नों के प्रथम भाग के दौरान बच्चों से यह पूछना काफी है कि गोलियों से कैसे खेला जाता है।

"मुझे नियम से सिखा दीजिए तभी मैं आपके साथ खेलूँगा।" तब बच्चा एक वर्ग खींचता है, आधी गोलियां लेता है, वह "आसन" में बैठ जाता है और खेल प्रारंभ हो जाता है। यह महत्वपूर्ण है कि खेल की सभी संभव आकस्मिकताओं पर ध्यान दिया जाए और बच्चे से प्रत्येक आकस्मिकता के बारे में पूछा जाए। इसका अर्थ यह है कि आप सुझाव देने से अपने को अलग रखें। आपको यह करना है कि आप पूर्णरूप से अनभिज्ञ रहें और कभी-कभी ऐसी भूलें भी करें जिनके बारे में बच्चा स्पष्ट रूप से यह संकेत करे कि नियम क्या है। स्वाभाविक रूप से आप सभी कुछ अधिक गंभीर रूप से स्वीकार करें और खेल के दौरान गंभीर रहें। तब आप पूछें कि किसकी जीत हुई है और यह जीत क्यों हुई है। यदि प्रत्येक वस्तु स्पष्ट न हो तो आप नए सेट को प्रारंभ करें।

इसके बाद प्रश्न करने का दूसरा भाग प्रारंभ होता है जो मन में नियमों की चेतनता रखता है। आप बच्चे से यह पूछकर खेल प्रारंभ करें कि क्या नया नियम बनाया जा सकता है। यदि एक बार यह नियम बना लिया गया तो आप बच्चे से पूछ सकते हैं कि क्या यह नियम नए खेल को जन्म देगा : "क्या आप के साथी के साथ ऐसे खेलना ठीक होगा?" बच्चा इस सुझाव से या तो सहमत होता है, अथवा असहमत होता है। यदि वह सहमत हो तो आप उससे शीघ्र ही पूछें कि क्या नया नियम "सही" और "वास्तविक नियम" है या "अन्य नियमों के समान" है तथा उन विभिन्न प्रयोजनों को जानने का प्रयत्न करें जो उत्तरों में लक्षित होते हैं।

यदि बच्चा इन सभी बातों से असहमत हो तो आप यह पूछें कि क्या नए नियम को वास्तविक नियम बनाने के लिए सामान्य नहीं किया जा सकता। "यदि आप बड़ी आयु के बच्चे हों, माना जाए कि आप कई बच्चों को अपना नया नियम बताते हो तब शायद वे सभी उस तरीके से खेलेंगे और प्रत्येक खिलाड़ी पुराने नियमों को भूल जाएं। तब कौन सा नियम सबसे ठीक नियम होगा—आपका नियम, जिसे प्रत्येक खिलाड़ी समझता है अथवा वह पुराना नियम जिसे प्रत्येक खिलाड़ी भूल चुका है।" खोजने की मुख्य बात यह है कि क्या कोई विधि के अनुसार नियमों को बदल सकता है और क्या नियम ठीक है, अथवा न्यायोचित है क्योंकि यह सामान्य प्रथा (चाहे नए तौर पर प्रारंभ की गई हो) के समान है अथवा यह तात्विक और चिरंतन मूल्य से भरपूर है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पियागेट शताब्दी

यूनेस्को अपने शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीय ब्यूरो (इंटरनेशनल ब्यूरो ऑफ एजूकेशन—आई बी ई) के माध्यम से कई उत्सव मना रहा है। जिनमें संगोष्ठियां, प्रकाशन और प्रदर्शनियां सम्मिलित है और जो ज्यां पियागेट की जन्म शताब्दी का आयोजन कर रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक पत्रिका का अंक "प्रोस्पेक्ट्स" (खण्ड XXVI एवं 1 मार्च, 1996) पियागेट के विषयवार शैक्षिक चिन्तन के अध्ययन से संबंधित है। अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक सम्मेलन का पैंतालीसवां अधिवेशन जिनेवा में अक्तूबर, 1996 के प्रथम सप्ताह में आयोजित किया गया, इसमें परिवर्तनशील विश्व के अध्यापकों की भूमिका की जाँच की गई तथा पियागेट और शिक्षा पर एक गोलमेज बैठक आयोजित की गई। इस सम्मेलन में पियागेट के जीवन से संबंधित प्रदर्शनी का आयोजन किया गया और बाद में यह प्रदर्शनी संगठन के कार्यकारी बोर्ड की एक सौ पचासवें सत्र के दौरान यूनेस्को के पेरिस स्थित मुख्यालय में आयोजित की गई। "पियागेट के बाद पियागेट" पर यूनेस्को की सहायता से आयोजित संगोष्ठी का आयोजन पेरिस विश्वविद्यालय सोर्बोन में 15 और 16 नवम्बर 1996 को किया जा रहा है। (विशेष सूचना के लिए—देल (33 0), 1 46 33 14 45 ; फैक्स : (33 0) 1 40 46 96 51) ■

इस बात को स्पष्ट करने के बाद यह सरल होगा कि आगे के प्रश्न पूछें जाएं। (1) क्या लोगों ने इस प्रकार से खेला है जिस प्रकार से वे आज खेलते हैं? (2) नियमों का उद्भव क्या है : क्या वे बच्चों द्वारा बनाए जाते हैं अथवा माता-पिता द्वारा तैयार किए जाते हैं और सामान्य रूप से बड़े लोग तैयार करते हैं?

मुख्य बात यह है कि बच्चे की अवस्थिति को समझा जाए। क्या वह नियमों के रहस्यपूर्ण मूल्य अथवा उनके अन्तिम परिणाम को समझते हैं? क्या वह दैवी विधि की विविधता में योगदान करते हैं अथवा अपनी स्वायतत्ता अथवा स्वतंत्रता के प्रति सचेत हैं? केवल यही प्रश्न है जो हमारी रूचि का है। बच्चा स्वाभाविक रूप से इसके बारे में बना बनाया विश्वास नहीं रखता और अपने खेलों के नियमों पर सहनशील नहीं होता। वह उस समय विचारों के बारे में सोचता है तथा आधारभूत प्रवृत्ति के चिन्ह प्रकट होते हैं।

अभ्यास गत

नियमों के अभ्यास अथवा प्रयोग के दृष्टिकोण से क्रमिक चार अवस्थाओं को पहचाना जा सकता है।

विशुद्ध गतिप्रेरक कार्य और व्यक्तिगत चरित्र की प्रथम अवस्था में बच्चा अपनी इच्छाओं तथा गतिप्रेरक कार्य की आदतों के आदेश पर गोलियों को संभालता है। यह कमोबेश आनुष्ठानिक योजनाओं के निर्माण की ओर उन्मुख करता है। परन्तु चूंकि खेल अब भी विशुद्ध भाव से वैयक्तिक है, कोई भी व्यक्ति गतिप्रेरक कार्य के नियमों की चर्चा कर सकता है और वास्तविक सामूहिक नियमों की बात नहीं कर सकता।

दूसरी अवस्था आत्म केन्द्रित हो सकती है। यह अवस्था ऐसे क्षण प्रारंभ हो सकती है जब बच्चा बाहर से संहिताबद्ध नियमों को प्राप्त करता है अर्थात् दो और पाँच वर्ष की आयु के मध्य कभी भी समय प्राप्त कर सकता है। परन्तु बच्चा इस उदाहरण की नकल करता है, वह अपने आप ही खेलता रहता है और अपने साथी खिलाड़ी की चिंता नहीं करता। अथवा अन्य बच्चों के साथ खेलता है परन्तु वह जीतने का प्रयत्न नहीं करता तथा इसलिए खेल के अलग-अलग तरीकों को एक करने की कोशिश के बिना खेलता है। अन्य शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि उस अवस्था के बच्चे जब कभी एक साथ खेलते हैं तो वे "अपने आप ही" किसी के साथ खेलते हैं (प्रत्येक बच्चा शीघ्र ही जीतता हो) तथा वे संहिताबद्ध नियमों की परवाह नहीं करते।

तीसरी अवस्था सात और आठ वर्ष के बीच आती है, जिसे हम आरंभिक सहकारिता की अवस्था कहते हैं। अब प्रत्येक खिलाड़ी जीतने का प्रयत्न करता है। इसलिए सभी खिलाड़ी आपसी नियंत्रण और नियमों की एकता के प्रश्न से स्वयं चिंतित हो जाते हैं। परन्तु जब किसी खेल के दौरान किसी समझौते पर पहुंचा जाता है तो सामान्य रूप से नियमों के बारे में विचार अस्पष्ट होते हैं।

अंत में ग्यारह और बारह वर्ष की आयु के बीच चौथी अवस्था होती है, जिसमें नियमों को संहिताबद्ध किया जाता है। खेल की प्रक्रिया के प्रत्येक विवरण को ही निर्धारित नहीं किया जाता तथा पालन किए जाने वाले नियमों की संहिता पूरे समाज को विदित होती है।

इन अवस्थाओं को केवल उसी उद्देश्य से स्वीकार करना चाहिए जिसके लिए उनका मूल्य है। यह सुविधाजनक है कि बच्चों को आयु-वर्गों अथवा अवस्थाओं में विभाजित करने के लिए प्रदर्शन के उद्देश्यों को स्वीकार किया जाए। परन्तु तथ्य स्वयं निरंतरता को प्रदर्शित करते हैं, जिन्हें वर्गों में विभाजित नहीं किया जा सकता। इसके अलावा यह निरंतरता अपने लक्षण की दृष्टि से सतही नहीं होती और इसकी सामान्यता का अनुपालन निर्देशन सामग्री को योजनाबद्ध बनाकर तथा छोटे-मोटे उतार-चढ़ाव जो इसे काफी जटिल बनाते हैं, पर ध्यान न देकर किया जा सकता है।

नियमों की सजगता

अब हम नियमों की सजगता के बारे में विचार करें जिसकी प्रगति, तीन अवस्थाओं में होती है।

प्रथम अवस्था के दौरान लक्षण की दृष्टि से नियम अवपीड़क नहीं होते। वे या तो विशुद्ध रूप से गतिप्रेरक कार्य है अथवा (आत्म केन्द्रित अवस्था के प्रारंभ में) अन्य प्रकार के हैं क्योंकि वे अवचेतनता में ज्यों के त्यों प्राप्त होते हैं तथा दायित्व की वास्तविकताओं की अपेक्षा रुचिकर उदाहरण होते हैं।

दूसरी अवस्था के दौरान (आत्म केन्द्र के शिरोबिन्दु और सहकारिता अवस्था के अर्धभाग में) नियमों को पवित्र और अछूता माना जाता है, जो बयस्कों से उभरते हैं तथा दीर्घकाल तक चलते रहते हैं। प्रत्येक प्रस्तावित परिवर्तन, बच्चे को अतिक्रामी बना देता है।

अन्त में तीसरी अवस्था के दौरान पारम्परिक अनुमति के कारण विधि के रूप में नियम को देखा जाता है, जिसका आपको आदर करना चाहिए, यदि आप स्वामिभक्त होना चाहते हैं। परन्तु इसमें से किस को अनुमति दी जाती है, जो आप की ओर सामान्य मत को सूचीबद्ध करने के लिए शर्त में परिवर्तन कर सके।

नियमों की चेतनता के विकास से संबंधित तीन अवस्थाओं और उनके व्यावहारिक पालन से संबंधित चार अवस्थाओं में सहसंबंध सांख्यकीय सहसंबंध है और इसलिए यह बहुत अपरिष्कृत है। परन्तु मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि यह संबंध विवादरहित है।

सामूहिक नियम प्रथम दृष्टि में व्यक्ति के लिए कुछ न कुछ बाह्य लगता है और इसके फलस्वरूप उसके लिए पवित्र होता है, जैसा कि वह धीरे-धीरे अपने लिए बनाता है और यह उस सीमा तक हो जाता है जिसे आपसी समझौते तथा स्वाधीन अंतकरण का स्वतंत्र उत्पाद जैसा महसूस किया जा सके। व्यावहारिक प्रयोग की दृष्टि से यह केवल स्वाभाविक है कि नियमों के लिए रहस्यपूर्ण आदर प्रारंभिक ज्ञान तथा उनकी विषय-सामग्री के व्यवहार के साथ सहयोजित किया जाए जब कि तार्किक तथा स्थापित आदरपूर्ण विवरण के साथ प्रत्येक नियम के प्रभावकारी प्रयोग के साथ होता है।

इसलिए सामाजिक व्यवहार के दो रूपों के समान नियमों के लिए आदर के दो रूप प्रतीत होते हैं। इस निष्कर्ष की अधिक समीपता से जाँच की जानी चाहिए क्योंकि यह ठीक है। बच्चे की नैतिकता के विश्लेषण के लिए यह सबसे अधिक मूल्य का होना चाहिए। ■

यह लेख "खेल के नियम" से लिया गया है। यह एक ऐसा अध्ययन है, जिसे ज्यां पियागेट ने (बी० जे० पियागेट और मेसर्स एम० लेम्बरसियर तथा एल० मार्टिनेज़ के साथ) लिया। इसका प्रथम अध्याय "बच्चे का नैतिक निर्णय" है। इसका प्रकाशन 1932 में केगन पॉल, ट्रेंच, ट्रबनेर एण्ड कं० लिमिटेड, लंदन द्वारा किया गया।

पाठ्य सामग्री © पुनर्मुद्रण वर्जित है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अगले अंक का विषय :

अल्पकालिक कला

▼

विरासत :
ताई नेशनल पार्क

▼

पर्यावरण :
फर्टो झील (हंगेरी)

जिस पत्रिका में ज्ञान और मनोरंजन एक साथ उपलब्ध हैं, उसका नाम है—

यूनेस्को दूत

आप चाहें तो अगले महीने से इस पत्रिका के पाठक बन सकते हैं ।

एक निवेदन :

यदि आप हिंदी में प्रकाशित पत्रिकाएं पढ़ते हैं और ज्ञान तथा मनोरंजन के अलावा आप चाहते हैं कि पत्रिका में—

- संगीत, साहित्य, कला, शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति से संबंधित सामग्री हों ;
- सामान्य जनरुचि के विषयों पर विस्तृत लेख कम कीमत में पढ़ने के लिए मिल सकें ;
- सभी सामग्री मनभावन सज्जा तथा आकर्षक चित्रों सहित प्रस्तुत की गई हों ;
- सामग्री ऐसी हो जिसे वर्ष भर अपने पास संदर्भ-ग्रंथ की तरह घरेलू लाइब्रेरी में रखी जा सकें ;
- दी हुई सामग्री से विद्यार्थी, अध्यापक तथा परिवार के सभी सदस्य लाभान्वित हो सकें ;

तो समझ लिजिए कि उस पत्रिका का नाम है—"यूनेस्को दूत" जो विश्व की बत्तीस प्रमुख भाषाओं में प्रकाशित हो रही है ।

एक प्रति : चार रुपये ● वार्षिक चंदा : चालीस रुपये

एक सूचना :

- "यूनेस्को दूत" अपनी भव्यता के कारण लोकप्रिय ;
- भारत सरकार द्वारा पुस्तकों और अन्य प्रकाशनों की छपाई और डिज़ाइन की उत्तमता पर 16 नवम्बर, 1979 को बीसवें राष्ट्रीय पुरस्कार समारोह में यूनेस्को दूत, जुलाई, 1977 अंक राज पुरस्कार द्वारा अलंकृत ।

यदि आप नमूने की प्रति लेना चाहते हैं
तो इस पते पर लिखें—
संपादक, यूनेस्को दूत, केंद्रीय हिंदी निदेशालय,
मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग),
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-110 066

चन्दे की राशि केवल नीचे दिए पते
पर ही भिजवाएं—
सहायक निदेशक (बिक्री),
केंद्रीय हिंदी निदेशालय,
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-110 066

इस अंक के अनुवादक :
● श्री कृष्णगोपाल

पुनरीक्षक : श्री रणजीत कुमार सेन

प्रबंध संपादक : डॉ० गंगा प्रसाद विमल, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग), भारत सरकार, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली द्वारा यूनेस्को के लिए प्रकाशित एवं महाप्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, नासिक द्वारा मुद्रित ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यूनेस्को मुख्यालय के लिए पुनर्नवीकरण और पुनर्वास योजनाओं की ओर से अभियान

"कोई भी व्यक्ति विरासत को सर्वप्रथम समझे बिना आधुनिक नहीं बन सकता और कोई भी व्यक्ति सर्वप्रथम यह महसूस किए हुए पारम्परिक नहीं हो सकता जब तक वह यह महसूस न कर ले कि जो कुछ भी निर्मित किया जाता है, वह कभी आधुनिक था।"

रेंजो पियानो

यूनेस्को के आज 185 सदस्य देश हैं, यह संयुक्त राष्ट्र पद्धति की विरल संस्था है जिसका मुख्यालय (हेडक्वार्टर्स) फ्रांस में है।

इस संस्था का उद्घाटन 1958 में हुआ था, विश्व संस्कृतियों के इस फोरम के भवन की अभिकल्पना तीन प्रमुख वास्तुविद : मार्सेल ब्रेयुर, पायर ल्यूगी नेर्वी और बनार्ड जेहरफुस ने की थी।

इस मुख्य भवन के "तिकोने तारे" (थ्री प्वाइंट स्टार) की अभिकल्पना 72 पिलोटिस पर आधारित है और यह बीसवीं शताब्दी के क्रियाशील वास्तुविद् का उत्तम सम्मिश्रण है जिसमें ठोस कंकरीट के विरल प्रभाव प्राप्त किए गए हैं।

आज भवन का साज-सामान अपने दीर्घ समय का प्रभाव लक्षित कर रहा है। कंकरीट टूट रही है और प्लेट-ग्लास की खिड़कियां ऊर्जा बचत की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर रही हैं। उसके अलावा, सम्मेलन कक्ष की सुविधाएं यूनेस्को सदस्य देशों की वृद्धि के फलस्वरूप बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पातीं।

यूनेस्को और उसके सदस्य देशों ने तदनुसार पुनर्नवीकरण और पुनर्वास परियोजना स्वीकृत की है। उस परियोजना की अभिकल्पना इटली के वास्तुकार रेंजो पियानो ने की है जिन्होंने भवन की मूल अभिकल्पना को आज की आवश्यकताओं के साथ सामंजस्य स्थापित किया है। उपयोग किए जाने वाले कच्चे माल के लिए कार्यान्वयन, खुलापन और आदर जैसे मुख्य शब्दों का प्रयोग किया गया है।

सर्वप्रथम उद्यानों को सम्मिलित करते हुए कुल भूमि स्तर का पुनः सुधार किया जाएगा। इसके बाद प्रथम भूमितल स्तर और सातवीं मंजिल (सेवेन्थ फ्लोर) के सार्वजनिक स्थानों का पुनर्नवीकरण किया जाएगा तथा उन्हें सजाया जाएगा। यह निर्माण कार्य फ्रेंच वास्तुविद् जीन-फ्रेंनकॉइस शिमिट द्वारा संपन्न किया जाएगा।

जॉन मीरो और लारेन्स आर्टीगेस द्वारा बनाई गई भित्ति सज्जा फिर से खुले स्थान में स्थापित की जाएंगी जैसा कि मूल रूप से अभिकल्पित किया गया था। लोग यूनेस्को हेडक्वार्टर्स में नवनिर्मित "सांस्कृतिक विचरण" में अन्य अनेक कलाकृतियों की प्रशंसा करेंगे : इसामू नोगुची द्वारा अभिकल्पित जापानी उद्यान, हेनरी मूर, राबर्ट जेकॉबसेन और एल्बर्टो गियाकोमेट्टी द्वारा निर्मित प्रतिमाएं, एलेक्जेंडर कालडेर्स मोबाइल, टडाओ एण्डो द्वारा निर्मित नवीन ध्यान-केंद्र और हेनी कारवान द्वारा निर्मित सहनशीलता की प्रतिमाओं के उद्यान का स्क्वेयर।

जनवरी 1996 में 25 यूनेस्को सदस्य देशों को सम्मिलित करके हेडक्वार्टर्स कमेटी की पहल पर अंतर्राष्ट्रीय समुदाय, लोक और निजी संगठनों तथा अलग-अलग व्यक्तियों से नकद अथवा किस्म के रूप में योगदान करने की अपील की गई। ■

अन्य सूचना के लिए कृपया सम्पर्क करें :

श्री जे० सी० बेन्डाना-पायनेल
संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन, आम सेवाओं का प्रभाग (डिवीजन ऑफ जनरल सर्विसेज)
7, प्लेस द फान्तेनाय, 75352, पेरिस 07 एस पी, फ्रांस
टेल० : (33¹/0²) 1 45 68 05 35 ; फेक्स : (33¹/0²) 1 47 83 88 76

वित्तीय योगदान योजना (पुनर्नवीकरण योजना अथवा "पुनर्वास योजना") का उल्लेख करते हुए आगे दिए गए विशेष बैंक लेखों में किए जाएंगे जिनमें आप योगदान करना चाहते हैं :

पुनर्नवीकरण योजना

(अमरीकी डॉलरों में)
यूनेस्को संदर्भ—नवीकरण योजना—पचासवीं वर्ष गांठ
लेखा संख्या 949-1-19-1558
चेज़ मनहट्टन बैंक
इंटरनेशनल मनी ट्रांसफर डिवीजन
(अंतर्राष्ट्रीय धन स्थानान्तरण प्रमाण)
1, न्यूयार्क प्लाजा, पांचवीं मंजिल,
न्यूयार्क, एनवाई 10015, संयुक्त राज्य अमरीका

(फ्रेंच फ्रांक में)
यूनेस्को संदर्भ—प्लान द रिनोवेशन—50वीं वर्षगांठ
काम्पते एन° 30003-03301-00037291180-53
सोसाइते जेनेरल, एजेन्से सेंट-डोमिनिक्यू
106, रूए सेंट-डोमिनिक्यू, 75007 पेरिस, फ्रांस

पुनर्वास योजना

(अमरीकी डॉलरों में)
यूनेस्को संदर्भ—पुनर्वास योजना
लेखा संख्या 949-1-19-1558
चेज़ मनहट्टन बैंक
इंटरनेशनल मनी ट्रांसफर डिवीजन
(अंतर्राष्ट्रीय धन स्थानान्तरण प्रमाण)
1, न्यूयार्क प्लाजा, पांचवीं मंजिल,
न्यूयार्क, एनवाई 10015, संयुक्त राज्य अमरीका

(फ्रेंच फ्रांक में)
यूनेस्को संदर्भ—प्लान द रिहैबिलिटेशन
काम्पते एन° 30003-03301-00037291180-53
सोसाइते जेनेरल, एजेन्से सेंट-डोमिनिक्यू
106, रूए सेंट-डोमिनिक्यू, 75007 पेरिस, फ्रांस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

1 केवल फ्रांस के बाहर। 2 केवल फ्रांस में।